मार्गदर्शक सूत्र-संहिता

(आर्थिक, व्यक्तिगत एवं वैश्विक)

[भाग - 3]

बजरंग मुनि जी के 72 वर्षों तक अनवरत चलने वाले
शोध कार्यों का संक्षिप्त सूत्र-संकलन

मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान
42, मारूति लाइफ स्टाईल, कोटा रोड, रायपुर-492001

मार्गदर्शक सूत्र-संहिता

(आर्थिक, व्यक्तिगत एवं वैश्विक)

[भाग-3]

बजरंग मुनि

प्रकाशक :
मार्गदर्शक प्रकाशन
42, मारूति लाइफ स्टाईल, कोटा रोड,
रायपुर-492001
मो. : 7869250001
E-mail : support@margdarshak.info

संस्करण : पहला
02 अक्टूबर, 2024

प्रतियां : 500

मुद्रक : महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी-221010

सहयोग राशि : 101.00 (एक सौ एक)

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक में आदरणीय बजरंग मुनि द्वारा आर्थिक, वैश्विक एवं व्यक्तिगत विषयों पर किए गए अनुसंधान के निष्कर्षों को समाहित किया गया है। पुस्तक के सम्पादक मंडल ने यह भरसक प्रयास किया है कि कहीं भी बजरंग मुनि के दृष्टिकोण को किसी और ढंग से न कहा जाए। पुस्तक का सम्पादक मंडल कई बार अपनी बैठकों में तब आश्चर्यचकित हुआ है, जब मुनि जी के तर्क समाज की अनेक समस्याओं को हल करने में सक्षम प्रतीत हुए।

आदर्श समाज व्यवस्था में समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र का समन्वय होता है। व्यवस्था बनाते समय यदि इनमें से किसी एक विषय की अनदेखी कर दी जाये तो व्यवस्था निश्चित रूप से अस्त-व्यस्त हो जाती है। जैसे कि किसी भी देश में जनता के लिए 'श्रम' जीविकोपार्जन करने का एक महत्वपूर्ण कारण होता है और सम्पूर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत स्थापित होने वाली अर्थव्यवस्था में श्रम की अनदेखी कर दी जाये तो परिणाम भयंकर हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में अर्थ उत्पादन के स्रोत धन, बुद्धि और श्रम का संतुलन नहीं रह पाता। हम आय प्राप्ति के आधार को समझें तो श्रम की आय का आधार केवल श्रम ही होता है, जबकि बुद्धि के लिए बुद्धि और श्रम दो आधार तथा इसी प्रकार धन के लिए बुद्धि, धन और श्रम तीन आधार होते हैं। वस्तुतः अर्थव्यवस्था कुप्रबन्धित हो तो आर्थिक असमानता और श्रम शोषण में स्वाभाविक वृद्धि होती है। इस पुस्तक में मुनि जी के आर्थिक सिद्धान्तों को सूक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

श्रम अभाव देश और श्रम बाहुल देश की अर्थ नीति भिन्न होनी चाहिए। श्रम अभाव देश मजबूरी में श्रम की पूर्ति के लिए कृत्रिम ऊर्जा का सहारा लेते हैं, किन्तु श्रम बहुल देशों की स्थिति इसके ठीक विपरीत होती है। ऐसे देशों को अपनी अर्थनीति में श्रम को बहुत महत्व देना चाहिए। यदि ये देश अलग से श्रमनीति नही बनाएंगे तो श्रम, बुद्धि और धन के बीच असमानता बढ़ेगी, श्रम बेरोजगार होगा, श्रम पलायन करेगा, समाज में अन्याय और अव्यवस्था का माहौल बनेगा और अन्त में स्थिति श्रमिक-अशांति तक जा सकती है! आज कमोवेश भारत की ऐसी ही स्थिति है। अमेरिका,इंग्लैण्ड आदि समृद्ध देशों को पृथक श्रम नीति बनाने की आवश्यकता ही नही है क्योंकि वहाँ श्रम-शोषण कोई समस्या नहीं है। वहाँ अर्थव्यवस्था निर्माण के लिए बुद्धि और धन ही मुख्य आधार होते हैं। वहां बौद्धिक श्रम को श्रम माना जाता है, शिक्षा को प्रगति का आधार माना जाता है और कृत्रिम ऊर्जा को श्रम सहायक माना जाता है। भारत में श्रम की मुख्य पहचान शारीरिक श्रम से होती है, यहाँ शिक्षा श्रम सहायक है और कृत्रिम ऊर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी। इसीलिए भारत के लिए पृथक श्रम नीति बनाना आवश्यक हो जाती है, जिसका मुख्य आधार होना चाहिए श्रम और कृत्रिम ऊर्जा का उचित अनुपात। यह अनुपातिक सन्तुलन ही अर्थशास्त्र की कुशलता मानी जाती है।

भारत ने आज तक कभी पृथक श्रमनीति नहीं बनायी। यहाँ श्रम मंत्रालय बना भी तो इसने पश्चिमी देशों की अर्थ नीतियों की ही नकल की! भारत की सरकारी आर्थिक नीतियों ने बौद्धिक श्रम को शारीरिक श्रम के साथ जोड़ दिया, परिणाम स्वरूप यहाँ शिक्षा, श्रम सहायक न होकर श्रम के विकल्प के रूप में स्थापित हो गयी। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की गलत

नीतियों का ही परिणाम है कि यहाँ कृत्रिम ऊर्जा (डीजल, पेट्रोल, बिजली) भी श्रम सहायक न होकर श्रम शोषक बन गयी और श्रम उपेक्षित व शोषित होता चला गया।

स्वतन्त्रता के बाद भारतीय अर्थशास्त्री भी स्वतन्त्र अर्थनीति बनाने में विफल रहे हैं, ये अपने तथ्य सिद्ध करने के लिए अधिकांशतः पश्चिमी विद्वानों के ग्रन्थों से सन्दर्भ ग्रहण करते रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था लगभग आठ प्रतिशत वार्षिक विकास दर का आंकडा घोषित करती है, लेकिन यह 'विश्व स्वास्थ संगठन' द्वारा निर्धारित उदर पूर्ति के लिए लगभग इक्कीस करोड़ लोगों को 27 रुपये प्रतिदिन देने की घोषणा नहीं कर सकी है! भारतीय राजनीतिज्ञ जितनी बड़ी समस्या बालश्रम और विधवा विवाह को मानते हैं, ये जितनी प्राथमिकता शिक्षा को देते हैं, क्या इन्हें नहीं पता कि अशिक्षा की तुलना में गरीबी रेखा भारत के लिए एक बड़ा कलंक है? मनमोहन सिंह सरीखा अर्थशास्त्री भी यह बात क्यों नहीं समझ सका कि आवागमन के सस्ता होने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का शहरों की ओर पलायन हो रहा है और भारत के शहर अनुत्पादक भीड़ के केन्द्र बनते जा रहे हैं। मनमोहन सिंह जी को यह बात क्यों समझ में नही आती कि भारत में कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि ही सभी आर्थिक समस्याओं का एकमात्र समाधान है। पता नहीं हम पश्चिम के पूँजीवाद की नकल किस तरह कर रहे हैं कि एक ओर आज दुनिया के कई बड़े पूँजीपति भी भारत में हैं और शायद दुर्भाग्य से दुनिया का सबसे ज्यादा गरीब आदमी भी भारत में ही हो! भारत में इतनी तेजी से पूँजी का असन्तुलित विकास हमारे लिए प्रसन्नता का विषय न होकर कलंक का आधार होना चाहिए, किन्तु हम तो इसके विपरीत अपनी पीठ थपथपाने में लगे रहते हैं।

भारत का आर्थिक विकास और आर्थिक न्याय भिन्न-भिन्न विषय हैं। भारत का लगभग आठ प्रतिशत आर्थिक विकास होने पर भी आर्थिक असमानता और श्रम मूल्य पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि जब तक सन्तुलित आर्थिक विकास नही होगा, तब तक विकास चाहे आठ प्रतिशत हो या पन्द्रह प्रतिशत, आर्थिक न्याय नहीं हो सकेगा! आर्थिक न्याय के लिए आवश्यक है, विकास दर को कम से कम चार और चौदह के बीच नौ प्रतिशत की औसत दर प्राप्त करना, जबकि अभी इसमें एक और सत्रह के बीच का औसत है। इस औसत विकास दर का मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति का आर्थिक विकास इस औसत मानक के अनुसार हो। लेकिन आश्चर्य यह है कि मनमोहन सिंह जैसा अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री रहे और तब भी श्रम की दुर्दशा का उन्मूलन न हो सका, किसी और प्रधानमंत्री से तो आशा भी क्या की जाए! वास्तव में यह हमारे लिए दुख की बात है!

प्रस्तुत पुस्तक में कुछ वैश्विक विषयों में तथा कुछ प्रमुख व्यक्तियों के कृत्यों के बारे में जैसा मुनि जी ने समझा है, उनके विषय में समय-समय पर लिखे गए लेखों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उन्हें भी सूत्र रूप में लिखा गया है। अलबत्ता प्रस्तुत पुस्तक के इस तीसरे भाग में भी मुनि जी की मौलिक सोच को सुधी समाज के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। यह आप सभी तय करेंगे की एक दार्शनिक के सामाजिक अनुसंधान का कितना लाभ उठा सकते हैं!

धन्यवाद।

-नरेन्द्र रघुनाथ सिंह

सम्पादक मण्डल (मार्गदर्शक सूत्र संहिता)

प्रकाशन विभाग, मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान

भूमिका

वर्तमान विश्व की सबसे बड़ी समस्या सामाजिक व्यवस्था का दिन-प्रतिदिन पतन की ओर उन्मुख होना है। आज पूरी दुनिया में इक्के-दुक्के विचारक ही ऐसे बचे हैं, जिनका लक्ष्य इस पतनोन्मुखी समाज व्यवस्था के कारण को समझना और उसके निवारण की ओर है। मानव स्वार्थ वृद्धि और मानव स्वभाव ताप वृद्धि, पर्यावरणीय ताप वृद्धि से भी ज्यादा नुकसानदेह साबित हो रहा है।

वैसे तो प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में विचार-मंथन की परंपरा चलती रही है। ऋषि-मुनियों की परंपरा वाला अपना देश भारत, इसी विचार मंथन की प्रक्रिया से निकले निष्कर्ष का सारी दुनिया में निर्यात करता रहा है। पिछले कई सौ वर्षों से भारत में विचार मंथन का स्तर लगातार गिर रहा है। मुगल शासनकाल और अंग्रेज शासनकाल में इस प्राचीन परंपरा को लगभग नष्ट ही कर दिया गया। अंग्रेजों ने तो भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति की जगह, स्कूली शिक्षा पद्धति थोप कर भारतीय संस्कार और संस्कृति ही पूरी तरह नष्ट कर दिया। वर्तमान समय में महात्मा गांधी के बाद कोई गंभीर विचारक स्थापित नहीं हो पाया। अब नए स्वतंत्र एवं गंभीर विचारक नहीं निकल पा रहे हैं। यदि अपवादस्वरूप कोई विचारक निकलता भी है तो उसका स्तर पिछले विचारकों की तुलना में बहुत कमजोर होता है।

बजरंग मुनि जी आधुनिक समाज के एक ऐसे ही स्वनामधन्य विचारक हैं, जिन्होंने आज से लगभग 70 साल पहले सामाजिक समस्याओं पर खोज करना प्रारंभ किया और मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान के नाम से जीवन भर इस कार्य में तन-मन-धन से समर्पित होकर लगे रहे। आपने 500 से अधिक विषयों पर गंभीर चिंतन मंथन करके अनेक उपयोगी निष्कर्ष समाज को दिए हैं। 25 दिसंबर 2020 को अपने चिंतन मंथन के निष्कर्ष का सारांश पुस्तक के रूप में 'एक निवेदन' (अब 'मुनि मंथन निष्कर्ष') प्रकाशित किये। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा विचारक रहे होंगे, जिन्होंने विविध विषयों पर इतना विस्तृत और गहन शोध-कार्य किया हो। कोई तो सिर्फ आध्यात्मिक क्षेत्र में, तो कोई सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक क्षेत्र में अपने कुछ विचार प्रकट कर पाते हैं। आपने तो 70 वर्ष के प्रायोगिक जीवन में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जो आपसे अछूता रह गया हो। जिस पर आपने समाज के सामने नया दृष्टिकोण या नए विचार ना रखे हों। आप ज्ञान एवं अनुभव के अथाह सागर हैं, इसमें से हम लोग विचार-संग्रह के रूप में कुछ बूंदों को ही संकलित कर पाये हैं। हम 'संपादक मण्डल' एवं 'संकलनकर्ता' गौरवान्वित हैं, कि हमें आपके अमूल्य विचारों को पुस्तक के रूप में संकलित करने का सौभाग्य मिला। पुस्तक में दिए गए सारे तथ्य आपके द्वारा प्रमाणित हैं एवं आपके मौलिक विचार हैं, हम लोगों ने विषय वस्तु के अनुरूप सिर्फ संकलन का प्रयास किया है। 'मार्गदर्शक सूत्र संहिता भाग-1' में वैचारिक, संवैधानिक और राजनीतिक विषयों को लिया गया है। वहीं 'मार्गदर्शक सूत्र संहिता भाग-2' में न्यायिक और आपराधिक, सामाजिक एवं धार्मिक विषयों को संकलित

किया है। प्रस्तुत पुस्तक 'मार्गदर्शक सूत्र संहिता भाग-3' मुनि जी के विचारों एवं निष्कर्षों का तीसरा और अंतिम भाग है, जिसमें व्यक्तिगत, आर्थिक और वैश्विक विषय को हमने समायोजित करने का प्रयास किया है।

पुस्तक में दिए गए निष्कर्ष कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं है, भविष्य में भी इस पर विचार मंथन होता रहेगा और देश-काल-पात्र एवं परिस्थिति के अनुसार बदलाव की स्वीकार्यता बनी रहेगी। आप सभी सुधि पाठकों की सेवा में समर्पित पुस्तक के तीनों खंड के लेखक, सुप्रसिद्ध मौलिक विचारक, प्रयोगधर्मी एवं समाजविज्ञानी श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के प्रति कृतज्ञता का श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

- संपादक मण्डल

संपादक मण्डल

1.पंकज अग्रवाल का जन्म 26 .6 .1976 को रामानुजगंज में हुआ। उनके पिता श्री कन्हैयालाल अग्रवाल, बजरंग मुनि जी के सबसे छोटे भाई हैं। बचपन से ही उन्होंने परिवार में होने वाले सभी व्यावसायिक और सामाजिक गतिविधियों को बड़े ध्यान से देखा सुना। इसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आज भी आप सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। प्रारंभिक शिक्षा रामानुजगंज में ही पूरी हुई और समाजशास्त्र से मास्टर की डिग्री इन्होंने अंबिकापुर से पूरी की। अंबिकापुर में ही रहते हुए इन्होंने मास्टर ऑफ लॉ की पढ़ाई पूरी की। सामाजिक विषयों पर गहरी समझ रखते हैं। आप मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान रायपुर के प्रमुख ट्रस्टी में से एक है।

2. बृजेश राय का जन्म 6 सितंबर 1989 को बिहार के कैमूर जिले के बराढ़ी नामक गांव में हुआ। जन्म के कुछ समय बाद ही अपने परिवार के साथ योगनगरी के नाम से विख्यात ऋषिकेश में आकर बस गए। परिवार में माता-पिता, एक भाई व एक बहन समेत पांच सदस्य हैं। विराज और विनायक दो भांजे भी हैं, जिसमें विनायक का झुकाव सामाजिक विषयों के प्रति रहा है और 8 वर्ष की आयु में ही इस विषय को समझना शुरू कर दिया है। बृजेश राय की प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा ऋषिकेश में ही पूर्ण हुई। इन्होंने देहरादून स्थित दून घाटी कॉलेज से सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग में स्नातक डिग्री प्राप्त की। 4 जनवरी 2021 को पहली बार विचारक व समाजशास्त्री बजरंग मुनि जी से रायपुर छत्तीसगढ़ में मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके पश्चात समाजशास्त्र के विषयों पर निरंतर चिंतन-मंथन के

लिए मुनि जी का सान्निध्य मिलता रहा और यह क्रम लगभग साढ़े तीन वर्षों से लगातार चल रहा है। मुनि जी से मिलने के पश्चात समाजशास्त्र विषय की आवश्यकता और गंभीरता का पता चला। पूर्व में जितनी भी मान्यताएं बनी हुई थी, उन पर पुनर्विचार करना शुरू किया और यह समझ में आया कि सत्ता परिवर्तन का अर्थ व्यवस्था परिवर्तन नहीं होता। भारत की अधिकांश अव्यवस्थाओं का कारण भारत की संवैधानिक व राजनीतिक व्यवस्थाएं हैं। और इन सभी समस्याओं के मूल में भारतीय संविधान है। भारतीय संविधान संसद की गुलामी से मुक्त होने के लिए प्रतीक्षारत है। मुनि जी के सान्निध्य में संविधान, कानून, लोकतंत्र, न्याय, समाज, आर्थिक व्यवस्था, लोक स्वराज, समाज सशक्तिकरण, साम्यवाद, परिवार व्यवस्था, ग्राम व्यवस्था, श्रम शोषण, आरक्षण, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, शक्ति, अर्थ और अधिकार, कर्तव्य और दायित्व, अपराध और अनैतिक, मौलिक, सामाजिक और संवैधानिक अधिकार, तानाशाही, कार्यपालिका, राजनीति, धर्म जैसे अनेक विषयों को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में, मुनि जी के द्वारा पिछले 70 वर्षों में किए गए इस शोध एवं अनुसंधान में वह क्षमता है जो विश्व समाज का मार्गदर्शन करने में सक्षम है और संपूर्ण विश्व के लिए यह अनुसंधान एक मार्गदर्शक है। आप वर्तमान में व्हाइट फाल्कन पब्लिशिंग कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं, किंतु अपने काम के साथ-साथ सामाजिक विषयों पर विचार मंथन की दिशा में निरंतर सक्रिय है।

3. तारकेश्वर सिंह का जन्म पहली जुलाई 1975 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में हुआ था। इन्होंने पूर्वांचल यूनिवर्सिटी से एम॰ए॰ तक की पढ़ाई पूरी की। मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान से प्रकाशित तीनों पुस्तकों के संपादन कार्य एवं मुद्रण कार्य में आपका भरपूर सहयोग रहा।

बड़ी जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य को अंजाम देते हैं। समय के पावन्द रहकर कार्य करने की आपकी विशेषता एक अलग ही पहचान देती है।

4. गोरखपुर नगर निवासी स्वर्गीय राजेंद्र मिश्र एवं आरती मिश्रा के गृहस्थ जीवन में 13 नवम्बर 1957 के दिन एक होनहार बालक का जन्म हुआ। वही बालक आज **राजपाल मिश्र** के नाम से हम सबके बीच एक कर्मठ सामाजिक गांधीवादी कार्यकर्ता के रूप में अपनी विशेष पहचान रखते हैं। बचपन से ही सामाजिक कार्यों मे काफी रुचि रखते थे। किशन पटनायक जी की समाजवादी जन परिषद् के संस्थापक से प्रभावित रहे लेकिन कभी सक्रिय राजनीति का हिस्सा नहीं बने, इसका श्रेय इन्हीं को जाता है। सामाजिक चिंतन और गाँधी की आत्मकथा से गाँधी जी की तरफ प्रभावित हो कर इनके विचारों से जुड़े। तब से ही सामाजिक जीवन प्राणार्पण से चल रहा है।

डाक्टर जे पी सिंह जी के द्वारा दिया गया ज्ञान तत्त्व पत्रिका को पढ़कर मुनि जी से मिलने की उत्कंठा जाग्रत हुई। श्री ओम प्रकाश द्विवेदी जी के सहयोग से आपकी मुलाकात मुनि जी से हो सकी। देश के उच्चतम विद्वानों के साथ विचार मंथन और निष्कर्ष निकालने की पद्धति से आप बहुत प्रभावित हुए। मुनि जी से व्यक्तिगत जुड़ाव का कारण बना संवैधानिक, राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक समेत अनेक विषयों पर मुनि जी की गंभीर विचार मंथन की प्रक्रिया। इनके आध्यात्मिक दर्शन के समीचीन विकल्प से आप बहुत प्रभावित हुए। इनके दिये विचार समाज का यथोचित मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं। आप तन-मन से मुनि जी के साथ जुड़े हैं और आजकल अपने क्षेत्र में लोक स्वराज के लिए काम कर रहे हैं।

5. संजय तांती का जन्म विनोबा भावे जी द्वारा ग्राम दान यात्रा के दौरान घोषित किए गए ग्राम दानी गांव – बेरांई, जिला मुंगेर में छः मार्च उन्नीस सौ उनहत्तर को एक साधारण गृहस्थ परिवार में हुआ। पिता श्री

सत्यनारायण तांती एवं माता श्रीमति माया देवी ग्राम दानी गांव में बसने का निमंत्रण पाकर वहीं के होकर गए, एवं सर्वोदय सहयोग समिति के कार्यक्रम से जुड़ गए थे। विनोबा जी की अगुवाई में गांधी जी के रचनात्मक सर्वोदय कार्य में पूरी तरह से समर्पित थे। मेरा लालन-पालन इसी परिवेश में हुआ। मैं बचपन से ही ग्राम सुधार के कार्यों से प्रभावित था। मुझे प्रारम्भ से ही ऐसा परिवेश मिला जहां समाज में ऊंच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं था, ना कोई जातिवाद का। पूरा गांव एक परिवार की तरह था। किसी की कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं रही थी, सबकी सामूहिक सम्पत्ति थी, सामूहिक खेती और कुटीर उद्योग की व्यवस्था थी। मानवीय संवेदना एवं सामाजिक सद्भाव की तरफ मैं यहीं से प्रेरित हुआ। राजनीतिक एवं प्रशासनिक हस्तक्षेप की वजह से ग्रामीण स्वव्यवस्था कुछ ही वर्षों में बिखर गया और ग्राम दान के अवशेष बाकी रह गए थे।

स्थानीय स्वशासन का स्वाद चख लेने के बाद मैं उत्साहपूर्वक सामाजिक कार्यों में रुचि लेने लगा और ग्रामीण लक्ष्मी पुस्तकालय का तीन वर्षों तक सफलतापूर्वक संचालन किया। 2002 से 2005 तक संत विनोबा स्वयं सहायता समूह के मंत्री रहते हुए सामाजिक-आर्थिक शोषित और पीड़ित समूह को आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान किया एवं समाज को एकजुट किया। कई अन्य सामाजिक कार्य किए। व्यवस्था परिवर्तन की चाह में अनेक सामाजिक, आध्यात्मिक संगठन से जुड़े रहा। बेलगाम राजनीति पर जनता का नियंत्रण हो, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण हो, अतः अन्ना हजारे आंदोलन में भी काफी सक्रिय था। 2012 में वर्धा यात्रा के दौरान विनोबा भावे जी के आश्रम ब्रह्म विद्या मंदिर, पवनार में एक ब्रह्मचारिणी निर्मल दीदी ने बजरंग मुनि के बारे में जानकारी दी और कई ज्ञान तत्व पत्रिका पढ़ने दिये। पत्रिका पढ़ने के बाद मेरे मन में एक नई आशा का संचार हुआ। मुनि जी से मिलने की उम्मीद में अवसर की प्रतीक्षा करने

लगा। कई साल बीतने पर अंततः वर्ष 2016 में वृंदावन के कार्यक्रम में मुनि जी से मेरी मुलाकात हुई और तभी से उनके कार्य में तन-मन से जुट गया। शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है कि बजरंग मुनि से मैंने कितना कुछ सीखा। ग्राम संसद अभियान से लेकर आज तक इनके साथ जुड़ा हुआ हूँ। आगे और भी बहुत कुछ सीखना शेष है। इन्होंने समाज की सर्वोच्चता का जो सिद्धांत दिया है, वह समाज में पुनः स्थापित हो जाए, यही मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

6. मोहन गुप्ता का जन्म गाँव-गोदरमाना, जिला-गढ़वा, झारखंड में 13. 2. 1960 में हुआ था। इनके पिता सरयू गुप्ता शहर के एक प्रमुख व्यवसायी थे। आप वर्तमान में वार्ड नं॰ 2, रामानुजगंज में रहते हैं और मुनि जी द्वारा स्थापित ज्ञानयज्ञ परिवार का संचालन करते हैं। गोदरमाना की एक घटना की वजह से मुनि जी से आपका प्रथम परिचय सन 1980 के आसपास हुआ। वैसे तो देश 1947 में ही आजाद हो गया था लेकिन स्थानीय राजे-रजवाड़े एवं जमीनदारों के शोषण से समाज को मुक्ति नहीं मिली थी। यहाँ रंका राज की दबंगई और गुड़ागर्दी खूब चलती थी। रंका राज के लठैत बाजार से जबरन कर वसूली किया करते थे, हप्ता वसूलते थे। बे-वजह किसी की जमीन हड़प लेना, मारपीट करना इन सबके लिए आम बात थी। जवाहर साहू से जमीन संबंधी विवाद इसका एक उदाहरण है। जवाहर साहू का लड़का डाक्टर नंदलाल प्रसाद अर्जी लेकर तत्कालीन कलेक्टर के पास गए थे। वहाँ भी इनलोगों ने पीड़ित परिवार को डराया-धमकाया। चर्चा हर तरफ होने लगी थी। गोदरमाना के स्थानीय लोगों के निवेदन पर मुनि जी ने रंका राज के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई। लंबी लड़ाई के बाद जन सहयोग एवं जन समर्थन से रंका राज की गुलामी से ग्रामवासियों को मुक्ति मिली थी। आज भी लोग उस आजादी की लड़ाई को बड़े गर्व से याद करते हैं।

इस चर्चित घटना के बाद से ही सपरिवार मुनि जी के विचार से प्रभावित रहे हैं और उनके मार्गदर्शन का सदा अवलोकन करते रहते हैं और उस पर चलने का प्रयास करते हैं। मार्गदर्शक सूत्र संहिता में उनके जीवन का जो सार उल्लेखित है उसका पठन-पाठन एवं ज्ञानार्जन कर जीवन में लाभ ले रहे हैं और दूसरों को लाभ लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। पुस्तक में वर्तमान समाज की जितनी समस्याएं है उसका कारण और समाधान स्पष्ट है जिसका लाभ समाज को मिल रहा है, इसके लिए मुनि जी को बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद।

7. ज्ञानेंद्र आर्य का जन्म 25-10-1979 अयोध्या से सटे सुल्तानपुर जिले के मायंग ग्राम में हुआ है। केशवलाल जायसवाल और कमला देवी जी की सात संतानों में सबसे छोटी संतान हैं, तीन बड़े भाई और तीन बड़ी बहनों के बाद परिवार में सबसे छोटी संतान होने के नाते इन्हें भरपूर लाड़-प्यार मिला। आपके पिता जी समाज में एक प्रतिष्ठित व्यवसायी और आर्य समाजी थे। प्रारम्भिक जीवन काल में आर्य समाज के कारण वैचारिकी और संघ के कारण सामाजिक कार्यों में विशेष रूचि रही। अनेक वर्षों तक बाबा रामदेव के सामाजिक आंदोलनों और योग के आध्यात्मिक साधना से भी जुड़े रहे। 2016 तक स्थानीय स्तर पर सामाजिक कार्य और व्यवसाय दोनों की तरफ लगातार सक्रिय रहे। 2019 में विपिन तिवारी जी के कहने पर मुनि जी द्वारा ऋषिकेश में आयोजित ज्ञान कुम्भ कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। ज्ञान कुम्भ कार्यक्रम के बाद से ही आप धीरे-धीरे मुनि जी के विचारों पर मंथन करते रहे और 2 अप्रैल 2022 को रामानुजगंज में आयोजित कार्यक्रम से ज्ञानयज्ञ परिवार को अपना शेष जीवन समर्पित कर लोक स्वराज और ज्ञानयज्ञ को ध्येय मान कर जुटे हुए हैं। कुशल प्रबंधन और सरल व्यवहार आपकी पहचान है।

8. राकेश कुमार का जन्म 9 अक्टूबर 1988 को बिहार के गया जिले

में हुआ था। सरकारी कार्यों में जन्म दिवस 18 जनवरी 1988 अंकित है। मेरे पिताजी का नाम श्री सीताराम शर्मा है और माताजी का नाम श्रीमती सुनीता देवी है। पिताजी बिहार राज्य खाद्य निगम में कर्मचारी थे और माताजी गृहिणी। पांच भाई-बहनों में मेरा स्थान सबसे छोटा है। पिताजी कर्मयोगी थे। मेहनत करना और जीवन-यापन करना। बस! इतना ही जीवनपर्यंत करते रहे। पारिवारिक मजबूरी भी थी। मेरे बड़े चाचा श्री रामउदय शर्मा जरूर सार्वजनिक जीवन जीते रहे हैं। समाज के लिए कुछ करना और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना यह दो कार्य ही उनके जीवन का ध्येय रहा है। इन्हीं से प्रभावित होकर मैं भी शुरू से सार्वजनिक जीवन जीने की दिशा में प्रयासरत रहा। शिक्षा छोटे शहरों से महानगर तक चलता रहा। शोधार्थी के तौर पर जब मेरा छत्तीसगढ़ के रायपुर शहर में जाना हो रहा था तो वरिष्ठ संपादक, पत्रकार लेखक तथा समाजसेवी श्री रामबहादुर राय ने मुझे बुलाया और कहा आप रायपुर जा रहे हैं-अच्छी बात है। पर एक काम मेरा भी, आपको करना होगा। आप श्रद्धेय बजरंगमुनि जी की जीवनी लिखने का काम करेंगे। मैंने अनमने-मन से हां कर दिया। क्योंकि मुझे तब तक इस व्यक्ति के बारे में कुछ भी पता नहीं था। लोभ था, रहना-खाना मुफ्त और साथ में थोड़ा जेब खर्च भी मिलता। क्योंकि पत्रकारिता में शोधकार्य चल रहा था सो समय का अभाव रहता था। पर लोभ जो ना कराए। कभी सुबह तो कभी शाम मैं बजरंग मुनि जी का साक्षात्कार करना शुरू किया। उनका लिखा तथा उनसे जुड़ा साहित्य भी पढ़ता रहा। काम में कोई कोताही का सवाल ही नहीं था। क्योंकि रामबहादुर राय हर सप्ताह मुझसे लेखन-कार्यों का हिसाब-किताब मांगते थे। इस तरह से 168 घंटे से ऊपर का मैने साक्षात्कार किया। कई लेख लिखा भी और वो छपा भी। साक्षात्कार करते-करते मुझे कुछ वर्षों के बाद पता चला कि मैं तो जाने-अनजाने में लोकस्वराज और व्यवस्था-परिवर्तन में गहरे धंस चुका हूँ। जिस कार्य को

लेकर पहले ऊब महसूस होता था, उसमें ही अब मजा आने लगा। लोभ? व्यक्ति और समाज के स्तर पर लाभ में बदल चुका था। मार्गदर्शक-मंडल का कार्य करते हुए मुझे महसूस होता है कि जिस तरह से यह कार्य मेरे द्वारा चयनित नहीं हुआ है, उसी तरह से मेरे द्वारा कर पाने की भी कोई संभावना नहीं है। होगा जन्मपूर्व कोई कर्म या कर्ज! इस तीन खंडों का पुस्तक निकल जाए अभी तो ईश्वर से इत्ता-सा ही प्रार्थना है। और थोड़ा दु:ख होता है कि- काश! बजरंग मुनि के रहते हुए ये सब लिखी हुई बातें संपन्न हो जाती तो कितना संतोष होता। जीवन के 75 साल जो समाज को उन्होंने दिया उस अनुभव से समाज कितना लाभान्वित होगा यह तो आने वाला वक्त ही तय करेगा। उस समर्पण की मशाल को अब हमारी पीढ़ी को उन्होंने सौंप दिया है। आगे ईश्वरेच्छा। जय हरि... राकेश लोक स्वराजी।

9. प्रमोद केशरी का जन्म 01 जुलाई 1962 को रामानुजगंज शहर में सामान्य गृहस्थ परिवार में हुआ था। आपने गुरु घासीदास महाविद्यालय से ग्रेजुएशन तक की शिक्षा पूरी की। नौ-दस साल की उम्र से ही कनहर नदी के तट पर बने आर्य समाज मंदिर में खेल-कूद के दौरान प्रतिदिन आते–जाते रहते थे। कनहर नदी में स्नान करना, हम उम्र बच्चों के साथ खेल-कूद के पश्चात आर्य समाज मंदिर में प्रसाद वितरण के समय इकट्ठे होना इनका दैनिक कार्य था। इसी बीच बजरंग मुनि जी से परिचित हुए एवं उनसे नजदीकी बढ़ती गयी। मुनि जी के विचार, व्यवहार और सामाजिक कार्य से आप बहुत प्रभावित हुए। शहरी जीवन विलकुल ग्रामीण जीवन का अहसास दिलाता था। इसी बीच संघ की शाखा का प्रारम्भ हुआ। आप स्वाभाविक ही शाखा से जुड़े। धर्मशाला के जीर्णोद्धार में भी इनका सराहनीय योगदान रहा। 16 जुलाई 1984 को रामानुजगंज शहर में प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना एवं संचालन में इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। करीब दस साल आपने शिशु मंदिर की सेवा में

लगा दिये। इसके उपरांत सरगुजा संभाग के जिला प्रतिनिधि (निरीक्षक) के तौर पर आपने जिम्मेदारी सम्हाली। तत्व बोध पाक्षिक पत्रिका के प्रकाशन एवं सम्पादन में प्रारम्भ से ही आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। जब देश के विभिन्न राज्यों में ग्राम संसद अभियान पूरे ज़ोर-शोर से चल रहा था तो इस कार्य में भी आपके संगठनात्मक योगदान ने अभियान को मजबूती प्रदान की। वर्ष 2017-18 में दिल्ली कार्यालय में छः महीने तक आपके मार्गदर्शन से उत्तर पूर्वी राज्य एवं बिहार, बंगाल और उड़ीसा क्षेत्र में नयी पहचान मिली एवं अभियान को एक सार्थक लक्ष्य प्रदान किया।

10. नरेन्द्र रघुनाथ सिंह का जन्म गांव-बनबोई, जिला-बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में हुआ था। बचपन से ही इनमें समाज की परिस्थितियों को समझने की प्रबल इच्छा रही। युवावस्था में ही ये बजरंग मुनि जी के सम्पर्क में आ गये थे और समाज विज्ञान के अध्ययन में अपना समय लगाने लगे। प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादक मण्डल में रहने के साथ ही इन्होंने बजरंग मुनि जी से मार्गदर्शन पाकर उपन्यास विधा में 'जीवन पथ' और एक शोध ग्रंथ 'मौलिक व्यवस्था का विचार' नामक पुस्तक लिखी हैं, जो पूरी तरह से समाज विज्ञान के अनुसंधान पर आधारित हैं। वर्त्तमान में मेरठ से वे अपने व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन करते हुए, दिल्ली NCR में व्यवस्था परिवर्तन के लिए लगातार सक्रिय हैं।

❐

स्वराज के नायक

बजरंग मुनि का जन्म 25 दिसम्बर 1939 ई. को मध्यप्रदेश के रामानुजगंज शहर के वैश्य परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम बजरंग लाल अग्रवाल था। लेकिन विद्रोही स्वभाव के होने की वजह से इन्होंने बचपन में ही जन्मना-जाति को मानने से इंकार कर दिया। शुरू से मानते रहे है कि मैं कर्म से ब्राह्मण हूँ। जन्म आधारित जाति व्यवस्था एवं समाजविरोधी कार्यों का आजीवन विरोध करते रहे है तथा वर्ण आधारित समाज व्यवस्था (कर्मानुसार) का समर्थन करते रहे। फलस्वरूप इन्होंने अपने नाम से अग्रवाल शब्द हटाकर पंडित कर दिया। इनका भारत की आजादी की लड़ाई में सीधा हस्तक्षेप नहीं था। शायद उम्र की बाध्यता रही होगी। लेकिन अपने जीवन के आठवें बसंत में ही इन्हें आजादी और गुलामी का फर्क साफ-साफ दिखने लगा था। आजादी की चर्चा चारों ओर फैला ही हुआ था। ये इन चर्चाओं से इतना तो समझ ही चुके थे कि आजादी का मतलब महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह आदि के आन्दोलन से निकला परिणाम है। इन सभी स्वतंत्रता सेनानियों से ये गहरे प्रभावित थे। 1954 आते-आते ये समझने लगे थे कि आजादी तो गांधी के रास्ते ही संभव हुई है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वे गरम दल के नेताओं के त्याग, तपस्या या बलिदान को नकार रहे थे। जाने-अनजाने ही सही, ये गांधी मार्ग पर चलते रहे। एक लंबे समय बाद सुप्रसिद्ध गांधीवादी ठाकुरदास बंग इन्हें बताते है कि- "बजरंग जी आप जो कार्य कर रहे है, जिस रास्ते पर आप चल रहे है वही तो गांधी जी भी किया करते थे"।

किसी भी मानव का जीवन एकाएक नहीं बदलता, वह तो अनुभवों से ही सीखता है। बजरंग लाल अग्रवाल से बजरंग मुनि बनने तक की यात्रा कोई एक-दो वर्षों की कहानी नहीं है। न ही यह कोई सीधा-सपाट राजमार्ग पर चलने की कहानी है बल्कि यह तो पगडंडियों पर चलने का नाम है। जो 'ऊबड़-खाबड़ और पथरीला' है। तरुण 'बजरंग' 17 वर्ष की उम्र में ही सक्रिय राजनीति में कूद पड़ते हैं। इनके साथी चुनाव लड़वाना चाहते है, पर चुनाव लड़ने की उम्र कहती है, ये नहीं हो सकता। लेकिन चुनाव लड़वाने से इन्हें कौन रोक सकता था? अपनी छोटी उम्र में ही इन्होंने कई राजनेताओं को चुनाव जिताने में मदद की, अपने चुनावी प्रबंधन का लोहा मनवा लिया। चुनाव लड़ने की उम्र-सीमा 25 वर्ष होते ही रामानुजगंज शहर का नगरपालिका का चुनाव लड़ा, जीता और अध्यक्ष भी बने। सक्रिय राजनीति से अलग शास्त्री जी के खेती करो भाषण से प्रभावित होकर खेती शुरू करते हैं। जिसमें परिवार सहित खुद से हल जोतना, मजदूरी करना सब शामिल रहता है। परंतु, किसानी कार्य में असफलता ही मिलती है। कृषि कार्य एवं नगर पालिका का अध्यक्षीय कार्य इनके जीवन का टर्निंग-प्वाइंट बना। जिस 'अपराध नियंत्रण' के वादे के साथ ये चुनाव लड़े और जीते। उन्हें तो वैसा कोई भी अधिकार प्राप्त ही नहीं था। लोगों के साथ वादाखिलाफी इनसे हो नहीं पा रहा था, निराश होकर इन्होंने त्याग पत्र दे दिया। राजनीति में तो सक्रिय रहे, पर वैसे ही जैसे कमल के पत्ते जल में रह कर भी जल से बाहर रहते हैं। इसी बीच 26 जून 1975 को इन्दिरा जी, देश पर आपातकाल थोप देती हैं। जेपी आंदोलन से जुड़ा होने के कारण 18 माह के लिए जेल में बंद रहे। जेल से बाहर निकलते ही जनता पार्टी के लिए काम करना शुरू किया। तब के मध्यप्रदेश के सरगुजा संभाग के आठ में से आठों विधायक और एक सांसद इनके नेतृत्व में चुनाव जीतने में सफल रहे। इनकी कुशल नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर तात्कालिक जनता पार्टी प्रमुख कुशाभाऊ ठाकरे इन्हें राज्य

सभा जाने का प्रस्ताव देते हैं। लोहिया के विचारों से प्रभावित होने के कारण राज्यसभा जाने से इंकार कर देते हैं। राज्य में गृहमंत्री तथा केन्द्र में एक केन्द्रीय मंत्री भी बनवाने में सफल रहे। लेकिन परिणाम फिर से वही ढाक के तीन पात। अपराध और भ्रष्टाचार रोकने में यहाँ भी असफलता ही मिलती है। 1984 में राजनीति से सन्यास ले लेते हैं, लेकिन समाज के लिए कुछ न कर पाने की छटपहाहट इन्हें अंदर ही अंदर परेशान किये रहती है। घाटे की खेती से भी जी उचट चुका था।

व्यक्ति, परिवार, गाँव तथा समाज का खस्ताहाल देखकर ये सोचने पर विवश हो जाते हैं, कि इनकी परेशानी कैसे दूर की जाय। 1984 से 1991 तक लगातार संविधान का अध्ययन करते हैं। देश के तमाम संविधान विशेषज्ञों से तर्क-वितर्क कर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सारी समस्याओं की जड़ तो संविधान में है, और समाधान भी संविधान में ही है। आखिर कैसे? ... अगर तंत्र से संविधान मुक्त हो जाता है तो सारी समस्या खत्म हो जाएगी। साल 1996 से संविधान पर इन्होंने जन जागरण करना शुरू किया। संविधान विशेषज्ञों को चुनौती दी? तंत्र के ऊपर संविधान या नीचे? राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गयी। हर नेता खुद को यह चुनौती मिलता देख रहा था। मार्च 1996 को इन्हें नक्सली बताकर गोली मारने की सरकारी तैयारी शुरू कर दी गई। तब के प्रसिद्ध गाँधीवादी इनकी सुरक्षा में रामानुजगंज आ पहुंचे। सरकार कदम वापस लेने को मजबूर होती है। जबलपुर हाइकोर्ट से यह केस जीतने में सफल हो जाते हैं, जिसकी अपनी एक अलग दिलचस्प, लम्बी और मार्मिक कहानी है। इसके बाद इन्होंने एक नया संविधान का निर्माण किया 'भावी भारत का संविधान'। तब के 50 लाख रूपया खर्च करके एक संविधान-सभा बुलाते हैं। फिर शुरू होती है विचार-मंथन की महीनों की मैराथन बैठकें। एक-एक वाक्य पर कई महीनों तक विचार-विमर्श और बहस होता है। फिर किसी निष्कर्ष पर

पहुँचते हैं और उसे "भावी भारत का संविधान" में लिखते, जोड़ते हैं। लगभग 15 वर्षों तक लगातार चलने वाले शोध के दौरान अनेक पुस्तकों का भी लेखन किया। जिसमें मुनि मंथन निष्कर्ष, मुनि मंथन, भारत का भावी संविधान, नई दिशा आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। देशभर के जाने-माने समाजशास्त्री, बुद्धिजीवियों, कानूनविदों आदि के साथ संवैधानिक विषय पर गंभीर चिंतन-मंथन, विचार-विमर्श किया। यह सब ज्ञान तत्त्व पाक्षिक-पत्रिका (पहले तत्व बोध) द्वारा देश भर को बताते भी रहे। पत्रिका में देश-दुनिया से संबंधित लगभग 500 विषयों पर स्वतंत्र चिंतन एवं लेखन कार्य भी करते रहे।

4 नवम्बर 1999 को कई संविधान-विशेषज्ञ, बुद्धिजीवी, प्रमुख गांधीवादी, समाजवादी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में विश्व के ग्लोब को प्रमाण मान कर, इस नवनिर्मित संविधान को अर्पित कर दिया। किन्तु, इस संविधान की प्रायोगिक सफलता की परख अभी शेष था। सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि क्यों नहीं लोक स्वराज्य का पहला प्रयोग वहीं किया जाय, जहाँ इसे लिखा गया है। रामानुजगंज नगर पालिका क्षेत्र सन् 2000 से दिसम्बर 2004 तक पूरे पाँच साल सफल प्रयोग की गवाही रहा। कई बनी बनायीं धारणाएँ टूटीं, तो कई नए कीर्तिमान रचे गए। परिणामतः रामानुजगंज पूरे भारत में पहला अपराध नियंत्रित शहर बन गया। समाज में वर्ग भेद की जगह वर्ग समन्वय स्थापित हुआ, न केवल सहयोगी की तरह बल्की भागीदारी के साथ। बड़े-बड़े मामले जो न्यायालय द्वारा वर्षों मे भी नहीं सुलझाये जा पाते थे। सामाजिक सदभाव से उन्हें चुटकियों में हल कर लिया जाता था। बड़ी दिलचस्प कहानियाँ है, प्रयोग के दौरान की। मुनि जी की इच्छा देश भर में इस प्रयोग की सफलता को ले कर प्रचार करने की हुई। उन्हें लगा कि क्यों न इसे राजनेताओं को बताया-समझाया जाय। बजरंग मुनि जी पूरी तैयारी के साथ दिल्ली आ पहुँचे। जिन-जिन नेताओं को समझाया, वे बात तो तुरंत समझ गए। लेकिन

उनका अपना व्यक्तिगत फायदा का क्या? यहाँ आकर सारा मामला ही खत्म हो जाता था। आश्चर्य की बात कि जहाँ रामानुजगंज शहर के लोग संविधान से अनजान, वो इसे ख़ुशी-खुशी मान रहे थे, व उनके समाज सशक्तिकरण अभियान में तन-मन-धन से सहयोग कर रहे थे। वहीं दिल्ली के नेता समझते तो सब थे, पर मानना ही नहीं चाहते थे। अब आगे अपने प्रयोग में मुनि जी हरिद्वार जाते हैं। हरिद्वार और ऋषिकेश में संतो को समझाते हैं। कुछ लोग समझना ही नहीं चाहते हैं और कुछ आधी-अधूरी बातें समझते हैं। धार्मिक संत स्वयं को धर्म का सेवक मानते हैं। उनका कहना हैं कि हमें इन सब चीजों से क्या लेना-देना। यहाँ भी मुनि जी को असफलता ही हाथ लगती है। इसी दौरान ऋषिकेश के त्रिवेणी घाट पर 29 अगस्त से 14 सितंबर 2019 तक पंद्रह दिवसीय 'ज्ञान कुम्भ' कार्यक्रम रखा जाता है। देशभर के बुद्धिजीवियों, चिंतकों का समागम हुआ। काफी गंभीर विचार-मंथन हुआ। गंगा जी के तट पर ध्यानस्थ बजरंग मुनि को अचानक एक बात कौंधती है कि 'दिल्ली तो राजनीति की मंडी है और हरिद्वार-ऋषिकेश धर्म की मंडी। मंडी में खरीद-फरोख्त होती है। वापस कन्हर नही के तट पर चलना चाहिए, जहां से ग्राम स्वराज्य और समाज सशक्तिकरण का जन-जागरण किया जाय। जिससे ही समाज अपराध मुक्त हो पायेगा। पूर्व में भी रामानुजगंज शहर भारत के प्रथम अपराध नियंत्रित शहर की उपलब्धि हासिल कर ही चुका था। बजरंग मुनि वापस रामानुजगंज लौटते हैं और वहीं से जनजागरण का बिगुल फूंक देते हैं। 25 दिसंबर 2020 को मुनि जी संन्यास की घोषणा करके अपने जीवन के सारे अनुभवों का निष्कर्ष लिखकर समाज को सौंप देते हैं, और अपने को मुक्त घोषित कर देते हैं।

- राकेश कुमार

(लेखक एक शोधार्थी हैं, और अभी पिछले 2 वर्ष से मुनि जी के जीवन पर अध्ययन कर उनकी बायोग्राफी लिख रहे हैं।)

अनुक्रमणिका

7.	आर्थिक	25-118
8.	व्यक्तिगत	119-214
9.	वैश्विक	215-224

❐

7

आर्थिक

700 श्रम और बुद्धि

7000. स्वतंत्र भारत में भी श्रम बेचारा ठगा का ठगा रह गया। स्वतंत्रता के पूर्व पूंजीपति ही श्रम का शोषण करते थे, किन्तु इस दौर में बुद्धिजीवी भी उनमें शामिल हो गये हैं। जब तक श्रम के साथ न्याय नहीं होगा, तब तक किसी प्रकार से शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। श्रम को बहला-फुसला कर कुछ समय तक ही ठगा जा सकता है, किन्तु सदा के लिए नहीं।

7001. यह सच है कि 'एक मई' को पूंजीवाद ने घुटने टेक दिए। इस आधार पर यह दिवस श्रम सम्मान का दिन है किन्तु उससे भी अधिक भयावह सच यह है कि एक मई को श्रम-शोषण की पहली ईंट रखी गई। अब तक पूंजीवाद प्रत्यक्ष रूप से श्रम-शोषण करता भी था और दिखता भी था। एक मई के बाद बुद्धिजीवियों ने ऐसा कमाल किया कि श्रम-शोषण बढ़ता गया लेकिन दिखना बन्द हो गया। एक मई के बाद बुद्धिजीवी भी श्रम-शोषण में पूंजीपतियों के साथ जुड़ गए।

7002. बुद्धिजीवियों ने श्रम की स्वाभाविक परिभाषा "शारीरिक श्रम" को बदल कर उसके साथ "बौद्धिक श्रम" को जोड़ लिया। इस परिवर्तन से बुद्धिजीवियों का रास्ता साफ हो गया। ये लोग श्रमजीवियों के नाम पर नीतियाँ बनाने लगे, संगठन बनाने लगे, सरकार बनाने लगे और उससे भी ज्यादा शक्तिशाली हो बैठे, जहां पहले पूंजीपति हुआ करते थे।

7003. वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था ऐसी अच्छी समाज व्यवस्था में शामिल थी, जो श्रम की उचित सुरक्षा का भी आश्वासन देती थी। धीरे-धीरे धूर्त बुद्धिजीवियों ने इस वर्ण, जाति व्यवस्था को कर्म से हटाकर जन्म पर आधारित कर दिया और आरक्षण की ऐसी कुटिल व्यवस्था बनायी, जिससे उनके आगे आने वाली पीढ़ियों तक के लिए श्रम के शोषण का मार्ग सुरक्षित हो गया।

7004. श्रम और बुद्धि के बीच अंतर तो होगा ही किन्तु जो अंतर वर्तमान में है, वह अन्यायपूर्ण है। नरेगा जो मजदूरी तय करता है, वह गलत नहीं है, क्योंकि वह न्यूनतम मजदूरी पर रोजगार देने को बाध्य भी है। किन्तु पहले जिला प्रशासन मजदूरी तय करता था, वह एक गलत प्रक्रिया थी, क्योंकि वह घोषित मजदूरी दो प्रकार की मजदूरी समाज में बनाती थी। एक थी 'वास्तविक' जो मजदूर को बाजार में मिलती थी और दूसरी थी 'कृत्रिम' जो सरकार देती थी। सरकार को चाहिए कि वह कृत्रिम मूल्य घोषणा बंद कर दे। सरकार वही मूल्य घोषित करे, जिस पर रोजगार देने की गारंटी हो।

7005. प्राचीन समय से ही दुनिया में श्रम के साथ बुद्धिजीवियों का षड्यंत्र चलता रहा है। भारत में भी निरंतर यही होता रहा है और आज

भी हो रहा है, इसे बदलना चाहिए। वर्तमान समय में शारीरिक श्रम तथा बौद्धिक श्रम के बीच बहुत ज्यादा अंतर हो गया है। इसे कम करना चाहिए और इसके लिए शारीरिक श्रम का मूल्य और सम्मान में वर्तमान की अपेक्षा अधिक वृद्धि होनी चाहिए।

7006. वर्तमान समय में बुद्धिजीवियों द्वारा श्रम के विरुद्ध किया जाने वाला षड्यंत्र, एक बहुत बड़ा अन्याय है। प्राथमिकता के आधार पर इसके समाधान की आवश्यकता है। श्रम और बुद्धि के बीच वर्तमान आर्थिक असंतुलन बंद होना चाहिए। गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी तथा उत्पादकों के उत्पादन और उपभोग की सभी वस्तुएं कर मुक्त होनी चाहिए।

7007. श्रम और बुद्धि के बीच राज्य को स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा करने देना चाहिए था अथवा श्रम को कुछ सहायता देनी थी। किन्तु राज्य श्रम की तुलना में शिक्षा को अधिक महत्व देकर, श्रम को कमजोर करने का प्रयास करता है। श्रम का मूल्य कितना होना चाहिए यह श्रम बेचने वाला और खरीदने वाला मिलकर तय करें। उसमें किसी तीसरे का हस्तक्षेप गलत है। श्रम की अवहेलना करके बुद्धिजीवियों की मदद करना समानता के सिद्धान्त के भी विरुद्ध है।

7008. शारीरिक श्रम को बौद्धिक श्रम के षड्यंत्र से मुक्त होना ही पर्याप्त नहीं है चाहिये। पर्याप्त होगा श्रम की मांग का बढ़ना, उसका महत्व बढ़ना और यह तब तक संभव नहीं, जब तक डीजल, पेट्रोल, बिजली, केरोसीन, कोयला, गैस के मूल्यों में भारी वृद्धि करके सम्पूर्ण धन गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी के बीच बांट न दिया जाय।

7009. श्रम और बुद्धि के बीच की खाईं पटनी ही चाहिए तथा इसके लिए कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि सबसे अच्छा समाधान है।

7010. भारत का बुद्धिजीवी या पूंजीपति मानवीय ऊर्जा के उपयोग के चाहे जितना विरुद्ध हो, किन्तु वह बिजली के विरुद्ध नहीं है। खनिज तेल की अपेक्षा बिजली को वह बहुत अधिक पसंद करता है। शारीरिक श्रम और बौद्धिक श्रम के मूल्य में भी अनुपात न्याय-संगत ही हो अर्थात् यदि बुद्धि का मूल्य पांच गुना बढ़े, तो शारीरिक श्रम का भी उसी अनुसार बढ़े। इसके लिए कृत्रिम ऊर्जा का भी तर्कसंगत मूल्य निर्धारण आवश्यक है।

701 श्रम और शिक्षा

7011. सामान्यतया सामाजिक व राजनैतिक व्यवस्था में श्रम-प्रधान लोगों की भूमिका शून्य होती है। इस व्यवस्था में या तो बुद्धिजीवी लोग व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं या पूंजीपति या दोनों मिल-जुलकर। श्रमजीवी तो हमेशा ही इन दोनों की दया का पात्र रहा है।

7012. श्रम और बुद्धि में, श्रम का बुद्धि के द्वारा शोषण हो रहा है। समाज में श्रमजीवियों का शोषण करने के लिए बुद्धिजीवियों ने कई तरीके खोज लिए हैं। श्रम की अपेक्षा शिक्षा को महत्वूपर्ण बनाना भी उन तरीकों में से ही एक है।

7013. ग्रामीण श्रम ही एकमात्र आधार है, जो बेरोजगारी और गरीबी दूर कर सकता है। शिक्षा रोजगार का सृजन नहीं करती, भले ही वह रोजगार में जितना भी छीना-झपटी कर ले। रोजगार का सृजन तो श्रम ही कर सकता है। श्रम-मूलक रोजगार और श्रम-मूल्य वृद्धि ही गरीबी भी दूर कर सकती है और आर्थिक असमानता भी।

7014. शिक्षित व्यक्ति श्रम-प्रधान की अपेक्षा बहुत अधिक सुविधाजनक स्थिति में है। श्रम-प्रधान व्यक्ति रोजगार हेतु सिर्फ श्रम पर निर्भर होता है, जबकि शिक्षित व्यक्ति के पास श्रम तो है ही, साथ में शिक्षा भी है। उसके पास रोजगार के लिए दो अवसर उपलब्ध हैं।

7015. शिक्षा पर बजट बढ़ाना गलत नहीं है। श्रम को उचित मूल्य और सम्मान मिलने लगे और शेष बजट शिक्षा पर खर्च हो। यह ठीक है, किन्तु शिक्षा पर बजट बढ़े, चाहे उसके लिए रोटी, कपड़ा, मकान, दवा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं पर ही टैक्स क्यों न लगाना पड़े, यह गलत है।

7016. मैं श्रम को प्रोत्साहित करने के पक्ष में हूं। मेरा यह भी मानना है कि शिक्षा को दिया जाने वाला प्रोत्साहन श्रम-शोषण के उद्देश्य से होता है। कोई भी बुद्धिजीवी श्रम के साथ न्याय का प्रयत्न नहीं करता। हर बुद्धिजीवी कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि का विरोध करता है, क्योंकि कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि श्रम की मांग और श्रम का मूल्य बढ़ाने में सहायक है।

7017. शिक्षा यदि अशिक्षितों, श्रमजीवियों को मिले और उसका व्यय दूसरे शिक्षित बुद्धिजीवी उठावें, तो यह उचित भी है और न्यायसंगत भी, क्योंकि शिक्षा उनको शक्ति प्रदान करती है। यदि शिक्षा पर होने वाले खर्च का भार श्रमजीवियों को और अशिक्षितों को भी उठाना पड़े और शिक्षा का लाभ उन्हें न मिले, तो यह अन्यायपूर्ण षड्यंत्र है।

702 श्रम

7020. पश्चिमी देशों में श्रम का अभाव होने से वहां श्रम बहुत महंगा है।

परिणामस्वरूप श्रम-सम्मान उनका स्वभाव बना हुआ है। भारत श्रम-बहुल देश है, यहां श्रम सस्ता भी है और आसानी से उपलब्ध भी है, इसलिए श्रम-सम्मान नहीं है। कारखानों में श्रम कानूनों का उल्लंघन होता ही है। ऐसा एक भी कारखाना नहीं, जो सभी कानूनों का अक्षरशः पालन कर सके। इसलिए कानून के माध्यम से श्रम का महत्व बढ़ाने का महत्व धोखा मात्र है।

7021. श्रम की मांगवृद्धि, श्रम-मूल्य वृद्धि की पूरक है। श्रम की मांग बढ़ेगी, तभी श्रम का मूल्य बढ़ेगा। किन्तु श्रम की मांग बढ़ाने की अपेक्षा हम तकनीक को सस्ता करके श्रमजीवियों की आर्थिक सहायता करना चाहते हैं। क्योंकि बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों में मालिक और गुलाम या दाता और भिखारी की भावना बढ़ती जा रही है। मैं इसके विरुद्ध हूं। गुलाम और मालिक या दाता और भिखारी की प्रवृत्ति बदलनी चाहिए और इसका समाधान यह है कि श्रम और कृत्रिम ऊर्जा के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़े।

7022. उच्च मध्यम वर्गीय या सम्पन्न लोग श्रम खरीदना अपना अधिकार समझते हैं। उन्हें डर है कि यदि श्रम बेचने वाले नहीं मिलेंगे, तो वे लोग आराम से घर में बैठकर अथवा केवल बौद्धिक श्रम करके नहीं खा पायेंगे। उन्हें भी श्रम बेचने वालों के अभाव में शारीरिक श्रम करना मजबूरी हो जायेगी।

7023. यदि सम्पन्न होने के बाद भी श्रम करते हैं या उत्पादन करते हैं, तो कोई कारण नहीं कि दूसरे लोग सम्पन्न होने के बाद घर में बैठ जायें। जो लोग कहते हैं कि श्रम-मूल्य बढ़ जाने से श्रमिक काम करना कम कर देंगे, यह गलत है।

7024. पश्चिम के अधिकांश देश श्रम-अभाव देश हैं तथा श्रम-बहुल देशों से श्रम आयात करना उनकी मजबूरी है। दूसरी ओर साम्यवादी देश मनुष्य को अपनी राष्ट्रीय सम्पत्ति समझते हैं, विश्व व्यवस्था के स्वतंत्र सदस्य नहीं। साथ ही वे अपना श्रम बाहर नहीं जाने देना चाहते। यही कारण है कि वे प्रशासनिक दृष्टि से कड़े प्रतिबंध लगाकर श्रम को अपने पास रोक कर रखते हैं। साथ ही उनकी मजबूरी है कि वे दुनिया में अपना निर्मित सामान निर्यात करने के लिए श्रम को सस्ता रखें।

703 श्रम और कर प्रणाली

7030. कृत्रिम ऊर्जा के मूल्य बढ़ने के बाद भी उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य नहीं बढ़ेंगे, क्योंकि बिक्री कर, उत्पादन कर, मंडी कर, वैट आदि समाप्त हो जायेंगे।

7031. कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि का सभी राजनैतिक दल बढ़-चढ़कर विरोध करते हैं, जबकि सभी प्रकार के अनाज, खाद्य तेल, दाल, वनोपज आदि पर टैक्स का कोई विरोध नहीं होता। यहां तक कि पशु-चारा में काम आने वाली खली पर भी लगने वाले टैक्स का विरोध नहीं होता।

7032. सभी प्रकार के कर हटाकर तथा गरीबी रेखा से नीचे वालों को जीवन भत्ता देकर सारा कर कृत्रिम ऊर्जा पर डाल देना ही सर्वश्रेष्ठ समाधान है।

7033. यदि भारत की आधी आबादी को दो हजार 'मूल रुपया' मासिक का जीवन भत्ता देकर, तथा रोटी, कपड़ा, मकान तथा कृषि उपज, वनोपज जैसी ग्रामीण उत्पादन और उपभोक्ता वस्तुओं पर से सब

प्रकार के टैक्स हटा लिए जायें और सारा खर्च कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि करके वसूल लिया जाये, तो क्या गरीब और अमीर के बीच की खाईं कम नहीं हो जायेगी?

7034. कृत्रिम ऊर्जा का अमीर लोग अधिक और गरीब लोग कम उपयोग करते हैं, जबकि साइकिल, खाद्य तेल, दाल गरीब लोग अधिक और अमीर लोग कम उपयोग करते हैं। टैक्स लगाना हो तो साइकिल, दाल, खाद्य तेल पर लगेगा और कृत्रिम ऊर्जा पर सब्सीडी दी जाती है, यह उचित नहीं है।

7035. भारत का कोई पूंजीपति सम्पत्ति कर से सहमत नहीं होगा, भले ही उसे कुछ भी करना पड़े। इसी तरह भारत का कोई भी बुद्धिजीवी कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि से भी सहमत नहीं होगा, क्योंकि ये दोनों सुझाव दोनों प्रकार के लोगों अर्थात् पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों के लिए घातक हैं।

7036. यदि गरीब ग्रामीण श्रमजीवी उत्पादकों से भारी टैक्स वसूल कर शिक्षा पर खर्च किया जाता है तो यह अन्याय है। क्यों नहीं शिक्षा पर किया जाने वाला खर्च पूंजीपति शहरी शिक्षा प्राप्त उपभोक्ताओं से वसूल किया जाये। किसी सरकार में ऐसी हिम्मत नहीं है कि वह कमजोरों पर टैक्स माफ करके मजबूतों पर लगा दे अथवा शिक्षा का बजट बन्द करके कमजोरों पर टैक्स माफ कर दे।

7037. दो प्रतिशत सम्पत्ति कर तथा कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि करके सभी प्रकार के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर समाप्त किये जा सकते हैं। वर्तमान मुद्रा-प्रणाली पूंजीवाद की देन है और इस माध्यम से सरकारें देश की अर्थव्यवस्था पर भी अपनी पूरी नकेल कस कर रखना चाहती हैं।

7038. रोटी-कपड़ा, मकान, दवा और वनोत्पाद जैसे पहले वर्ग के उत्पादन और उपभोक्ता वस्तुओं को कर मुक्त करना ही चाहिए। भारत ने चालीस वर्ष साम्यवादी, समाजवादी षड्यंत्र के अन्तर्गत निचले वर्ग का शोषण किया और अब पूंजीवादी षड्यंत्र के अन्तर्गत हो रहा है।

7039. मंदिर, मस्जिद, वक्फ, धर्मशाला पर भी संपत्ति कर लगाकर, उक्त कर का समान वितरण अधिक अच्छा होगा, क्योंकि धार्मिक संपत्ति पूंजीपतियों का सुरक्षा कवच है।

704 श्रमजीवी श्रमिक

7040. आदर्श वर्ण-व्यवस्था में श्रमजीवी का अर्थ शूद्र होता था। जो विकृत वर्ण-व्यवस्था में शूद्र का अर्थ श्रमजीवी के रूप में बदल गया।

7041. पूंजीवाद से संघर्ष के लिए कुछ बुद्धिजीवियों ने श्रम उत्थान का मुखौटा लगाकर वामपंथ के नाम से बुद्धिजीवियों का नेतृत्व करना शुरू कर दिया। इन्होने सत्तर वर्षों में इस बात का विशेष ख्याल रखा कि - (1) श्रमजीवियों की तकलीफें कभी दूर न हों, (2) श्रमजीवियों को निरंतर तकलीफ दूर होती हुई दिखें और (3) श्रमजीवियों को निरंतर यह आभास होता रहे कि भारतीय शासन व्यवस्था में श्रमजीवियों का भी उचित प्रतिनिधित्व है, भले ही उन श्रमजीवियों का वर्तमान में श्रम से दूर-दूर तक का संबंध न हो। किसी भी व्यवस्था में श्रमजीवियों की कोई भूमिका हो ही नहीं सकती। कोई आश्वासन भी दे तो गलत है, किन्तु पारिवारिक और स्थानीय व्यवस्था में यदि ऊपरी हस्तक्षेप शून्य हो जाता, तो

सम्पूर्ण व्यवस्था के नीचे के आधे हिस्से में उनकी भागीदारी संभव थी।

7042. बुद्धिजीवियों ने श्रमजीवियों को जाति के नाम पर बांटकर दलित, आदिवासी और पिछड़ों के नाम पर ऐसी राजनीति की कि श्रमजीवी दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों को भी बुद्धिजीवी दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों के उत्थान में सुख का अनुभव होने लगा। जातीय शोषण दूर करने के प्रयत्न श्रम-शोषण में वृद्धि करते हैं, जिसका सारा दुष्परिणाम श्रमजीवियों को उठाना पड़ता है।

7043. एक भूखे श्रमिक को बीस रुपया मिले और वह मक्का की रोटी न खाकर किशमिश खाने की चिन्ता करे तो भूल किसकी है? श्रमजीवी ग्रामीण, किसानों के लिए रोजगार गारंटी योजना को शिक्षा से भी अधिक प्राथमिक कार्य समझना चाहिए।

7044. श्रमजीवी किसान और बुद्धिजीवी किसानों के बीच सुविधाओं का भारी फर्क है, किन्तु दुःख तब होता है जब सम्पूर्ण भारत में श्रम के पक्ष में कोई आवाज न उठकर हर आवाज बुद्धि के पक्ष में ही उठती है। उपलब्ध आंकड़े बिल्कुल साफ-साफ प्रमाणित करते हैं कि गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी स्वतंत्रता के बाद लगातार बुद्धिजीवियों, पूंजीपतियों और राजनेताओं के द्वारा छले जा रहे हैं।

7045. बुद्धिजीवी और श्रमजीवी के बीच बढ़ते अंतर का कारण व्यक्ति नहीं, वर्तमान सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था है, जो लगातार श्रम और बुद्धि के बीच की क्षमता का अंतर बढ़ा रही है।

7046. समाज के श्रमजीवी और बुद्धिजीवी दोनों वर्ग स्वयं को उपकृत मानकर राजनैतिक व्यवस्था की जय-जयकार करते रहे। बुद्धिजीवी-

पूंजीपति वर्ग इसलिए जय-जयकार करेगा कि वर्तमान व्यवस्था ने श्रम की मांग को इतना कम करके रखा कि उसका मूल्य बुद्धि और धन की अपेक्षा बहुत कम बढ़े या नहीं बढ़े।

7047. बुद्धिजीवी और श्रमजीवी के रूप में समाज का आंकलन करें तो धूर्तता का अधिकांश प्रतिशत बुद्धिजीवियों के बीच ही घुला-मिला रहता है। श्रमजीवियों में ऐसा प्रतिशत नगण्य ही रहता है। क्योंकि सफल धूर्तता के लिए जितनी कला-कौशल, साधन और संगठन की आवश्यकता होती है, वह श्रमजीवियों के पास होता ही नहीं। श्रमजीवियों में न तो धूर्तता करने की क्षमता होती है और न ही उससे बचने की। वह तो बेचारा बुद्धिजीवियों के ही मार्गदर्शन में लगातार चलता रहता है, क्योंकि उसे स्वयं नहीं पता कि, उसे मार्ग दिखाने वाले का उद्देश्य उनका शोषण है या सुरक्षा।

7048. धूर्त सवर्ण बुद्धिजीवियों को परंपरागत सामाजिक आरक्षण का लाभ उपलब्ध हो रहा है और धूर्त अवर्ण बुद्धिजीवियों को सुधारात्मक संवैधानिक आरक्षण का। सवर्ण-अवर्ण बुद्धिजीवियों के नापाक गठबंधन के खिलाफ अवर्ण श्रमजीवियों को आवाज उठानी चाहिए तथा सवर्णों को भी ऐसी आवाज का समर्थन करना चाहिए, जो ऐसे नापाक गठबंधन के विरुद्ध हैं।

7049. समानता की एक ही परिभाषा है कि किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित सीमा-रेखा से ऊपर वालों को समान स्वतंत्रता और नीचे वालों को समान सुविधा प्राप्त हो। सरकारें आर्थिक असमानता रोकने के लिए जो प्रयत्न करती हैं, उनके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानता तो नहीं रुकती, बल्कि वर्ग-संघर्ष बढ़ता है।

7050. श्रमजीवी की विकास दर 1% वार्षिक, बुद्धिजीवी की 7% तथा धनवालों की 14% तक है। श्रमजीवी गरीब, ग्रामीण चींटी की चाल से प्रगति कर रहे हैं, तो बुद्धिजीवी शहरी साइकिल की गति से तथा बड़े-बड़े उद्योगपति हवाई जहाज की गति से।

7051. एक श्रमिक को तीन सौ रुपये प्रतिदिन में भी काम नहीं मिलता। इसके बाद भी सम्पूर्ण भारत में लगातार यह प्रचारित किया जा रहा है कि आज भारत में काम करने को मजदूर नहीं मिलते।

7052. पूरे भारत में गरीब ग्रामीण श्रमजीवी के शोषण के उद्देश्य से शहरी, पूंजीपति, बुद्धिजीवी वर्ग तरह-तरह के षड्यंत्र कर रहा है। इस षड्यंत्र में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है 'सस्ती कृत्रिम ऊर्जा'। शारीरिक श्रम को बौद्धिक श्रम के षड्यंत्र से मुक्त होना ही पर्याप्त नहीं है, पर्याप्त होगा श्रम की मांग का बढ़ना, उसका महत्व बढ़ना।

7053. मई दिवस बौद्धिक श्रम करने वालों के लिए वरदान है। उन्हें पूंजीपतियों के समानान्तर एक पहचान मिली है। उन्हें शारीरिक श्रम करने वालों का शोषण करने का अधिकार तथा राज्य सत्ता में भागीदारी मिली है। उनकी प्रगति के द्वार खुले हैं। दूसरी ओर एक मई शारीरिक श्रम करने वालों के लिए एक कलंक का दिन है। एक मई को श्रम-शोषण दिवस के रूप में मनाने की पहल करनी चाहिए। क्योंकि एक मई ने बुद्धिजीवी व संगठित मजदूरों को सशक्त किया है, उन्हें आजादी दिलाई है, किन्तु श्रम को उससे दूर रखने का षड्यंत्र भी किया है।

7054. भारत में कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ा है और गरीब किसान

आत्महत्या कर रहा है, यह सोचनीय है। भारत जैसे देश में जहां वार्षिक विकास दर दुनिया में उल्लेखनीय है, वहां के श्रमजीवियों को नरेगा और गरीबों को सस्ता चावल दे-देकर मरने से बचाया जा रहा है।

7055. भारत के श्रमजीवी की दुर्दशा यह है कि अमेरिका में श्रमजीवी का एक दिन का जितना श्रम-मूल्य है, उतना भारतीय श्रमिक को एक माह में भी नहीं मिलता।

7056. सरकार द्वारा मजदूरी बढ़ाना घातक परंपरा है। इससे श्रम की मांग घटती है और श्रम-मूल्य पर बुरा असर होता है। संगठित लोग मिल मजदूर के रूप में श्रमजीवियों को ब्लैकमेल करते हैं।

7057. सामान्य जन, शरीफों, श्रमजीवियों, गरीबों की स्वतंत्रता की भूख इस सीमा तक मर गई है कि उन्हें गुलामी में ही आनन्द आ रहा है।

7058. यह तो और भी ज्यादा अन्यायपूर्ण है कि श्रमजीवी उत्पादन तथा उपभोग की वस्तुओं पर जजिया कर के समान टैक्स वसूला जाये और बुद्धिजीवियों की सुविधा के उपयोग में आने वाली कृत्रिम ऊर्जा पर खर्च कर दिए जाए। मैं बार-बार यह प्रश्न पूछता हूं कि साइकिल पर भारी टैक्स लगाकर रसोई गैस को सब्सिडी देना किस आधार पर उचित और न्याय संगत है? फिर से श्रमजीवियों के पक्ष में एक लड़ाई लड़नी पड़ेगी, जो बुद्धिजीवियों को ही आगे आकर लड़नी होगी।

7059. दूसरों के टुकड़ों पर पलने वाले शिक्षार्थी तथा नौकरी मांगने वाले भिखारी स्वतंत्र श्रमिक की अवहेलना करें, यह विदेशी मानसिकता है, भारतीय नहीं। इसे निरूत्साहित करने की आवश्यकता है।

7060. श्रमजीवियों द्वारा उत्पादित कृषि उपज, वन उपज पर भारी टैक्स लगाकर शिक्षा पर भारी खर्च किया जा रहा है। बेशर्म बुद्धिजीवी आज भी शिक्षा का बजट बढ़ाने की अन्यायपूर्ण मांग करते देखे जाते हैं, किन्तु कोई नहीं कहता कि गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी द्वारा उत्पादन और उपभोग की वस्तुओं पर टैक्स लगाकर शिक्षा पर व्यय करना अन्याय है। शिक्षा का पूरा बजट रोककर श्रमिकों के साथ न्याय पर खर्च होना चाहिए।

7061. श्रमजीवी वह व्यक्ति माना जाता है जो किसी बुद्धिजीवी को श्रम बेचता है। दूसरी ओर बुद्धिजीवी वह माना जाता है, जो किसी का श्रम खरीदता है। पूंजीपति श्रम भी खरीदता है और बुद्धि भी।

7062. भारत में छोटे किसानों की स्थिति श्रमजीवियों की अपेक्षा अधिक खराब है तथा बड़े किसानों की स्थिति बहुत अच्छी है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस तरह लघु उद्योग का मरना सच है और छोटे व्यापारी परेशान हैं, उसी तरह छोटे किसान भी परेशान हैं।

7063. सन् 1947 में श्रम-मूल्य और बुद्धि के मूल्य में दो गुणे का फर्क था, तो आज श्रमजीवी की अपेक्षा बुद्धिजीवी के जीवन स्तर में आठ गुणे का अंतर आ गया है। यह अंतर ही स्पष्ट करता है कि कृत्रिम ऊर्जा ने बुद्धिजीवियों की अधिक और श्रमजीवियों की कम मदद की।

706 श्रम

7064. दुनिया के बुद्धिजीवी हजारों वर्षों से श्रम-शोषण के नए-नए तरीके खोजते रहे हैं। इसके लिए भारत के बुद्धिजीवियों ने जातीय आरक्षण को महत्व दिया, तो पश्चिम ने पूंजीवाद को।

7065. भारत में श्रम-शोषण के चार तरीके सर्व स्वीकृत हैं :- (1) कृत्रिम ऊर्जा मूल्य नियंत्रण, (2) श्रम-मूल्य वृद्धि की सरकारी घोषणा, (3) शिक्षित बेरोजगारी दूर करने की कोशिश और (4) सामाजिक न्याय को सर्वोच्च प्राथमिकता के नाम पर जातीय आरक्षण। भारत का हर बुद्धिजीवी वामपंथियों के नेतृत्व में चारों दिशाओं में निरन्तर सक्रिय रहता है। प्रत्येक राजनैतिक दल पूरा प्रयत्न करता है कि आर्थिक असमानता वृद्धि के उसके प्रयास पूरी तरह अप्रत्यक्ष भी हों तथा प्रजातांत्रिक भी। भारत के सभी बुद्धिजीवी इन चारों प्रकार के प्रयत्नों के आधार पर मांग उठाते रहते हैं तथा पूंजीपतियों के समर्थक ऐसी मांगों को स्वीकार कर लेते हैं। सामाजिक न्याय के नाम पर होने वाले वर्ग-संघर्ष की जगह श्रम की मांग और मूल्य को ही बढ़ने दिया जाता है, तो आदिवासी, हरिजन और पिछड़ों का अधिक लाभ संभव है।

7066. श्रम-मूल्य दो प्रकार के होते हैं:- वास्तविक और कृत्रिम। वास्तविक श्रम-मूल्य वह होता है, जिस पर किसी भी व्यक्ति को काम मिलना स्वाभाविक हो और कृत्रिम श्रम-मूल्य वह होता है, जो सरकार घोषित करती है, पर रोजगार गारंटी नहीं है। नरेगा वास्तविक श्रम-मूल्य होता है, तो सरकार द्वारा घोषित श्रम-मूल्य कृत्रिम। सरकार द्वारा घोषित श्रम-मूल्य श्रम-शोषण में सहायक होता है। हमारे क्षेत्र छत्तीसगढ़ में कृत्रिम श्रम-मूल्य 350 रुपए और वास्तविक 250 से 300 रुपये है। सीमावर्ती राज्य झारखंड में कृत्रिम श्रम-मूल्य 350 और वास्तविक 200 से 250 रुपए है।

7067. दुनिया के अनेक देश श्रम-अभाव क्षेत्र हैं और भारत श्रम-बहुल

क्षेत्र। दुनिया के लिए कृत्रिम ऊर्जा श्रम-सहायक है, तो भारत में श्रम की प्रतिस्पर्धी। गांधीजी का ''मशीनीकरण घटाओ का श्रम-सिद्धांत'' अच्छा होते हुए भी असफल रहा है। वर्धा घानी भी पावर घानी में बदल रही है। मार्क्स ने मशीनी औद्योगीकरण का समर्थन किया और उसके लाभ में श्रमिकों के भागीदारी की वकालत की, परन्तु मार्क्स की श्रम-नीति भी असफल रही। अब मार्क्सवादी भी मशीनीकरण के विरुद्ध खड़े हो रहे हैं। तीव्र मशीनी औद्योगीकरण तभी लाभदायक होता है, जब उत्पादन क्षेत्र के बाहर उसकी खपत के लिए कमजोर क्षेत्र तैयार हों। ऐसी औद्योगिक इकाइयां उत्पादन क्षेत्र की बेरोजगारी तो दूर करती हैं, परन्तु उपभोक्ता क्षेत्रों में कई गुना बेरोजगारी बढ़ा देती हैं।

7068. भारत में कुल छः आर्थिक समस्याएं हैं :- (1) महंगाई, (2) बेरोजगारी, (3) आर्थिक असमानता, (4) श्रम-शोषण, (5) बढ़ता विदेशी कर्ज और (6) गरीबी। सभी आर्थिक समस्याओं का एक समाधान है कृत्रिम ऊर्जा में बहुत भारी मूल्य-वृद्धि। यह मूल्य-वृद्धि पर्यावरण-प्रदूषण, आयात-निर्यात असंतुलन आदि समस्याओं के समाधान में भी सहायक है। इससे लघु उद्योग बढ़ेंगे और शहरी आबादी विकेन्द्रित होगी। कृत्रिम ऊर्जा मूल्य-वृद्धि से भारत में उत्पादन भी बढ़ेगा।

707 श्रम-मूल्य

7070. वास्तविक श्रम-मूल्य की वास्तविक स्थिति छिपाने के लिए न्यूनतम श्रम-मूल्य की ऐसी घोषणा करना जिसका वास्तविकता से कोई संबंध न हो, गलत है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई

सरकार किसी वस्तु का न्यूनतम मूल्य तो घोषित कर दे किन्तु उस वस्तु को उससे कम पर बिकने पर भी अपना दायित्व न समझे और उसे यों ही बिकने दे।

7071. भारत में पिछले साठ-पैंसठ वर्षों से महंगाई, गरीबी का जो हल्ला किया जा रहा है, वह पूरी तरह या तो झूठा है या कृत्रिम। न महंगाई वास्तविक है, न गरीबी। ऐसे सभी प्रचार भारत के बुद्धिजीवियों, पूंजीपतियों और राजनेताओं का मिला-जुला षड्यंत्र मात्र है।

7072. श्रम-मूल्य बढ़े, यह तभी संभव है, जब श्रम की मांग बढ़े। यदि श्रम व्यवस्था से सभी सरकारी हस्तक्षेप और संरक्षण समाप्त करके श्रम की मांग बढ़ने दिया जाये, तो कार्य की गुणवत्ता स्वयं बढ़ जायेगी।

7073. कृत्रिम श्रम-मूल्य इतना बढ़ा दिया गया कि श्रम की मांग कम हो गई और बाजार मूल्य भी कम हो गया। पूरा का पूरा श्रम-कानून श्रमिकों के नाम पर कुछ बुद्धिजीवियों को अतिरिक्त लाभ पहुँचाने का षड्यंत्र है। यदि आपको मूल्य बढ़ाना है, तो मांग बढ़ानी होगी और मांग बढ़ाने के लिए मूल्य घटाने होंगे। मूल्य-वृद्धि मांग का परिणाम है, मांग का आधार नहीं।

7074. गरीबी और बेरोजगारी दूर होगी, श्रम की मूल्य वृद्धि से, श्रम-मूल्य वृद्धि होगी, श्रम की मांग बढ़ने से। भ्रष्टाचार दूर होगा, अनावश्यक कानूनों की समाप्ति से।

7075. श्रम-मूल्य की घट-बढ़ एक आर्थिक सिद्धांत है, जो पश्चिम और साम्यवादी विचारकों की कुछ किताबों के निष्कर्षों को सूत्र मानकर चलने से गड़बड़ा सकता है।

7076. कृषक के मन में कूट-कूट कर भर दिया जाता है कि श्रम-मूल्य

वृद्धि एवं कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि किसानों के लिए हानिकारक है, जबकि यह बात पूरी तरह असत्य है। किसानों को यह बात समझा दी गयी है कि श्रम-मूल्य वृद्धि का उस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस आधार पर किसान बिजली, डीजल, खाद आदि के मूल्य कम करने का अधिक दबाव बनाता है और उत्पादन के बिक्री मूल्य वृद्धि का कम।

7077. यदि श्रम-मूल्य बढ़ा, आर्थिक असमानता घटी या देश के निचले तबके का आर्थिक विकास हुआ, तो भारत में साम्यवाद की संभावनाओं पर बुरा असर स्वाभाविक है।

7078. नकली श्रम-मूल्य जितना अधिक बढ़ेगा, उतना ही अधिक श्रम की मांग घटेगी और उसी अनुसार श्रम का बाजार मूल्य घटेगा। इस न्यूनतम नकली श्रम-मूल्य घोषणा की बुद्धिजीवियों पर अच्छा और शारीरिक श्रम करने वालों पर विपरीत प्रभाव स्वाभाविक है।

7079. जब तक भारत में शारीरिक श्रम मूल्य वृद्धि की कोई योजना ईमानदारी से लागू नहीं होगी, तब तक न तो सामाजिक न्याय होगा और न ही सामाजिक संघर्ष रुकेगा।

7080. यदि सरकार न्यूनतम श्रम-मूल्य घोषित करे, तो उक्त श्रम-मूल्य पर किसी भी व्यक्ति को रोजगार प्राप्त करना उसका संवैधानिक अधिकार हो।

7081. कानून से श्रम का मूल्य बढ़ाना घातक है, क्योंकि कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य कम बढ़े और श्रम का मूल्य ऊर्जा के अनुपात में ज्यादा बढ़े, तो यह मूल्य वृद्धि श्रम की मांग को घटाती है। ऐसी मूल्य वृद्धि बाजार में बेरोजगारी बढ़ाती है तथा श्रम-मूल्य को बढ़ने से रोकती है।

7082. श्रम का मूल्य बाजार से अधिक बढ़ा दिया जाता है, तो कृषक के लिए कठिनाई पैदा करता है।

7083. राष्ट्रीय प्रगति का सर्वश्रेष्ठ मापदण्ड यह होता है कि देश में श्रम का मूल्य कितना बढ़ा, क्योंकि श्रम का मूल्य बढ़ना ही गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी की प्रगति का एकमात्र मापदण्ड होता है।

7084. मनुष्य हमारा साध्य है और तेल साधन। मनुष्य के लिए तेल के मूल्य कम या ज्यादा होंगे न कि तेल के लिए मनुष्य के। यदि तेल के कारण मनुष्य बेरोजगार हो रहे हों, तो यह उचित नहीं है।

708 श्रम शोषण

7085. बुद्धि प्रधान लोगों ने श्रमिकों का चोला पहनकर लाभ को आपस में बांट लिया। संगठित श्रमिकों ने असंगठित श्रमिकों का निरंतर शोषण किया और आज भी कर रहे हैं। गांधी जी की नीति इस संबंध में अधिक व्यावहारिक थी, किन्तु शासन की गलत ऊर्जा-नीति के कारण उक्त योजना पूरी तरह फेल हो गई।

7086. वर्तमान व्यवस्था पूरी तरह शरीफों, गरीबों तथा श्रमजीवियों के शोषण के उद्देश्य से अपराधियों, पूंजीपतियों तथा बुद्धिजीवियों का योजनाबद्ध षड्यंत्र है।

7087. जिस व्यक्ति की आय का मुख्य स्रोत सिर्फ शारीरिक शक्ति पर निर्भर है, उसे श्रम प्रधान कहते हैं। ऐसे व्यक्ति की सम्पूर्ण आय में श्रम की भूमिका निर्णायक और बुद्धि की आंशिक होती है।

7088. भारत का श्रमजीवी 80% अनाज उपभोग करता है और बुद्धिजीवी 15%। किन्तु टेलीफोन, रसोई गैस, आवागमन और कृत्रिम ऊर्जा के मामले में स्थिति ठीक इससे विपरीत है। अनिवार्य आवश्यकता की वस्तुओं और सुविधा की वस्तुओं में अन्तर करना शुरू करें।

7089. प्रारंभ से ही दुनिया में चार प्रकार की व्यवस्था के परिवार पाये जाते हैं :- (1) बुद्धि, (2) शक्ति, (3) धन और (4) श्रम। पूंजीवाद ने श्रम-शोषण के लिए धन प्रधान संस्कृति का विकास किया और साम्यवाद ने श्रम-शोषण के लिए बुद्धि प्रधान संस्कृति को आगे बढ़ाया। पूंजीवाद और साम्यवाद शुरू से ही श्रम-शोषण में लगा हुआ है। पूंजीवाद श्रमजीवियों के नाम पर योजनाएं बनाता है और साम्यवाद श्रम सुरक्षा के नाम पर। श्रम को तो हमेशा जूठन से ही काम चलाना है। भारत मे श्रम-शोषण और आर्थिक असमानता का सबसे बड़ा कारण साम्यवादी ही हैं, जो बुद्धिजीवियों को श्रमजीवी घोषित करके निरंतर श्रम-शोषण की नई-नई योजनाएं बनाते रहते हैं। यदि समाज में श्रम की मांग बढ़ जाये तो उसका मूल्य भी बढ़ जायेगा और सम्मान भी। एक षड्यंत्र के अन्तर्गत श्रम की मांग को कम करने की योजनाएं बनाई जाती हैं। साम्यवादी इन योजनाओं को बनाने का नेतृत्व करते हैं और पूंजीवादी इन योजनाओं का समर्थन करते हैं।

7090. समाज में श्रमजीवियों का शोषण करने के लिए बुद्धिजीवियों ने कई तरीके खोज लिए हैं। श्रम की अपेक्षा शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाना भी उन तरीको में से ही एक है। शिक्षा और ज्ञान के विस्तार के नाम पर श्रम-शोषण उचित नहीं है। श्रम को यदि उचित मूल्य मिलने लगा, तो शिक्षा भी स्वतः समान हो सकती है और ज्ञान का भी विस्तार हो सकता है।

7091. अर्थशास्त्र का एक सामान्य सिद्धान्त है कि जिस वर्ग को प्रोत्साहित करना हो, उसका ईंधन सस्ता होना चाहिए, भले ही उपकरण महंगा

हो जाये और जिस वर्ग को निरूत्साहित करना हो, उसका ईंधन महंगा हो, भले ही उपकरण सस्ता हो जाए।

7092. पूंजीवादी देशों की शह पर तथा उनसे धन ले-लेकर पर्यावरण प्रदूषण, मानवाधिकार, बालश्रम, आदिवासी-हरिजन उत्पीड़न, बढ़ती आबादी, अशिक्षा, पानी का संकट आदि कम प्राथमिकता वाली भावनात्मक समस्याओं को आगे लाकर उनके समाधान के लिए आन्दोलन प्रायोजित होते हैं।

7093. श्रम-शोषण और आर्थिक असमानता के विस्तार में साम्यवादी पूंजीवादियों की अपेक्षा अधिक घातक है, क्योंकि इनका आक्रमण एक मीठा जहर है, जो श्रमजीवियों और गरीबों के नाम पर उनके शोषण का मार्ग प्रशस्त करता रहता है।

7094. आर्थिक असमानता और श्रम-शोषण बहुत महत्वपूर्ण है। आर्थिक असमानता और श्रम-शोषण एक-दूसरे के साथ जुड़े होते हुए भी कुछ अलग हैं। पूंजीवादी देशों में आर्थिक असमानता बहुत अधिक होते हुए भी श्रम-शोषण नहीं के बराबर है।

7095. जब भारत में विकास दर आठ प्रतिशत के आस-पास हो, जब भारत में बुद्धि का मूल्य बहुत तीव्र गति से बढ़ रहा हो, ऐसी स्थिति में भी यदि श्रम का मूल्य न बढ़े तब विश्वास करना पड़ता है कि किसी षड्यंत्र के तहत् श्रम का शोषण हो रहा है। भारत का श्रमजीवी ऐसे ही षड्यंत्र का शिकार है।

7096. पूंजीवादी समाज व्यवस्था श्रम-शोषण में इसलिए लिप्त रहती है कि वह पूंजीपतियों की संतुष्टि और सहायता पर ही आगे बढ़ती है।

7097. श्रम-शोषण तथा आर्थिक असमानता न प्राकृतिक समस्या है और

न ही कोई परिस्थिति जन्य समस्या। यह तो पूरी तरह पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों का एक मिला-जुला षड्यंत्र है, जिसमें भिन्न-भिन्न राजनैतिक उद्देश्यों के लिए भिन्न-भिन्न राजनैतिक दल शामिल हैं।

7098. शिक्षा को श्रम-शोषण का आधार नहीं बनाया जा सकता, जैसा कि आज हो रहा है।

7099. भीमराव अम्बेडकर एक बड़े बुद्धिजीवी थे और पूरी तरह श्रम-शोषण के पक्षधर थे। उन्होंने बुद्धिजीवियों के लिए आजीवन चिंता की, किन्तु श्रमजीवियों के लिए कुछ नहीं किया। भारत का हर बुद्धिजीवी चाहे वह सवर्ण हो या अवर्ण, पूरी ईमानदारी से भीमराव अम्बेडकर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। क्योंकि डॉ अम्बेडकर ने ही उन्हें मिलकर श्रम-शोषण का कानूनी लाइसेंस प्रदान कराया है। भारत में लोकतांत्रिक तरीके से सफलतापूर्वक श्रम-शोषण के लिए चार माध्यम अपनाये जाते हैं :- (1) आरक्षण, (2) कृत्रिम ऊर्जा मूल्य नियंत्रण, (3) शिक्षित बेरोजगारी और (4) श्रम-मूल्य वृद्धि।

7100. श्रम-शोषण से मुक्ति के कुछ उपाय किये जा सकते हैं :- (1) परिवार व्यवस्था को सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में कानूनी मान्यता दी जानी चाहिए। गरीब या बेरोजगार व्यक्ति नहीं परिवार माना जाना चाहिए, (2) गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी के सभी प्रकार के उत्पादन और उपभोग की वस्तुओं को कर मुक्त करके सारा टैक्स कृत्रिम ऊर्जा पर लगा देना चाहिए, (3) शिक्षा पर होने वाला सारा बजट शिक्षा प्राप्त कर रहे या कर चुके लोगों से पूरा किया जाना चाहिए और (4) सरकार जो भी श्रम-मूल्य घोषित करे, उस श्रम-मूल्य पर

किसी भी बेरोजगार को रोजगार देने की सरकारी बाध्यता होनी चाहिए।

7101. हजारों वर्षों से बुद्धिजीवियों ने श्रम-शोषण के अनेक तरीके खोजे और उनका लाभ उठाया। वर्तमान भारत में भी बुद्धिजीवियों द्वारा श्रम-शोषण के नये-नये तरीके खोजे जा रहे हैं। बुद्धिजीवियों ने भारत में श्रम-शोषण के अनेक तरीके खोजे हैं। स्वतंत्रता के पूर्व जाति आरक्षण का सहारा लिया गया तो स्वतंत्रता के बाद शिक्षा विस्तार, जातीय आरक्षण तथा कृत्रिम ऊर्जा मूल्य नियंत्रण को आधार बनाया गया।

712 श्रम और साम्यवादी

7120. मानवीय श्रम पर इतना अधिक कर लगाकर न भाजपा सरकार शर्म महसूस करती है, न कांग्रेस। साम्यवादी और समाजवादी तो कभी ऐसे मुद्दों को छेड़ते ही नहीं, क्योंकि श्रम-शोषण में इनकी भूमिका तो विश्वविख्यात है।

7121. कृत्रिम ऊर्जा मूल्य नियंत्रण का सर्वाधिक लाभ वामपंथियों को होता है। आर्थिक असमानता और शारीरिक श्रम-शोषण का विस्तार असंतोष बढ़ाने में बहुत उपयोगी होता है। यदि ये दो समस्याएं सुलझ जाएं तो वामपंथ का आधार ही खत्म हो सकता है।

7122. वामपंथी खाड़ी देशों के वकील हैं। वे जान दे देंगे, किन्तु डीजल-पेट्रोल का मूल्य नहीं बढ़ाने देंगे। यहां तक कि यदि भारत बिजली उत्पादन की घरेलू कोशिश भी करे, तो ये किसी भी सीमा तक विरोध ही करेंगे।

7123. साम्यवादी व समाजवादी दूरगामी योजना बनाते हैं। वे अच्छी

तरह समझते हैं कि कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि पूंजीपति, शहरी, बुद्धिजीवी तथा बड़े किसान के खिलाफ प्रभाव डालेगी और इन सबका विरोध साम्यवाद व समाजवाद के लिए राजनैतिक रूप से घाटे का आधार बनेगा। इसलिए उन्होंने प्रचार माध्यमों के द्वारा इस असत्य को सत्य के रूप में स्थापित कर दिया कि कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि आम लोगों के लिए अहितकर है।

7124. कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि के खिलाफ सबसे आगे साम्यवादी ही खड़े होते हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि यदि कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि होगी, तो श्रम की स्वाभाविक मांग बढ़ जाएगी और इससे गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी के अंदर निरंतर जलायी जा रही असंतोष की ज्वाला बुझ सकती है, यह ज्वाला ही साम्यवाद का एकमात्र आधार है।

7125. खाड़ी देशों से डीजल-पेट्रोल का आयात बढ़ाने में इन्हें कोई कठिनाई नहीं होती। वामपंथी तो खाड़ी देशों के सहज-सुलभ वकील हैं ही, किन्तु अन्य राजनेता भी किसी न किसी बहाने डीजल-पेट्रोल की बहती गंगा में हाथ धोने में पीछे नहीं रहते।

7126. भारत का हर समाजवादी प्रशासनिक तरीके से आर्थिक समस्याओं के समाधान की बात करता है और किसी भी प्रकार के निजीकरण के विरुद्ध होता है। इसी तरह भारत का हर वामपंथी पूंजीवाद का विरोध करता है और श्रमजीवियों के समर्थन का नाटक करता है।

713 बालश्रम और बंधुआ मजदूर

7130. बंधुआ मजदूर उसे कहा जाता है, जिसे काम छोड़कर जाने की स्वतंत्रता नहीं है। यहां बंधुआ मजदूर कोई नहीं है।

7131. बालश्रम किसी भी रूप में न अनैतिक होता है न अपराध। हमारी सरकार पश्चिमी संस्कृति की आँख मूंदकर नकल करने की प्रवृत्ति के कारण इसे अपराध मानती है। विश्व व्यवस्था से बंधे होने के कारण भी बालश्रम को अपराध मानना पड़ता है।

7132. भारत के कुछ पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता बालश्रम बंधुआ मजदूर निवारण के नाम पर ही अपनी दुकानदारी चलाते रहते हैं, जबकि ऐसा शब्द अस्तित्वहीन होता है। ऐसे लोगों को विदेशी व्यवस्था सम्मानित और प्रोत्साहित करती है और ये लोग विदेशी एजेंट के रूप में समाज में समस्या पैदा करते रहते हैं। भारत सरकार को चाहिए कि वह बालश्रम तथा बंधुआ मजदूरी के नाम पर समाज में अव्यवस्था फैलाने वालों को निरुत्साहित करे। साथ ही विश्व को इस विषय में सही स्थिति से अवगत कराये।

7133. बालश्रम कानून शिक्षा का महत्व बढ़ाता है तथा श्रम का महत्व कम करता है। इसलिए यह कानून अनावश्यक और घातक है।

7134. प्राचीन समय में बच्चे पूरी तरह परिवार के अंग माने जाते थे, किन्तु धीरे-धीरे वे समाज के अंग भी माने जाने लगे। स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र इस बीच में घुस गया और बच्चे, परिवार और समाज के साथ-साथ राष्ट्रीय सम्पत्ति भी माने जाने लगे। राजनेताओं की नीयत और खराब हुई तो उन लोगों ने चुपचाप कानून बनाकर यह घोषित कर लिया कि अवयस्क बच्चे न परिवार की सम्पत्ति हैं और न समाज की, बल्कि उन पर राष्ट्र का पूरा अधिकार है।

7135. यदि कोई बालक परिवार से हटकर समाज के बीच या सरकार के संरक्षण में रहना चाहता है, तो उस बालक को सरकार या समाज

अपने संरक्षण में ले सकते हैं। इसी तरह परिवार भी मजबूरी में अथवा किसी अन्य कारण से अपने बालक को सरकार या समाज के स्वामित्व में छोड़ सकता है। किन्तु सरकार को यह अधिकार नहीं कि वह उक्त अवयस्क बालक, उसके माता-पिता और ग्रामसभा, इन तीनों की सहमति के बिना उस बालक को सीधा निर्देशित या आदेशित करे।

714 श्रम और कृत्रिम ऊर्जा

7141. अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि समृद्ध देशों को पृथक श्रम-नीति बनाने की आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि वहां श्रम कोई समस्या नहीं है। वहां श्रम की मुख्य पहचान शारीरिक श्रम से होती है। शिक्षा श्रम सहायक है और कृत्रिम ऊर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी। भारत को अपनी श्रम-नीति पृथक बनानी थी, जो उसने नहीं बनाई। श्रम मंत्रालय बना, उसने भी पश्चिमी देशों की नकल की। उसने बौद्धिक श्रम को शारीरिक श्रम के साथ जोड़ दिया।

7142. गांधी जी ने स्पष्ट कहा था कि श्रम-सम्मान और श्रम-मूल्य बढ़ना चाहिए। मशीनों का उपयोग अनिवार्य स्थिति में किया जाए, जब या तो श्रम का अभाव हो जाय या श्रम से वह कार्य संभव न हो।

7143. श्रम को लाभ होगा कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि से, कृषि को लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित होने से, ग्राम सभाओं के वास्तविक सशक्तिकरण से। लेकिन वर्तमान तंत्र तीनों ही दिशाओं में विपरीत कार्य कर रहा है।

7144. पूंजीपतियों, शहरी आबादी, बुद्धिजीवियों तथा उपभोक्ताओं

को किसी भी प्रकार की आर्थिक सुविधा बंद की जानी चाहिए, रोजगार को श्रम के साथ जोड़ा जाना चाहिए और बौद्धिक रोजगार को बाजार पर स्वतंत्र कर देना चाहिए।

7145. कृत्रिम ऊर्जा, श्रम का विकल्प है, श्रम, कृत्रिम ऊर्जा का विकल्प नहीं। जब किसी मूल वस्तु का अभाव होता है, तब विकल्प तैयार किया जाता है। विकल्प का उद्देश्य मूल का सहायक होना है, बेरोजगार करना नहीं। कृत्रिम ऊर्जा श्रम की सहायक हो ही नहीं सकती। स्पष्ट है कि वह श्रम की प्रतिस्पर्धी है। कृत्रिम ऊर्जा श्रम सहायक न होकर श्रम-शोषक बन गई। परिणामस्वरूप श्रम उपेक्षित और शोषित होता चला गया। बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों के गठजोड़ ने श्रमजीवी, गरीब, ग्रामीण तक के मन में कृत्रिम ऊर्जा को श्रम सहायक और शिक्षा प्रसार को गरीब विकास के लिए आवश्यक सिद्ध कर रखा है।

7146. कृत्रिम ऊर्जा मूल्यों को न बढ़ने देने से शारीरिक श्रम की मांग पर विपरीत प्रभाव पड़ा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी चौपट हुई। औद्योगीकरण सुविधाजनक हुआ। शहरों का विस्तार हुआ। आर्थिक असमानता भी बढ़ती गयी और श्रम-शोषण भी।

7147. 1. कृत्रिम ऊर्जा की खपत घटनी चाहिए। 2. डीजल-पेट्रोल की खपत को बिजली की खपत में बदलना चाहिए। 3. परमाणु ऊर्जा की अपेक्षा डीजल-पेट्रोल अधिक घातक है और प्राकृतिक ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा की अपेक्षा ज्यादा अच्छी है। परमाणु या कोयला आधारित बिजली संयंत्रों के स्थान पर सौर ऊर्जा या अन्य प्राकृतिक ऊर्जा स्रोत तेजी से विकसित किये जायें। कृत्रिम ऊर्जा

की मूल्य वृद्धि इस प्रकार हो कि इनका वर्तमान मूल्य ढाई गुना हो जाए। निश्चित रूप से इनकी खपत घटेगी।

7148. कृत्रिम ऊर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी तथा बुद्धिजीवियों की सहायक हुआ करती है। भारत में जब भी कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि होती है, तो संसद से सड़क तक बहुत हो-हल्ला होता है, किन्तु साइकिल पर टैक्स बढ़ता है, तो सब चुप हो जाते हैं।

7149. कृत्रिम ऊर्जा को इतने आकर्षक तरीके से गांव-गांव तक पहुँचाया जा रहा है कि बेचारा श्रमजीवी उसकी चकाचौंध में यह समझ ही नहीं पाता कि यह तो उसकी सौत है, प्रतिस्पर्धी है, उसे बेरोजगार कर देगी।

7150. कृत्रिम ऊर्जा श्रम की प्रतिस्पर्धी मानी जाती है और श्रम की मांग तथा मूल्य वृद्धि में बाधक होती है, किन्तु भारत में कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य सिर्फ इसलिए नहीं बढ़ने दिया जाता, क्योंकि उससे श्रम का मूल्य और मांग बढ़ जायेगी। कृत्रिम ऊर्जा सस्ती हो, यह बहुत बड़ा षड्यंत्र है, श्रम का शोषण करने का यह पूंजीवादी मंत्र है।

7151. कृत्रिम ऊर्जा श्रम सहायक नहीं बल्कि श्रम की प्रतिस्पर्धी है। कृत्रिम ऊर्जा का सस्ता होना श्रम-शोषण का सबसे बड़ा माध्यम है। हर बुद्धिजीवी कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि का इसलिए विरोध करता है, कि इसके कारण श्रम की मांग और श्रम का मूल्य बढ़ जायेगा। परिणामस्वरूप उसे या तो स्वयं काम करना होगा या महंगा श्रम खरीदने को मजबूर होना पड़ेगा।

7152. कृत्रिम ऊर्जा श्रम-अभाव क्षेत्रों में श्रम-सहायक तथा श्रम-बहुल देशों में श्रम प्रतिस्पर्धी हुआ करती है। उत्पादन के दो विकल्प

हैं :- 1. श्रम ऊर्जा और 2. कृत्रिम ऊर्जा। उत्पादन के क्षेत्र में तीन विभाजन हैंः- 1. वे कार्य, जो सिर्फ श्रम से ही संभव हैं। 2. वे कार्य, जो सिर्फ कृत्रिम ऊर्जा चलित मशीनों से ही संभव हैं। 3. वे कार्य, जो दोनों के लिए खुले हैं।

7153. कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि कर दी जाये, जिससे श्रम की माँग और मूल्य दोनों बढ़े, और श्रम के साथ न्याय हो। श्रम के साथ न्याय का दूसरा अर्थ यह होगा कि बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों के साथ कुछ अन्याय नहीं होगा।

7154. कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य निर्धारण करने का न्यायसंगत तरीका यह है कि कृत्रिम ऊर्जा मानवीय ऊर्जा की पूरक हो, प्रतिस्पर्धी नहीं। इसका सामान्य फार्मूला है कि एक शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति के आठ घंटे के शारीरिक श्रम का जो सामान्य मूल्य होता है, उससे कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य कम न हो। स्वतंत्रता के बाद के प्रारंभिक काल में ऐसा ही सोच कर कृत्रिम ऊर्जा पर कर लगाये गये थे। ये कर यद्यपि कम ही थे, किन्तु दिशा ठीक थी।

7155. कृत्रिम ऊर्जा बुद्धिजीवियों, पूंजीपतियों की सहायक तथा श्रम शोषक होती है। हर बुद्धिजीवी और पूंजीपति हमेशा चाहता है कि कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य न बढ़े, क्योंकि यदि कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य बढ़ा तो इन दोनों वर्गों का खर्च बढ़ेगा, आय घटेगी। दूसरी ओर कृत्रिम ऊर्जा के महंगा होने से मशीनी उत्पादन भी मंहगा होगा तथा आवागमन भी मंहगा होगा। इसका सीधा प्रभाव श्रम की मांग पर होगा तथा मांग बढ़ने से श्रम का मूल्य भी बढ़ेगा। इसका दुष्प्रभाव बुद्धिजीवी, पूंजीपति समूह पर पड़ना निश्चित है।

7156. बुद्धि प्रधान लोगों ने हमेशा ही श्रम का शोषण किया। वर्ण व्यवस्था को कर्म के आधार से हटाकर जन्म के आधार पर कर दिया गया और सारे सम्मानजनक कार्य अपने लिए आरक्षित कर लिए गये, चाहे योग्यता हो या न हो।

7157. भारत के सभी राजनैतिक दल, जिनमें वामपंथी मुख्य रूप से शामिल हैं, श्रम का वास्तविक मूल्य कभी नहीं बढ़ने देते और इसके लिए परोक्ष रूप से कृत्रिम ऊर्जा को श्रम सहायक घोषित और प्रचारित कर उसकी मूल्य वृद्धि को रोककर रखते हैं। ऐसा करने से उन्हें श्रमजीवियों और गरीबों के मन में आर्थिक असंतोष जीवित रखने में सहायता मिलती है। नकली श्रमजीवियों ने वास्तविक श्रमजीवियों की इस भावना को खूब उभारा और उसे वोट में बदल लिया।

7158. आर्थिक नीतियों में भी कांग्रेस कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि तो करेगी नहीं और जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक श्रम की मांग भी घटेगी और मूल्य भी घटेगा। या तो उदारीकरण की नीति यथावत चलती रहेगी या उदारीकरण को कम कर नकली श्रमिकों के चेहरे को ही मानवीय चेहरा घोषित करके उनके चेहरे पर चमक लौटाने का प्रयास होगा। दोनों ही स्थितियाँ वास्तविक श्रमिकों के हित में नहीं है।

716 कृत्रिम ऊर्जा

7160. ऊर्जा के दो स्रोत होते हैं :- जैविक और कृत्रिम। जैविक ऊर्जा में मनुष्य और पशु माने जाते हैं तो कृत्रिम में डीजल, पेट्रोल, बिजली, कोयला, गैस और सौर ऊर्जा। कृत्रिम ऊर्जा की खपत

बढ़ने से प्रदूषण अधिक बढ़ता है। श्रमिक या जैविक ऊर्जा से उत्पादन की अपेक्षा मशीनी या कृत्रिम ऊर्जा से उत्पादन सस्ता होता है। परिणामस्वरूप श्रम आधारित उत्पादन की मांग घटने से बेरोजगारी फैलती है और श्रम का मूल्य नहीं बढ़ पाता। विदेशी मुद्रा का अभाव होता है। जिसे ठीक करने के लिए अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात करना पड़ता है। अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं पर कर लगाने पड़ते हैं। सम्पन्न लोगों का व्यय घटता है और आय बढ़ती है, परन्तु श्रमिकों के लिए इसके ठीक विपरीत स्थिति होती है। शहरी जीवन सस्ता और रोजगारमूलक होने से शहरी आबादी गांवों की तुलना में लगातार बढ़ती जाती है। विदेशी कर्ज बढ़ता जा रहा है। आवागमन सस्ता होने से उद्योग केन्द्रित होते हैं।

7161. यह कहना गलत है कि भारत में कृत्रिम ऊर्जा के मूल्य बढ़े हैं। सच्चाई यह है कि कृत्रिम ऊर्जा पिछले पचास वर्षों से सस्ती हुई है। सन् 1947 के रुपए के मूल्य से वर्तमान रुपए की तुलना करनी होगी। महंगाई का ठीक आंकलन करने के लिए आम लोगों की क्रय शक्ति से उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य की भी तुलना करनी होगी। क्रय शक्ति बढ़ने तथा उपभोक्ता वस्तुओं का मूल्य घटने के कारण लोगों का जीवन स्तर सुधरा तथा सम्पन्नता बढ़ी है। ज्यों-ज्यों सम्पन्नता बढ़ती है, त्यों-त्यों कृत्रिम ऊर्जा पर निर्भरता तथा उपयोग की मात्रा बढ़ती जाती है। ज्यों-ज्यों गरीबी बढ़ती है, त्यों-त्यों श्रम और रोटी पर निर्भरता बढ़ती जाती है। वर्तमान समय में कृत्रिम ऊर्जा का उपयोग और निर्भरता कई गुना अधिक बढ़ी है तथा श्रम और रोटी पर निर्भरता घटी है।

7162. सस्ती कृत्रिम ऊर्जा भारत की अधिकांश आर्थिक समस्याओं का कारण है। कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य-वृद्धि अनेक आर्थिक समस्याओं का समाधान है। कृत्रिम ऊर्जा मूल्य-वृद्धि से अनेक लाभ हांगे :- (1) शहरी जीवन महंगा होने तथा शहरों में रोजगार घटने से शहरी आबादी का असंतुलन घटेगा। (2) श्रम की मांग और मूल्य बढ़ेगा। (3) आवागमन महंगा होने से ग्रामीण उद्योग, लघु उद्योग पुनर्जीवित होंगे, जिससे ग्रामीण रोजगार बढ़ेगा। (4) डीजल-पेट्रोल की खपत घटने से पर्यावरण प्रदूषण कम होगा। (5) डीजल-पेट्रोल का आयात कम होने से आयात-निर्यात का असंतुलन दूर होगा। (6) आर्थिक असमानता कम हो जाएगी। (7) सभी प्रकार के टैक्स समाप्त होने से काला धन नहीं बनेगा और (8) देश का उत्पादन बढ़ेगा खपत घटेगी।

7163. (1) आश्चर्य :- भारत में श्रम उत्पादन जैसे :- बीड़ी पत्ता, साल बीज, महुआ आदि वनोपज तथा अनिवार्य उपयोग जैसे-रोटी, कपड़ा, दवा, पशु-चारा, ईंट, खपड़ा आदि पर भारी कर है। बीड़ी पत्ता इकट्ठा करने वाले को आधी कीमत दी जाती है। सरसों तेल पर दस रुपये लीटर, दाल पर सवा रुपए किलो टैक्स है। लकड़ी पर तीस प्रतिशत टैक्स है। (2) आश्चर्य :- अखबार, कागज, पोस्टकार्ड पर सब्सिडी है। पोस्टकार्ड की कीमत बढ़ने से गरीब मर जाएगा और अनाज, कपड़ा दवा पर टैक्स लगने पर नहीं मरेगा, यह सिद्धांत मेरी समझ के बाहर होने से मैंने 'आश्चर्य' लिखा है। (3) आश्चर्य :- भारत में साइकिल पर टैक्स लिया जाता है जो कि प्रति साइकिल करीब तीन सौ रुपए तक है, किन्तु इसके खिलाफ अब तक कोई

आंदोलन नहीं हुआ और (4) आश्चर्य :- भारत के राजनेताओं या समाजशास्त्रियों को यह पता ही नहीं है कि- भारत में साइकिल, रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, कृषि उत्पादन तथा अपने खेत में पैदा किये गए पेड़, बांस पर भारी कर लगता है।

7164. भारतीय तेल उत्पादक कंपनियाँ सिर्फ आन्तरिक घाटा ही पूरा कर सकती हैं, किन्तु विदेशी मुद्रा पर ये कंपनियाँ कोई प्रभाव नहीं डाल सकतीं। इसका सिर्फ एक ही समाधान है कि या तो खपत कम करके आयात कम हो या विदेशी मूल्य कम हो।

7165. उत्पादन के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो दो प्रकार की है :- 1. जैविक, 2. कृत्रिम। उत्पादन में ये दोनों एक-दूसरे की सहायक न होकर प्रतिस्पर्धी हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि एक ऊर्जा की मांग और पूर्ति दूसरे की मांग और पूर्ति पर प्रभाव डालती है। जो व्यक्ति जितना अधिक सस्ती ऊर्जा तथा उच्च तकनीक का उपयोग करेगा, वह उतना ही अधिक आगे बढ़ता जायेगा।

7166. कृत्रिम ऊर्जा पर भारी कर लगाकर उपभोक्ता वस्तुओं पर लगने वाले सभी कर समाप्त करने से आर्थिक असमानता घटना निश्चित है। आर्थिक असमानता को कम करने का सिर्फ एक ही सिद्धान्त है, आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों की आय बढ़े, व्यय घटे और सम्पन्न लोगों की आय घटे, व्यय बढ़े।

7167. कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य-वृद्धि से शहरी जनजीवन महंगा हो जायेगा। लघु उद्योगों के पनपने से गांवों में रोजगार के अवसर बहुत बढ़ेंगे। इससे शहरों की ओर से गांवों की ओर पलायन होना शुरू हो जायेगा।

7168. भारत की सभी आर्थिक समस्याओं का प्रमुख कारण है डीजल, पेट्रोल, मिट्टी तेल, गैस आदि की आयात दर में वृद्धि। खाड़ी देश सब कुछ सहन कर सकते हैं, किन्तु डीजल, पेट्रोल, गैस का बिजली में बदलना बरदाश्त नहीं कर सकते, क्योंकि एकमात्र यही तो उनकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

7169. सरकार को जितना धन चाहिए उसमें मिट्टी तेल, डीजल-पेट्रोल, बिजली आदि अपना अंशदान कम करते हैं तो सरकार दाल, खाद्य तेल, ईंट, कपड़ा, साइकिल जैसी अन्य वस्तुओं पर टैक्स लगाकर घाटा पूरा करती है।

7170. सस्ती कृत्रिम ऊर्जा के कारण हम ऐसी तकनीक विकसित करने पर अधिक ध्यान नहीं दे रहे हैं, जो कम ऊर्जा की खपत करें। यदि ऊर्जा महंगी होगी, तो स्वाभाविक रूप से कम ऊर्जा खपत से अधिक उत्पादन की तकनीक का विकास होगा। ऐसी तकनीक हमें कृत्रिम ऊर्जा पर निर्भरता भी कम करेगी और उसके दुष्प्रभाव भी।

7171. सस्ती कृत्रिम ऊर्जा उस समय आयात से निर्भरता कम करने के लिए आवश्यक थी, किन्तु अब वर्तमान समय में वही सस्ती कृत्रिम ऊर्जा शोषण का हथियार बन गई है, यह ठीक नहीं है।

7172. कृत्रिम ऊर्जा के महंगा होने से उसकी खपत घटती है, श्रम की मांग और मूल्य बढ़ता है, ग्रामीण उद्योग उन्नति करते हैं, पर्यावरण प्रदूषण घटता है। फिर भी भारत में कोई सरकार इतनी हिम्मत नहीं कर पा रही है कि वह सीधे-सीधे डीजल पेट्रोल का मूल्य ढाई गुना करके भारत की सभी आर्थिक परेशानियों से मुक्ति पा जाये। मैं आश्वस्त हूं कि यदि कृत्रिम ऊर्जा के मूल्य ढ़ाई गुना कर दिया जाय

तो भारत को विदेशों से कोई तेल कभी आयात करना ही नहीं पड़ेगा।

7173. मेरा प्रस्ताव यह है- कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य पांच वर्ष तक प्रतिवर्ष पच्चीस प्रतिशत बढ़ा दिया जाये। पांच वर्ष में इसका मूल्य वर्तमान का ढाई गुना हो जायेगा। प्रतिवर्ष दस प्रतिशत गरीब आबादी को दो हजार रुपया प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह ऊर्जा भत्ता दिया जाये। यह भत्ता पांच वर्ष में आधी आबादी को मिलने लगेगा। पांच वर्ष में क्रमशः बीस प्रतिशत सब्सीडी तथा टैक्स भी कम करते जायें।

7174. मैं जानता हूं कि भारत की तैंतीस प्रतिशत गरीब आबादी पांच प्रतिशत कृत्रिम ऊर्जा का उपयोग करती है। तैंतीस प्रतिशत मध्य वर्ग पच्चीस प्रतिशत तथा तैंतीस प्रतिशत उच्चवर्ग सत्तर प्रतिशत कृत्रिम ऊर्जा की खपत करता है। फिर भी किसी षड्यंत्र के अन्तर्गत कृषि उत्पादन पर कर लगाकर कृत्रिम ऊर्जा को सस्ता रखा जाता है।

7175. बुद्धिजीवी उस समय जितनी कृत्रिम ऊर्जा का उपयोग करते थे, आज वे अपने दैनिक जीवन में कृत्रिम ऊर्जा का कई गुना अधिक उपयोग कर रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि कोई मीडियम क्लास का व्यक्ति महंगाई से पीड़ित होने की बात करता है, तो वास्तव में वह गाली सुनने से कम अपराध नहीं करता। तैंतीस प्रतिशत आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वर्ग तो इतना अधिक ऊपर चला गया कि वह अपनी बढ़ी हुई 64 गुनी क्रय शक्ति के आधार पर कृत्रिम ऊर्जा का खुला दुरूपयोग करता है।

7176. बुद्धिजीवियों एवं पूंजीपतियों को सस्ता श्रम चाहिए और

राजनेताओं को आसान वोट। सस्ती कृत्रिम ऊर्जा दोनों को संतुष्ट रखती है।

7177. भारत में कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य-वृद्धि उचित है। यदि इनका मूल्य तेजी से बढ़ा दिया जाए तो डीजल-पेट्रोल, गैस का आयात बहुत घट सकता है, क्योंकि एक ओर तो इनकी खपत घटेगी दूसरी ओर सौर ऊर्जा, गोबर गैस, पवन ऊर्जा, बिजली या अन्य स्रोत बहुत बढ़ जायेंगे, इससे पर्यावरण प्रदूषण भी कम होगा।

7178. बुद्धिजीवियों, पूंजीपतियों, राजनेताओं तथा मीडिया वालों ने आम नागरिकों को विश्वास करा दिया है कि कृत्रिम ऊर्जा मूल्य-वृद्धि गरीबों के लिए अहितकर है।

7189. आमतौर पर कृत्रिम ऊर्जा मूल्य-वृद्धि की चर्चा में निम्न प्रश्न उठते हैं, जिनका तर्कसंगत उत्तर देना आवश्यक है। 1. कृत्रिम ऊर्जा पर भारी मूल्य-वृद्धि होने से बेरोजगारी बढ़ेगी, क्योंकि उद्योगों पर बुरा असर होगा। इस तरह करने से तो आवागमन बहुत महंगा हो जायेगा। किसानों का उत्पादन बाजार तक नहीं पहुँच सकेगा। देश में उत्पादन घट जायेगा। उत्पादन घटने से अर्थव्यवस्था को क्षति होगी। आम लोगों का विकास रुक जायेगा। आप वर्तमान भारत को बैलगाड़ी या लालटेन युग में ले जाने का क्यों प्रयास कर रहे हैं। किसानों की उत्पादन लागत बढ़ जायेगी इससे किसानों को भारी क्षति होगी। बाजार में बिकने वाली हर वस्तु का मूल्य बढ़ जायेगा। इससे गरीब उपभोक्ता बहुत प्रभावित होंगे। ये सभी तर्क बुद्धिजीवी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए समाज के सामने हमेशा प्रस्तुत करते रहते हैं, जबकि उपरोक्त किसी भी तर्क में कोई दम नहीं है।

7180. वातावरण को गंदा करते हैं शहर वाले, स्कूटर वाले या ट्रक वाले और वातावरण को साफ करने के लिए अपनी जमीन पर पैदा किये गये पेड़ों पर भी टैक्स देना पड़ता है गरीब ग्रामीणों को। लगता है कि निम्न वर्ग की कीमत पर मध्यम वर्ग की सुविधाओं का ध्यान रखा जाता है। इस मुद्दे पर भी चर्चा होनी चाहिए।

720 अर्थव्यवस्था

7200. जब तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी, तब तक किसान आत्महत्या नहीं रुकेगी। ग्रामीण अर्थ व्यवस्था तब तक मजबूत नहीं होगी, जब तक ग्रामीण और कृषि उत्पादन पर टैक्स लगाकर शहरों पर खर्च करने पर रोक नहीं लगेगी और जब तक कृत्रिम ऊर्जा को श्रम प्रतिस्पर्धी घोषित नहीं किया जायेगा।

7201. दुनिया में वर्तमान समय में दो प्रकार की अर्थ व्यवस्थाएं प्रचलित हैं :- 1. राज्य संरक्षित, 2. राज्य नियंत्रित। राज्य संरक्षित अर्थव्यवस्था को पूंजीवाद तथा राज्य नियंत्रित को साम्यवाद कहते हैं। प्राचीन समय में अर्थव्यवस्था पूरी तरह राज्य मुक्त हुआ करती थी। राजा राज्य व्यवस्था के लिए एक निश्चित मात्रा में कर लिया करते थे शेष अर्थव्यवस्था पूरी तरह स्वतंत्र होती थी। ऐसी अर्थव्यवस्था में कोई विकृति आती थी, तो उसका समाधान समाज करता था, राज्य नहीं।

7202. जब दुनिया में लोकतंत्र आया और जन-कल्याणकारी राज्य की अवधारणा बनी, तो राज्य ने जन-कल्याण के नाम पर अर्थ-व्यवस्था पर नियंत्रण करने का अधिकार ले लिया और जब साम्यवाद आया, तो उसने अर्थ-व्यवस्था की स्वतंत्रता को पूरी तरह समाप्त कर दिया।

7203. विकसित देशों की मुख्य समस्या यह है कि यदि अति पिछड़े देशों के लोगों ने उनके निर्मित माल का आयात कम कर दिया तो विकसित देशों में लोगों पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। उत्पादन कम करना होगा, नौकरियाँ जायेगी, वेतन घटेंगे और कुल मिलाकर जीवन स्तर कमजोर होगा। इसलिए अपना निर्यात बढ़ाकर रखने के लिए बहुत प्रयत्न करते रहते हैं।

7204. पश्चिम की अर्थव्यवस्था भीमकाय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चंगुल में है। भारत की अर्थव्यवस्था शासकीय चंगुल में है। हम पहले अपनी अर्थव्यवस्था को सरकारी चंगुल से मुक्त कर लें, तब हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की समीक्षा करें। सरकारीकरण से बाजारीकरण कई गुना कम घातक है। बाजारीकरण विरोधी किसी न किसी रूप में सरकारीकरण के एजेंट होते हैं। वे विकल्प देते नहीं, उनका तो बस एक ही काम होता है कि घुमा-फिराकर स्वतंत्र बाजार व्यवस्था की आलोचना करना।

7205. भारत की सम्पूर्ण अर्थ-व्यवस्था के संचालन में निम्न वर्ग की भूमिका शून्यवत् तथा मध्य उच्च वर्ग की निर्णायक है। बुद्धिजीवी, शहरी सम्पन्न और बड़े किसान मिलकर संगठित रूप से आर्थिक मामलों में गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी एवं छोटे किसान के विरुद्ध षड्यंत्र करते रहते हैं।

7206. मेरे विचार में सच बात तो यह है कि सोनिया गांधी ने बीच में ही राहुल को प्रधानमंत्री बनाने का गुप्त प्रयास किया और उसके लिए अर्थव्यवस्था को लगातार खराब किया कि इससे दुःखी होकर मनमोहन सिंह त्याग पत्र दे दें। लेकिन मनमोहन सिंह ने सबकुछ

समझते हुए भी त्याग-पत्र देने की इच्छा व्यक्त नहीं की, जब तक सोनिया जी प्रत्यक्ष न कह दें। इस आपसी खींचतान में भारत की आर्थिक व्यवस्था का बंटाधार हो गया।

7207. समाज में शान्ति बनी रहने में समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भौतिक सुख का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। भौतिक सुख का आंकलन होता है 'आर्थिक स्थिति' से और आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन होता है अर्थ से। अतः समाज में सुख और शान्ति बने रहने में अर्थव्यवस्था का ठीक होना बहुत महत्वपूर्ण होता है।

7208. दस राजनैतिक नाटकों में से तीन प्रकार के नाटक अर्थव्यवस्था से संबंध रखते हैं :- 1. समाज के गरीब और अमीर वर्ग के बीच इस प्रकार द्वेष भावना का विस्तार करना कि वह वर्ग-विद्वेष बनकर उसकी अंतिम परिणति वर्ग-संघर्ष की हो। 2. प्रशासन बिल्लियों के बीच बंदर की भूमिका में रहे अर्थात्, (क) रोटी कभी बराबर न होने दें, (ख) छोटी रोटी वाली बिल्ली को कभी संतुष्ट न होने दें। उसके मन में असंतोष और ईर्ष्या की ज्वाला निरंतर जलती रहे और (ग) प्रशासन आर्थिक समानता में निरंतर सक्रिय दिखे। 3. आर्थिक समस्याओं का सामाजिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक समस्याओं का आर्थिक, प्रशासनिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का आर्थिक, सामाजिक समाधान खोजना।

7209. भारत की सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था पर बुद्धिजीवियों तथा पूंजीपतियों का ऐसा शिकंजा कसा हुआ है कि हर नीति प्रजातांत्रिक तरीके से श्रम-शोषण और आर्थिक असमानता बढ़ाने में सहायक ही होती है। यहां तक कि आर्थिक असमानता और श्रम-शोषण के

विरुद्ध दिन-रात आवाज उठाने वाले वामपंथी भी अप्रत्यक्ष रूप से बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों के हितों के पक्ष की ही नीतियों का समर्थन करते हैं।

7210. यदि आयात अधिक होगा और निर्यात कम तो अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। सरकार राजनैतिक लाभ के लिए कभी नहीं चाहती है कि आयात-निर्यात का संतुलन हो। क्योंकि यदि आयात कम होगा तो सुविधाएं घटेंगी, झूठे वादे और यथार्थ के बीच अंतर बढ़ जायेगा। इसका राजनैतिक दुष्प्रभाव स्वाभाविक है।

7211. लम्बे समय से दुनिया की अर्थ व्यवस्था श्रम-शोषण के आधार पर अपनी योजनाएं बनाती रही है। वर्तमान समय में राज्य ने संवैधानिक तरीके से संपूर्ण अर्थ व्यवस्था पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया है।

7212. आदर्श स्थिति तो यह होगी कि राज्य पूरी तरह अर्थ व्यवस्था से बाहर हो जाये और अपने सुरक्षा और न्याय तक के लिए आवश्यक खर्च की व्यवस्था समाज से करा ले।

7213. समाजवादी और साम्यवादी अर्थव्यवस्था ने सरकारीकरण को मजबूत किया तो पूंजीवाद ने सरकारीकरण को तो कमजोर किया किन्तु आर्थिक असमानता को मजबूत किया। आदर्श स्थिति में अर्थव्यवस्था न तो पूरी तरह सरकार के अधीन होनी चाहिए, न ही पूरी तरह बाजार के अधीन।

7214. भारत की अर्थव्यवस्था गरीबों, ग्रामीणों, श्रमजीवियों के विरुद्ध पूंजीपतियों, बुद्धिजीवियों तथा शहरी नागरिकों का मिला-जुला षड्यंत्र है। गरीबों, ग्रामीणों, श्रमजीवियों को धोखा देने के लिए

बीच के लोगों का उपयोग किया जाता है। इसका एक सिद्धांत है कि जो वस्तु अमीर लोग ज्यादा उपयोग करें, उस पर प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष छूट दी जाये, दूसरी ओर जो वस्तु गरीब लोग ज्यादा उपयोग करें, उन पर अप्र्रत्यक्ष कर और प्रत्यक्ष सब्सिडी दी जाये।

7215. सरकार नियंत्रित अर्थव्यवस्था कितनी घातक है, इसका प्रमाण यह है कि जिसके पास सेना, पुलिस, न्याय है, उसी इकाई को अर्थव्यवस्था भी सौंप देना कितना उचित है? अच्छा तो यह होता कि स्वतंत्र बाजार पर सामाजिक अंकुश लगा दें तथा स्वतंत्र अर्थपालिका की माँग करके तानाशाह बनती जा रही राज्य-व्यवस्था के पंख कतरने के कार्य की आवाज उठे। बाजार की स्वतंत्रता में सरकार का कोई भी हस्तक्षेप घातक होता है।

7216. दुनिया में आर्थिक दृष्टि से दो ही प्रणाली प्रचलित रही है :- 1. पूंजीवाद और 2. साम्यवाद। इस्लाम की पहचान धार्मिक आधार पर है, आर्थिक आधार पर नहीं। भारत लम्बे समय से गुलाम रहने के कारण अपनी कोई आर्थिक पहचान नहीं बना सका। पश्चिम के अधिकांश देश पूंजीवाद के समर्थक हैं, तो वामपंथी अधिकांश देश साम्यवादी अर्थव्यवस्था के। यह अलग बात है कि पिछले कुछ वर्षों से साम्यवादी देश भी धीरे-धीरे पूंजीवाद की तरफ सरक रहे हैं।

7217. आदर्श अर्थव्यवस्था यह है कि सभी प्रकार के उपयोग की वस्तुओं पर प्राथमिकता के आधार पर सूची बनाकर नीचे से तब तक कर लगाया जाये, जब तक सरकार का बजट पूरा न हो जाये।

7218. इस समय सम्पूर्ण मानवजाति के लिए खतरे का आधार है 'मानव स्वभाव में तापवृद्धि'। यह तापवृद्धि अपनी सुरक्षा के नाम पर तर्क प्रस्तुत करती है और धीरे-धीरे शक्ति संग्रहण की दिशा में ले जाती है, जिसका परिणाम होता है 'हिंसा में विस्तार'।

7219. व्यक्ति अपनी बौद्धिक या श्रम-शक्ति से प्राप्त लाभ को धन के अतिरिक्त किसी अन्य स्वरूप से न संचित कर सकता है, न रूपांतरित। धन ही उसका एकमात्र संग्रह का आधार है, अन्यथा व्यक्ति का विशेष प्रयत्न स्वतः नष्ट हो जायेगा।

722 मंदी

7220. हवा-हवाई विकास की पोल खुलने को ही आर्थिक मंदी कहा जाता है। इस तरह वर्तमान आर्थिक मंदी की परिभाषा है सम्पन्नों की क्रय शक्ति के नकली और अभूतपूर्व विकास का एकाएक कम हो जाना। अभी दुनिया के सम्पन्न देशों तथा व्यक्तियों के बीच ऐसी ही आर्थिक मंदी की संभावना बनी हुई है।

7221. आर्थिक मंदी से सर्वाधिक चिन्तित तो विकसित पूंजीवादी देश ही हैं, क्योंकि उन्हीं का निर्यात प्रभावित हो सकता है। दुनिया में आयी व्यापक मंदी का भारत की सरकार और जनता को स्वागत करना चाहिए।

7222. आर्थिक मंदी का अर्थ आम नागरिकों की इच्छा शक्ति में कमी है, न कि वस्तुओं की मांग में कमी। यदि किसी वस्तु का मूल्य अपेक्षा से बहुत अधिक बढ़ जाए तथा आम लोगों को भविष्य में उसका मूल्य कम होने की संभावना हो, तो वस्तु की मांग भी कम हो जाती है और मूल्य भी।

7223. जब भूमि, भवन के मूल्य कम हो रहे हों, तब खरीदने वालों को सस्ते ब्याज पर कर्ज दिया जाये और जब भूमि, भवन महंगे हों, तब अधिक ब्याज पर कर्ज दिया जाये। ऐसी सरकारी नीतियाँ बिल्कुल स्पष्ट करती हैं कि सरकार को श्रमजीवी, गरीब, ग्रामीण की कोई चिन्ता नहीं।

723 आर्थिक

7230. आदर्श समाज व्यवस्था में समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और श्रमशास्त्र का समन्वय होता है। यदि किसी एक की अनदेखी कर दी जाए, तो अव्यवस्था होनी निश्चित है। वर्तमान दुनिया में और विशेषकर भारत में श्रमशास्त्र की पूरी अनदेखी हुई।

7231. अर्थशास्त्र में तीन महत्वपूर्ण कारक माने जाते हैं :- (1) श्रम, (2) बुद्धि और (3) धन। यदि व्यवस्था से अर्थ व्यवस्था कुप्रबन्धन में चली जाये तो आर्थिक असमानता और श्रम-शोषण में लगातार वृद्धि स्वाभाविक हो जाया करती है, क्योंकि श्रम की आय का एक ही आधार है, जबकि बुद्धि के दो और धन के तीन।

7232. पश्चिम और भारत की आर्थिक स्थिति अलग-अलग है। भारत पश्चिम की नकल नहीं कर सकता। दूसरी बात यह है कि पश्चिम का बिजली उत्पादन परमाणु संयंत्र से सौर ऊर्जा की ओर बदल रहा है, जबकि भारत का कोयला, डीजल, पेट्रोल ऊर्जा संयंत्र की दिशा में।

7233. नेहरू ने अपने आर्थिक मॉडल के सहारे समाजवाद लाने और गरीबी हटाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन वह कामयाब नहीं हुए। मनमोहन सिंह ने पूंजीवाद के सहारे गरीबी हटाने की कोशिश

की, लेकिन उन्हें करने नहीं दिया गया। दोनों असफलताओं से अनुभव लेकर नरेंद्र मोदी अपना आर्थिक मॉडल आगे बढ़ा रहे हैं।

7234. दुनिया में सभी बुद्धिजीवी किसी न किसी तरीके से श्रम-शोषण की नीतियां बनाते रहते हैं। भारत में जन्म के आधार पर वर्ण और जाति व्यवस्था तथा पश्चिम में पूंजीवाद को श्रम-शोषण का मुख्य आधार बनाया गया। वर्तमान भारत में श्रम-शोषण के लिए चार प्रकार के हथियार प्रयोग में लाए जाते हैं :- 1. जातीय आरक्षण, 2. शिक्षित बेरोजगारी, 3. कृत्रिम ऊर्जा मूल्य नियंत्रण और 4. न्यूनतम श्रम-मूल्य वृद्धि की सरकारी घोषणाएं। बुद्धिजीवियों ने बहुत चालाकी से प्रत्यक्ष सहायता तथा श्रम-शोषण के सिद्धांतों को अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बना दिया।

7235. प्राचीन समय में भारत विचारों का भी निर्यात करता था तथा आर्थिक दृष्टि से भी सम्पन्न था। पिछले हजार वर्षों से भारत सभी मामलां में पीछे चला गया। अब भारत आर्थिक मामलों में तो धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, किन्तु वैचारिक धरातल पर अब भी कंगाल ही है। विचारकों को इस विषय पर गंभीरता से सोचना चाहिए।

724 अर्थपालिका

7240. लोकतंत्र में जिस तरह स्वतंत्र न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका है, उसी तरह स्वतंत्र अर्थपालिका भी होनी चाहिए। जिस व्यवस्था के पास सेना, पुलिस, न्याय के असीम अधिकार हैं, उसे ही अर्थ के भी असीम अधिकार देना उचित नहीं है।

7241. अर्थपालिका के स्वतंत्र न होने के कारण भारत में बहुत दुरुपयोग हुआ है। तंत्र से जुड़ी इकाइयां किसी भी सीमा तक 'कर' लगा

सकती हैं और कहीं भी स्वेच्छा से खर्च कर सकती हैं। हमारी राजनैतिक व्यवस्था ने स्वतंत्र बाजार व्यवस्था को गुलाम बना लिया, अपना वेतन-भत्ता मनमाना बढ़ा लिया, अपने चारण-भाटों को मनमाने पुरस्कार दिए तथा सम्पत्ति के मौलिक अधिकार को भी समाप्त घोषित कर दिया।

7242. पूरी दुनिया में पश्चिमी जगत और विशेषकर यहूदी तो अर्थव्यवस्था को ही सर्वोच्च प्राथमिकता मानते हैं। इन देशों का पूंजीवाद सारी दुनिया को प्रभावित कर रहा है। दूसरी ओर भारत है, जहां अर्थव्यवस्था पूरी तरह राज्य की गुलाम है।

7243. स्वतंत्र अर्थपालिका का अर्थ है- अर्थपालिका को न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका के समान स्वतंत्रता देना। वर्तमान संसदीय लोकतंत्र की अर्थ-व्यवस्था में मौलिक सुधार के लिए स्वतंत्र अर्थपालिका ही एकमात्र मार्ग है। यदि हमने विधायिका के आर्थिक मामलों में निर्णय के अधिकारों पर अंकुश नहीं लगाया, तो वे सात प्रतिशत बजट गांवों को देकर कई प्रकार के नये-नये टैक्स थोप देंगे, जिन्हें रोकना हमारे अधिकार में नहीं होगा। अर्थपालिका स्वतंत्र होने से राज्य की टैक्स लगाने की स्वतंत्रता सीमित हो जायेगी।

7244. अर्थ और राज्यसत्ता का इकट्ठा होना सबसे अधिक घातक है। अर्थ की शक्ति नियंत्रित करने के बीसवीं सदी में कई प्रयास हुए। सबसे बड़ा प्रयास साम्यवाद के रूप में हुआ। उसने सारी अर्थ व्यवस्था से समाज को बाहर कर दिया। प्रारंभ में साम्यवाद बढ़ा, किन्तु धीरे-धीरे नीचे जाने लगा, क्योंकि खुली प्रतिस्पर्धा ही विकास का

महत्वपूर्ण आधार होती है और प्रतिस्पर्धा से अर्जित लाभ को धन के अतिरिक्त इकट्ठा करना संभव नहीं।

725 व्यवसाय

7250. व्यवसाय के माध्यम से तीन प्रकार के लोग आगे बढ़ते हैं :- 1. जो सेवा के उद्देश्य से बिना लाभ-हानि के लागत मूल्य पर व्यापार करते हैं, 2. जो उचित लाभ लेकर तथा नैतिकता के आधार पर व्यापार करते हैं और 3. जो मिलावट और कमतौल के माध्यम से अनैतिक व्यापार करते हैं। पहले और तीसरे प्रकार के लोग बहुत कम होते हैं। अधिकांश व्यापारी दूसरे नम्बर का व्यापार करते हैं।

726 बजट

7260. आदर्श बजट में पांच लक्ष्य शामिल होना चाहिए :- 1. अकेन्द्रीयकरण, 2. अपराध नियंत्रण, 3. आर्थिक असमानता में कमी, 4. श्रम की मांग और मूल्य वृद्धि तथा 5. समान नागरिक संहिता।

7261. सरकारों का बजट दो प्रकार से बनता है :- 1. सब लोगों से टैक्स लिया जाये तथा गरीबों को छूट दी जाये। 2. अमीरों से टैक्स लिया जाये तथा सबको छूट दी जाये। विशेष परिस्थिति में ही अमीरों से टैक्स लेकर गरीबों को छूट दी जाती है, किन्तु सामान्यतया ऐसा नहीं होता।

7262. उपभोक्ता वस्तुए तीन प्रकार की होती हैं :- 1. अनिवार्य आवश्यकता की, 2. सुविधा की और 3. विलासिता की। आदर्श बजट में पहले प्रकार की वस्तुओं को पूरी तरह कर मुक्त रखा जाता है और तीसरे प्रकार की वस्तुओं पर अधिक टैक्स लगता है। वर्तमान भारत के

बजट में पहले प्रकार की वस्तुओं पर भारी कर लगाकर सुविधा की वस्तुओं पर सब्सिडी दी जाती है।

727 मुद्रा

7270. स्वतंत्रता के समय रुपए तथा डॉलर का मूल्य बराबर था। आज बयासी रुपये के बराबर एक डॉलर है, जो मुद्रास्फीति के आंकलन के बाद चालीस पैसे के बराबर है। क्योंकि भारत का वर्तमान दो सौ पांच रुपया एक मूल रुपए के बराबर है। इस तरह स्वतंत्रता के बाद डॉलर की तुलना में रुपया मजबूत हुआ है।

7271. वस्तु विनिमय को सरल बनाने के लिए बनाए गए माध्यम को मुद्रा कहते हैं। मुद्रा का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। मुद्रा तो किसी विश्वसनीय इकाई की गारंटी तक सीमित होती है।

7272. सरकार आय-व्यय के असंतुलन को ठीक करने के लिए मुद्रा प्रसार विस्तार करती है और यही मुद्रा प्रसार मुद्रा-स्फीति कहलाता है।

7273. सरकार वस्तुओं के आदान-प्रदान पर टैक्स लगाती है, इसलिए सरकार सीधा वस्तु विनिमय रोक देती है। इस सरकार लोगों को वस्तु विनिमय के लिए सरकारी मुद्रा का प्रयोग अनिवार्य कर देती है। यदि वस्तु विनिमय स्वतंत्र और कर मुक्त कर दिया जाए तो मुद्रा का महत्व कम हो जाएगा और सरकारी मुद्रा के साथ निजी मुद्रा भी प्रचलित हो सकती है।

7274. नोट (मुद्रा) वस्तु विनिमय का एक कृत्रिम माध्यम मात्र है। पुराने जमाने में माध्यम के रुप में सोना और चांदी का उपयोग किया जाता था।

7275. अर्थशास्त्र का सिद्धान्त है कि किसी वस्तु का मूल्य बढ़ता है, तो

उसकी मांग घटती है और जब मांग घटती है तो उसका बाजार मूल्य घटता है।

730 आर्थिक विषमता

7300. दुनिया में कोई भी दो व्यक्ति कभी पूरी तरह समान नहीं होते। असमानता प्राकृतिक है। भारत की सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था पर बुद्धिजीवियों तथा पूंजीपतियों का ऐसा शिकंजा कसा हुआ है कि हर नीति प्रजातांत्रिक तरीके से श्रम-शोषण और आर्थिक असमानता बढ़ाने में सहायक ही होती है। यहां तक कि आर्थिक असमानता और श्रम-शोषण के विरुद्ध दिन-रात आवाज उठाने वाले वामपंथी भी अप्रत्यक्ष रूप से बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों के हितों के पक्ष की ही नीतियों का समर्थन करते हैं, भले ही वे यह कार्य उन्हें गाली देकर ही क्यों न करें।

7301. वर्तमान विश्व व्यवस्था में अपनी उपलब्धियों के संग्रह का प्रमुख माध्यम सम्पत्ति माना गया है। अर्थ, सम्पत्ति का रूपान्तरण होता है। आर्थिक असमानता प्राकृतिक असमानता का स्वाभाविक रूपान्तरण है।

7302. वर्तमान समय में गरीब और अमीर के बीच के अन्तर की कल्पना भावनात्मक मान्यता है, समस्या नहीं।

7303. वर्तमान विश्व में आर्थिक विषमता निरन्तर बढ़ रही है। भारत में आर्थिक विषमता वृद्धि की गति अधिक तेज है।

7304. वर्तमान समय में गरीब और अमीर के बीच सम्पत्ति के अंतर की कल्पना भावनात्मक है, वैचारिक नहीं। कल्पना करना भी कठिन दिखता है।

7305. चार प्रकार के लोग आर्थिक अन्याय के शिकार होते हैं :- 1. श्रम प्रधान, 2. ग्रामीण, 3. मूल उत्पादक अर्थात् किसान और 4. गरीब। आर्थिक असमानता श्रम-शोषण की सुनियोजित बुद्धिजीवी-वामपंथी योजना के अन्तर्गत सामाजिक न्याय के नाम पर वर्ग संघर्ष लगातार बढ़ाने की प्रक्रिया जारी है।

7306. प्रत्येक राजनैतिक दल यह पूरा-पूरा प्रयत्न करता है कि आर्थिक असमानता वृद्धि के उसके प्रयास पूरी तरह अप्रत्यक्ष भी हों और प्रजातांत्रिक भी। इसके लिए जो वस्तुएं गरीब लोग अधिक और अमीर लोग कम उपयोग करते हैं, उन वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर और प्रत्यक्ष सब्सिडी तथा जो वस्तुएं अमीर लोग ज्यादा और गरीब लोग कम उपयोग करें उनपर प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष सब्सिडी देते हैं।

7307. किसी भी योजना के अच्छे परिणाम तभी प्राप्त होते हैं, जब योजना सैद्धांतिक रूप से भी ठीक हो और व्यावहारिक रूप से भी।

7308. आर्थिक विषमता और राजनैतिक विषमता में से यदि एक चुनना हो तो गांधी राजनैतिक विषमता को सर्वाधिक खतरनाक मानते थे। आर्थिक विषमता की रोज-रोज चर्चा करने वाले इस बात का उत्तर क्यों नहीं देते कि राजनैतिक विषमता की सीमा रेखा क्यों नहीं हो? भारत में राजनैतिक व्यवस्था को सामाजिक पारिवारिक व्यवस्था में कटौती करने का असीमित अधिकार क्यों उचित हैं?

7309. स्वतंत्रता के तत्काल बाद ही समाजवाद के नाम पर आर्थिक विषमता दूर करने के गंभीर प्रयत्न शुरू हुए, जो अब तक जारी है, फिर भी आर्थिक विषमता लगातार बढ़ती रही। भ्रष्ट व्यवस्था

समाजवाद नहीं ला सकती। इसके विपरीत भ्रष्टाचार आर्थिक विषमता दूर करने में सबसे बड़ी बाधा है।

7310. खेती भी इन पूंजीपतियों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं की कुटिल नीतियों की शिकार है। इन तीनों का रैकेट तीन काम एक साथ करता है।

1. कृषि उत्पादों को सस्ता रखा जाये।
2. कृत्रिम ऊर्जा को सस्ता रखा जाये।
3. श्रम-मूल्य को कम रखा जाये।

7311. बुद्धिजीवी, पूंजीपति, राजनेता लगातार मांग करते रहते हैं कि शिक्षा-स्वास्थ्य का बजट बढ़ाओ, जिससे बुद्धि का मूल्य बढ़ता रहे, उसके बच्चे अच्छी नौकरी करते रहें और घर में सस्ता श्रम खरीदते रहें।

7312. आर्थिक असमानता बढ़ती जा रही है, श्रम की मांग घट रही है और शिक्षा का महत्व बढ़ रहा है। शिक्षा पर बजट बढ़ाने की मांग रोज उठती है, किन्तु गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी और किसान पर टैक्स हटाने की पहल नहीं हो रही।

7313. स्वाभाविक है कि आर्थिक विषमता पर मौखिक चोट हमारे नेताओं का सत्ता संघर्ष का मार्ग खोलती है और ग्रामसभा सशक्तिकरण सत्ता संघर्ष का मार्ग बन्द करती है।

7314. आर्थिक विषमता को आर्थिक तरीकों से रोकने की बुद्धिमानी की जगह कानूनी तरीके से रोकने की जिद् ने काले धन की समानान्तर अर्थ व्यवस्था खड़ी कर दी है।

7315. सच बात यह है कि आर्थिक विषमता का इस तरह बढ़ना खतरे की

घंटी है। श्रम और बुद्धि के बीच दूरी बढ़ती जा रही है। श्रम-मूल्य को बढ़ने से रोका जा रहा है। मध्यम वर्ग ने अपनी सुविधाए बढ़ाना अपना अधिकार मान लिया है। यही कारण है कि वह निम्न वर्ग को हमेशा मजबूर बनाकर रखना चाहता है।

7316. समाजवादी और साम्यवादियों की सम्पूर्ण राजनीति वर्ग-विद्वेष पर टिकी है, जिसका मुख्य आधार आर्थिक है। यदि आर्थिक विषमता घट जाये तो इन दोनों का राजनैतिक आधार ही समाप्त हो जायेगा। इसलिए दोनों ही आर्थिक समस्याओं के समाधान में रोड़े अटकाते रहते हैं।

7317. आर्थिक असमानता में कमी तथा श्रम-मूल्य वृद्धि ही आर्थिक समस्याओं का समाधान है। इसके लिए आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों की आय बढ़े, व्यय घटे और सम्पन्न लोगों की आय घटे, व्यय बढ़े। ये चारों काम सिर्फ एक ही उपाय से सिद्ध हो सकते हैं वह है कृत्रिम ऊर्जा पर भारी कर लगाकर सभी कर हटा दें।

7318. आर्थिक विषमता योजनाबद्ध ढंग से बढ़ायी गयी है। बेरोजगारी भत्ता, वृद्धावस्था पेंशन योजना, विधवा-विधुर पेंशन योजना, काशीराम, राम मनोहर लोहिया, नेहरू जी, गांधी जी, पं0 दीनदयाल आदि के नाम पर शुरू की गयी भोजन, आवास इत्यादि की निःशुल्क योजनाओं ने नागरिकां को निठल्ला, अक्षम एवं मक्कार बनाया है।

7319. आर्थिक असमानता को नियंत्रित करने के नाम पर अधिकारों की असीमित असमानता गुलाम बनाने का षड्यंत्र है।

7320. दीया और तूफान के संघर्ष में हमें तूफान के सामने निराश होकर

बुझ जाने की अपेक्षा किसी तरह बचने का प्रयास करने की जरूरत है। आज की पहली आवश्यकता यह है कि तूफान के सामने दीपक की लौ को कैसे मजबूत करें, अर्थात् हम स्वयं दीपक बने या किसी जलते हुए दीपक की लौ को सशक्त करें, तभी तूफान का मुकाबला हो सकता है।

7321. आर्थिक विषमता कम करना तथा गरीबी हटाना राज्य का कर्तव्य मात्र होता है, दायित्व नहीं, जबकि आमतौर पर इस कार्य को दायित्व कहकर प्रचारित किया जाता है।

7322. हमें अन्तिम रूप से यह स्वीकार करना चाहिए कि श्रम, बुद्धि और धन के बीच समानता न तो संभव है और न ही उचित। साथ ही हमें यह भी मानना होगा कि इनके बीच बढ़ती अनियंत्रित असीमित असमानता समाज में कभी शान्ति पैदा नहीं होने देगी।

7323. स्वतंत्रता के बाद आज तक आर्थिक असमानता तेज गति से बढ़ती जा रही है। आर्थिक असमानता के परिणामस्वरुप समाज में द्वेष का भाव बढ़ रहा है। अमीर और गरीब के बीच प्रेम और सद्भाव, ईर्ष्या और द्वेष में बदल रहा है। लगातार बढ़ती जा रही आर्थिक असमानता कमजोर वर्गों में यह विश्वास पैदा कर रही है कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। कमजोर वर्गों को यह पता ही नहीं चल रहा है कि समाज और राज्य उनका सहायक है या शोषक।

7324. हमें आर्थिक असमानता दूर करने के लिए श्रम-शोषण मुक्ति के साथ तालमेल बिठाकर प्रयत्न करना होगा। आर्थिक असमानता पर नियंत्रण किये बिना समाज में अशान्ति दूर नहीं हो सकेगी तथा श्रम की मांग वृद्धि ही इसका एकमात्र समाधान है।

733 अर्थनीति

7330. श्रम-अभाव देशों की अर्थनीति भिन्न हुआ करती है और श्रम-बहुल देशों की भिन्न। श्रम-अभाव देशों में श्रम के लिए पृथक से नीति नहीं बनानी पड़ती है, क्योंकि वहां बाहर से श्रम का आयात होता है।

7331. भारत के सभी आर्थिक अन्यायों का एक मात्र समाधान है रोजगार में मानव-श्रम की मांग का बढ़ना। जब तक श्रम की मांग और महत्व नहीं बढ़ेगा, तब तक अर्थव्यवस्था का लाभ निचले स्तर तक पहुँच ही नहीं सकता।

7332. पंडित नेहरू की अर्थनीति ने देश को आत्मनिर्भर बनाया, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। किन्तु जब आत्मनिर्भर होने के बाद भी भारत ने अपनी नीतियों में संशोधन नहीं किया, तो उसके दुष्परिणाम आने लगे। यदि मनमोहन सिंह ने नेहरू की अर्थनीति में बदलाव नहीं किया होता, तो देश गुलाम हो जाता।

7333. कोई दवा बीमारी के समय खाई जाती है तो वह लाभदायक होती है, किन्तु बीमारी ठीक होने के बाद भी यदि वह दवा स्वाद के रूप में खाना जारी रखा जाए, तो उसके दुष्परिणाम भी होते हैं और वही वर्तमान में हो रहा है।

7334. किसी भी इकाई के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी अर्थव्यवस्था के सुचारु संचालन के लिए एक बजट अवश्य बनाये और उसका पालन करे। आम लोगों को आर्थिक मामलां में धोखा देने के लिए घाटे का बजट जान-बूझकर बनाया जाता है, जिससे महंगाई, मुद्रा-स्फीति और अन्य अनेक आर्थिक भ्रम फैलाने में सुविधा हो।

7335. आर्थिक नीति बनाते समय "गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी, किसान" इन चारों की मिली-जुली स्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए।

7336. यदि कोई सिद्धान्त ही मूल रूप से गलत है या गलत धारणाओं पर आधारित है, तो उस सिद्धान्त के आधार पर किये गये अर्थ-प्रबंध के निष्कर्ष तथा परिणाम भी गलत ही होंगे।

7337. यह कहना वाग्जाल है या शब्दों की जादूगरी और बाजीगरी है, जो आप महंगाई बढ़ने की बात कहते हैं। जब तक इसके साथ यह न कहा जाये कि मुद्रा-स्फीति की तुलना में लोगों की क्रय शक्ति घटी है, तब तक महंगाई बढ़ने की बात कहने का कोई औचित्य नहीं है।

7338. राज्य की गलत अर्थनीति के कारण पांच समस्याएं वर्तमान में दिख रही हैं।

1. ग्रामीण और छोटे उद्योगों का बंद होकर शहरी और बड़े उद्योगों में बदलना।
2. किसान आत्महत्या।
3. पर्यावरण का प्रदूषित होना।
4. आयात-निर्यात का असंतुलन।
5 विदेशी कर्ज का बढ़ना।

734 आर्थिक समस्याएं

7340. भारत में वर्तमान समय में छः आर्थिक समस्याएं दिखती हैं :- 1. महंगाई, 2. मुद्रा-स्फीति, 3. गरीबी, 4. शिक्षित बेरोजगारी, 5. आर्थिक असमानता और 6. श्रमिक बेरोजगारी। इनमें से प्रथम चार भावनात्मक और अस्तित्वहीन समस्याएं हैं, जो सिर्फ भ्रम मात्र हैं और शेष दो आर्थिक असमानता और श्रमिक बेरोजगारी

वास्तविक समस्या है। अस्तित्वहीन समस्याओं को समाज में जीवित रखना कुछ लोगों के संगठित प्रयत्नों का ही परिणाम है।

7341. एक ड्रम रबड़ी रखकर उसे खाने के लिए टूट पड़ने वालों के आधार पर पूरे गाँव के भूखे होने का आंकलन तैयार करने वाली व्यवस्था को यदि षड्यंत्र न कहें, तो और क्या कहें? रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, घास-भूसा, वनोपज, खाद्य तेल आदि हजारों आवश्यक उपयोग की वस्तुओं पर से कर हटाकर बिजली, डीजल, मिट्टी तेल, कोयला और पेट्रोल आदि पर कर लगाना चाहिए।

7342. आज सम्पूर्ण भारत का सम्पूर्ण उद्योग अपेक्षाकृत सम्पन्नों या बड़े उद्योगों की तरफ सिमटते-सिमटते विदेशी कंपनियों तक जा रहा है। अनेक छोटे उद्योग भारतीय बड़े उद्योगों के पास सिमट रहे हैं और ऐसे भारतीय बड़े उद्योग धीरे-धीरे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास।

7343. वर्तमान भारत में जो भी आर्थिक समस्याएं हैं, आर्थिक असमानता को छोड़कर वे सब सरकारीकरण के दुष्परिणाम हैं। यदि सरकारीकरण के स्थान पर नियंत्रित व्यवसायीकरण की नीति होती तो भारत में आर्थिक असमानता सहित गरीबी, बेरोजगारी आदि का बेहतर समाधान संभव था।

7344. व्यक्ति ग्रामीण परिवेश की अपेक्षा शहरी परिवेश में जीने के लिए भी छटपटा रहा है। शहरों की ओर निरंतर ग्रामीणों का पलायन दिख रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली की आबादी कम करने का प्रशासनिक समाधान खोजा, जबकि यह किसी भी रूप में प्रशासनिक समस्या नहीं है। यह तो शुद्ध रूप में आर्थिक समस्या है।

7345. मूल उत्पादन की अपेक्षा प्रसंस्कृत उद्योग या व्यवस्था में सक्रियता भी स्पष्ट दिख रही है। खेती के प्रति आकर्षण घट रहा है। लगातार खेती कम हो रही है। पूरी दिल्ली में मूल वस्तु उत्पादन लगभग नहीं के बराबर है। शहर के भीतर कोई खेती या खनिज उत्पादन नहीं है। फिर भी दिल्ली में रोजगार के अवसर अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इतनी अधिक है कि पूरे देश से लोग भागे चले आ रहे हैं।

7346. सम्पूर्ण भारतीय जीवन पद्धति में मानवीय ऊर्जा की खपत घट रही है और कृत्रिम ऊर्जा की खपत बढ़ रही है। जब तक श्रम की मांग और मूल्य नहीं बढ़ेगा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी, तब तक आर्थिक समस्याएं कम नहीं होंगी।

7347. भारतीय राजनीति ने प्रयत्न किया कि आर्थिक समस्याओं का आर्थिक समाधान, प्रशासनिक समस्याओं का प्रशासनिक समाधान तथा सामाजिक समस्याओं का सामाजिक समाधान किसी भी परिस्थिति में न हो। आर्थिक समस्याओं का सामाजिक प्रशासनिक, सामाजिक समस्याओं का आर्थिक प्रशासनिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का सामाजिक आर्थिक समाधान हो।

7348. आर्थिक असमानता आर्थिक समस्या है। भारतीय राजनैतिक व्यवस्था आर्थिक असमानता, कालेधन अथवा भ्रष्टाचार को प्रशासनिक तरीके से हल करना चाहती है, जबकि आतंकवाद नक्सलवाद को आर्थिक, सामाजिक तरीके से तथा दहेज, बाल विवाह, शराब, जुआ आदि को आर्थिक प्रशासनिक तरीके से हल करने की कोशिश करती है। आर्थिक समस्याओं के समाधान में यदि प्रशासनिक व्यवस्था सक्रिय होती है, तो भ्रष्टाचार के अवसर

पैदा करती है। राज्य हमेशा ऐसे समाधान की कोशिश करता है कि उक्त सामाधान से ही एक नई समस्या का जन्म हो और राज्य उक्त नई पैदा हुई समस्या के समाधान में इस तरह सक्रिय हो कि उससे एक और नई समस्या पैदा हो।

7349. समस्याओं के समाधान की शुरूआत यहीं से संभव है कि कुछ समय के लिए आर्थिक विषमता की छूट कर दी जाये, जनकल्याण के कार्यों पर खर्च न्यूनतम हो, शासन का व्यय सिर्फ आन्तरिक और बाह्य सुरक्षा पर हो। व्यय करने के बाद शेष बची संपूर्ण राशि का प्रत्येक नागरिक में समान वितरण हो।

7350. भारत की आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रशासनिक तोड़फोड़ नहीं है। ऐसी सभी समस्याओं का एक ही समाधान है कि निचले वर्ग का जीवन स्तर इतना सुधरे कि उनका दूसरे वर्ग की ओर पलायन रुके। जब तक श्रम की मांग और मूल्य नहीं बढ़ेगा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी, तब तक शहरों में शान्ति संभव नहीं है।

7351. भारत में दो आर्थिक समस्याओं :- 1. श्रम-मूल्य ह्रास और 2. आर्थिक असमानता, का केवल एक ही समाधान है कि कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि करके आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं तथा श्रम उत्पादन को पूरी तरह कर मुक्त कर देना चाहिए। कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि वामपंथी, समाजवादी तथा पूंजीपति बुद्धिजीवियों के साथ मिलकर कभी सफल नहीं होने देंगे, क्योंकि यदि श्रम का मूल्य बढ़ा, तो श्रम खरीदने वालों के लिए भारी संकट पैदा हो जायेगा तथा श्रम बेचने वाले श्रम खरीदने वालों से बार्गेनिंग करेंगे।

7352. कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि से महंगाई, शिक्षित बेरोजगारी, गरीबी, मुद्रा-स्फीति आदि अस्तित्वहीन भ्रममूलक समस्याओं का भी अपने आप समापन हो जाएगा। सबसे अच्छा तो यह होगा कि इन समस्याओं के नाम पर पनपने वाली राजनीति की दुकानदारी भी समाप्त हो जाएगी। मैं जानता हूं कि कोई भी राजनैतिक दल इस प्रस्ताव का समर्थन करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी नहीं मारेगा। किन्तु अन्य कोई समाधान भी नहीं है। इसलिए समाज को ही इसमें आगे आना होगा।

7353. आर्थिक समस्याएं कई प्रकार की होती हैं जैसे आर्थिक असमानता, महंगाई, गरीबी, भूख, अशिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, श्रम-शोषण, विदेशी कर्ज, शहरी आबादी का बढ़ना, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि। आर्थिक समस्याओं का प्रशासनिक समाधान हमेशा ही समस्याओं का विस्तार करता है, चाहे वह समस्या कोई भी हो, चाहे वह समाधान कोई भी करे। यह सम्भव ही नहीं है कि आर्थिक समस्याओं का प्रशासनिक समाधान हो। राज्य समस्याओं का प्रशासनिक समाधान खोजने का असफल प्रयास करता है। राज्य को चाहिए कि आर्थिक समस्याओं का आर्थिक तरीके से समाधान तथा सामाजिक समस्याओं का सामाजिक समाधान करे। सिर्फ प्रशासनिक समस्याओं का ही प्रशासनिक समाधान करना चाहिए। समान नागरिक संहिता भी एक अच्छा समाधान है, और भी समाधान खोजे जा सकते हैं।

736 महंगाई

7360. मुद्रा-स्फीति का अर्थ होता है नगद रुपए पर अघोषित कर। सरकार

बजट घाटा पूरा करने के लिए टैक्स न लगाकर जब मुद्रा-प्रसार का सहारा लेती है, तब मुद्रा-स्फीति होती है। मुद्रा-स्फीति का किसी वस्तु के वास्तविक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं होता और जनजीवन पर भी प्रभाव नहीं पड़ता। मुद्रा-स्फीति का प्रभाव सिर्फ ब्याज दर पर पड़ता है।

6361. महंगाई और मुद्रा-स्फीति बिल्कुल अलग-अलग होती है। महंगाई किसी वस्तु विशेष में आती है न कि सभी में। यदि सभी वस्तुओं का मूल्य बढ़े, तो वह मुद्रा-स्फीति होती है न कि महंगाई। मुद्रा यदि सोने से बदलकर चाँदी और चाँदी से बदलकर रांगा में मानने लगे, तो इसे महंगाई नहीं कह सकते। महंगाई का आंकलन आम लोगों की औसत क्रय-शक्ति और उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य की तुलना से होता है। यदि तुलनात्मक रूप से क्रय-शक्ति अधिक बढ़ती है, तब महंगाई घटी हुई मानी जाती है। स्वतंत्रता के बाद से अब तक मुद्रा अवमूल्यन अनुमानित दो सौ गुना तक हो चुका है, जबकि महंगाई आठ गुना तक कम हो गई है।

7362. जब महंगाई घटती है, तब उसी अनुपात में आम लोगों का जीवन स्तर सुधरता है। जीवन स्तर सुधरने के अनुपात में ही सोना, चाँदी, जमीन की मूल्य वृद्धि होती है। स्वतंत्रता के बाद आम लोगों की क्रय-शक्ति करीब चार गुनी बढ़ी है और आम उपभोक्ता वस्तुओं का मूल्य करीब आधा हुआ। इस तरह औसत जीवन स्तर आठ गुना ऊँचा हुआ है। जीवन स्तर ऊँचा होने के आधार पर ही सोना, चाँदी, जमीन के दाम बढ़े हैं।

7363. यदि भारत में सौ रुपए बराबर एक नया रुपया घोषित कर दें, तो

मुद्रा-स्फीति भी खत्म हो जाएगी और महंगाई का हल्ला भी खत्म हो जाएगा, किन्तु इसका जनजीवन पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

7364. महंगाई का झूठा हल्ला राजनेता, सरकारी कर्मचारी तथा सम्पन्न लोग जान-बूझकर करते रहते हैं। राजनेता सत्ता परिवर्तन के उद्देश्य से, सरकारी कर्मचारी अपना वेतन बढ़ाने के लिए तथा सम्पन्न लोग आर्थिक असमानता पर से ध्यान हटाने के लिए यह हल्ला करते हैं। किसानों का शोषण इन तीनों का संयुक्त उद्देश्य होता है। महंगाई के हल्ले का लाभ उठाने में अब तक ये सभी लोग सफल रहे हैं।

7365. सन् सैंतालीस में चाँदी का रुपया था। एक रुपया बराबर एक डॉलर था। आज चाँदी की तुलना में रुपया 0.2 पैसा के बराबर है। डॉलर की तुलना में रुपया 1.5 पैसे के बराबर है। मुद्रा-स्फीति की तुलना में रुपया आधा पैसे के बराबर है। क्या यह सम्भव है कि आपको चाँदी के रुपए के आधार पर आज वस्तुएं उपलब्ध हों। स्वतंत्रता के बाद एक मजदूर को मजदूरी के रूप में जितना अनाज देते थे, उसकी तुलना में आज आठ गुना अधिक अनाज मिलता है। देश में सोना, चाँदी, जमीन बहुत महंगी हुई है। श्रम-मूल्य तथा कर्मचारियों का वेतन कुछ महंगा हुआ है। दाल, खाद्य तेल लगभग समान हैं। अनाज, दूध, कपड़ा, कृत्रिम ऊर्जा आदि कुछ सस्ते हुए हैं। आवागमन बहुत सस्ता हुआ है और फाउन्टेन पेन, घड़ी, बिजली के सामान के मूल्य नहीं के बराबर बढ़े हैं। इन सबके बाद भी हर धूर्त महंगाई के अस्तित्व का प्रचार करता है।

7366. महंगाई रोकने का सबसे आसान तरीका यह है कि घाटे को पूरा करने के लिए अनियंत्रित छपाई रोक दी जाए। यदि घाटे का बजट

बनाने की प्रणाली रोक दी जाए, तो महंगाई और मुद्रा-स्फीति बिल्कुल नहीं रहेगी।

7367. किसी भी प्रकार की तुलना में आधार का स्थिर रहना अनिवार्य शर्त होती है। जब रुपये का मूल्य कम होता है, तो हम उसे मुद्रा-स्फीति कहते हैं, महंगाई नहीं। मुद्रा-स्फीति का प्रभाव सिर्फ नगद रुपया मात्र पर ही होता है।

7368. जब समाज के किसी वर्ग के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का मूल्य उसकी क्रय शक्ति में हुई वृद्धि से अधिक बढ़ता है, तब हम उसे महंगाई और उसका दुष्प्रभाव कह सकते हैं। जब आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य तो बढ़ जाए, किन्तु आम लोगों की क्रय शक्ति न बढ़े, तब महंगाई कही जाती है। महंगाई का कोई प्रभाव किसी पर तब तक नहीं होता जब तक उसकी क्रय शक्ति भी समान रूप से बढ़ती रहे।

7369. कुछ चीजें महंगी और कुछ सस्ती होती हैं, जिनका औसत मुद्रा-स्फीति दर होती है। महंगाई एक ऐसा शब्द है, जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व ही नहीं है। महंगाई और मुद्रा-स्फीति एक ही होते हैं, जिसका सामान्य लोगों पर कोई प्रभाव नहीं होता। रुपया देंगे नकली और दूध चाहिए असली, यह संभव नहीं।

7370. यदि सरकार आयात-निर्यात नीति का ठीक-ठीक आंकलन करने लगे तथा समाज में किसान और उपभोक्ता के लिए अलग-अलग नीतियाँ बनाना बन्द करके एक सीधी-सादी नीति बनाना शुरू कर दे, तो वस्तुओं की मूल्य वृद्धि का प्रभाव भी कम होगा और मूल्य वृद्धि भी कम होगी।

7371. कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि का मध्यम वर्ग पर थोड़ा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उसी अनुपात में उनकी आय नहीं बढ़ती और उच्च वर्ग पर सर्वाधिक प्रभाव होता है, क्योंकि उसका तो सारा का सारा ढांचा ही डीजल, पेट्रोल, बिजली, लोहा, सीमेंट आवागमन पर टिका है। यदि इनकी मूल्य वृद्धि हो, तो वह वेतनभोगी कर्मचारी, राजनेता और मीडिया को मिलाकर महंगाई का हल्ला कराने की योजना बनाता है। बिना महंगाई के महंगाई सिद्ध करने के लिए ये तीनों ही तिकड़म करते रहते हैं।

7372. शब्दों के बीज बो कर मोटी-मोटी तनख्वाहों के फसल की खेती करने वालों को क्या पता कि महंगाई के हल्ले का उत्पादन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है। वे तो सिर्फ दो-चार सम्पन्न गृहणियों का इन्टरव्यू छाप कर पूरे भारत का दुःख-दर्द समझ जाया करते हैं। किसी किसान या दूध उत्पादक की पत्नी का इन्टरव्यू लेकर क्यों नहीं देखते कि उसका दुःख-दर्द क्या है?

7373. लगातार महंगाई का झूठा हल्ला इस प्रकार जीवित रखा गया कि खेती से जुड़े उत्पादनां का मूल्य बढ़ ही न सके। खेती से जुड़े उत्पादन पर कई प्रकार के टैक्स और कानून लाद दिये गये।

7374. दिसम्बर 2010 के अंतिम दिनों में पहली बार पूर्व वित्तमंत्री और भारत के तत्कालीन गृहमंत्री पी० चिदम्बरम् ने ढके-छुपे स्वीकार किया था कि महंगाई एक अघोषित कर है। उसके बाद आज तक किसी राजनेता ने सत्य स्वीकार करने की हिम्मत नहीं दिखाई।

7375. स्वतंत्रता के बाद भारत में महंगाई लगातार घटी है। आम लोगों का जीवन स्तर सुधरा है। आर्थिक विषमता बढ़ी है। किन्तु एक षड्यंत्र

के अन्तर्गत महंगाई के विरुद्ध काफी हो-हल्ला किया जाता है। मध्य वर्ग महंगाई के खिलाफ आवाज उठाता है, विपक्ष उसका समर्थन करता है और सत्ता उसकी रोकथाम का आश्वासन देती है। स्पष्ट है कि मध्य वर्ग संगठित है और निम्न वर्ग असंगठित।

7376. परिभाषा के अभाव में महंगाई शब्द का व्यापक दुरूपयोग हुआ। अनुसंधान से यह प्रमाणित हुआ है कि स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में भारत में 1. सोना, चांदी, जमीन, और सरकारी कर्मचारियां का वेतन बहुत महंगा हुआ है, 2. पेट्रोल, दालें, श्रम, खाद्य तेल आदि कुछ महंगे या स्थिर हैं तथा 3. अनाज, मिट्टी तेल, डीजल, कपड़ा, बिजली, सहित हजारों-लाखां सामान या तो सस्ते हुए हैं या बहुत सस्ते हुए हैं। सामान्य सिद्धान्त है कि किसी वस्तु की जिस आधार वस्तु से तुलना की जाती है, उस आधार वस्तु को स्थिर होना चाहिए।

7377. यदि किसी वस्तु के महंगी या सस्ती होने का वास्तविक आंकलन करना हो, तो उस वस्तु के आज के मूल्य में सन् सैंतालिस से आज तक की मुद्रा-स्फीति का भाग देकर ही वास्तविकता को समझा जा सकता है। इस तरह भारत में न तो महंगाई बढ़ी है, न ही आम जन के जीवन पर उसका कोई बुरा प्रभाव पड़ा है। इसके विपरीत आम जन का जीवन स्तर अपेक्षाकृत सुधरा ही है।

7378. महंगाई के अस्तित्व को स्वीकार करना ही पूरी तरह भ्रमपूर्ण है। यदि दुनिया के करोड़ों लोगों ने पृथ्वी को चपटी कहकर उसे गोल कहने वाले विद्वान को फांसी पर चढ़ा दिया, तो क्या पृथ्वी गोल सिद्ध हो जाएगी?

7379. किसी वस्तु के महंगा होने के चार कारण हो सकते हैं :- 1. मुद्रा-

स्फीति बढ़े, 2. वस्तु का उत्पादन कम हो, 3. वस्तु का निर्यात अधिक हो और 4. वस्तु का उपयोग अधिक होने लगे। कोई वस्तु महंगी या सस्ती हो सकती है, लेकिन महंगाई वर्तमान समय में घट रही है, बढ़ नहीं रही है क्योंकि देश में उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है।

738 मुद्रा-स्फीति

7381. देश का सारा हिसाब-किताब मूल रुपया के आधार पर रखा जाए। इससे महंगाई, मुद्रा-स्फीति या कृत्रिम मूल्य वृद्धि समाप्त हो जाएगी।

7382. मुद्रा-स्फीति का अर्थ होता है नगद रुपये की क्रय शक्ति का घटना। मानव श्रम-मूल्य, बौद्धिक क्षमता मूल्य, जमीन, मकान, अनाज, दवा आदि के मूल्यों पर मुद्रा-स्फीति का कोई प्रभाव नहीं होता।

7383. भौतिक मूल्य वह होता है, जो वर्तमान रुपये के रूप में प्रचलित है। यह मूल्य सिर्फ प्रतीकात्मक होता है, तथा व्यवहार में होता है। वास्तविक मूल्य वह होता है, जो रुपये के तुलनात्मक मूल्य संशोधन के बाद होता है। वास्तविक मूल्य स्थिर होता है। यह तुलना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

7384. मूल्य वृद्धि अलग चीज है और मुद्रा-स्फीति के आधार पर मूल्य पुनर्मूल्यांकन अलग। मूल्यों का प्रतिवर्ष मुद्रा-स्फीति के आधार पर पुनर्मूल्यांकन न होने से कोई वस्तु सस्ती होती चली जाती है और मूल्य विसंगति पैदा करती है।

7385. जिस वस्तु के मूल्य बढ़ेंगे, उसकी मांग घटेगी। साथ ही जिस वस्तु की मांग बढ़ेगी, उसके मूल्य बढ़ेंगे अर्थात् मांग और मूल्य एक-दूसरे को निरंतर नियंत्रित करते हैं। यदि आप श्रम की मांग बढ़ाते हैं, तभी श्रम का मूल्य बढ़ेगा, और कोई तरीका नहीं। किन्तु यदि

आप श्रम का मूल्य बढ़ाते हैं, तो श्रम की मांग घटेगी।

7386. उत्पादन वृद्धि के लिए मूल्य वृद्धि करनी ही होगी। यह मूल्य वृद्धि भी ज्यादा करनी होगी। जब ज्यादा मूल्य वृद्धि होगी, तब कृषि उत्पादन बढ़ेगा और जब उत्पादन बढ़ेगा, तब मूल्य स्थिर होंगे और हम आत्मनिर्भर हो सकेंगे।

7387. मुद्रा-स्फीति का तब तक कोई प्रभाव नहीं होता, जब तक मूल्यों के अनुपात में उसकी आय बढ़ती रहे। इस तरह महंगाई न कभी आई है न आयेगी, क्योंकि आय-वृद्वि के अनुपात में मूल्य-वृद्वि हमेशा ही कम रही है।

7388. मुद्रा-स्फीति का आंकलन करते समय रुपये का मूल्य घटता है, वस्तु का मूल्य स्थिर होता है, जबकि महंगाई का आंकलन करते समय रुपया स्थिर होता है और वस्तु का मूल्य बदलता रहता है। मुद्रा-स्फीति का प्रभाव सिर्फ नगद रुपया रखने वाले पर ही होता है, रुपया छोड़कर अन्य किन्हीं वस्तुओं पर नहीं, जबकि महंगाई का प्रभाव नगद रुपये पर शून्य होता है। सिर्फ वस्तुओं के मूल्य पर होता है।

7389. मुद्रा-स्फीति का सामान्य जन जीवन पर कोई अच्छा या बुरा प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वह तो एक प्रकार का सरकार का अघोषित कर है। किसी उपभोक्ता वस्तु की मांग और पूर्ति के बीच जब अंतर बढ़ता है, तब वह वस्तु अन्य वस्तुओं का साथ छोड़कर अकेली महंगी हो जाती है। किन्तु यदि सभी वस्तुओं की मांग बढ़ने लगे और पूर्ति उस मूल्य पर न हो, तो वह महंगाई न होकर औसत क्रय-शक्ति के बढ़ने का प्रभाव माना जाता है।

7390. भारत में महंगाई एक भ्रम है। रुपये के मूल्य ह्रास को, नासमझी के कारण महंगाई मान लिया जाता है। मुद्रा-स्फीति का धनहीनों या गरीबों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मुद्रा-स्फीति को महंगाई कहना पूरी तरह गलत है।

7391. भारत में अनाज, कपड़ा, दवा, वनोपज, साइकिल आदि सभी आवश्यक वस्तुओं को कर मुक्त करके डीजल, बिजली, पेट्रोल आदि की भारी मूल्य-वृद्धि कर देने से आर्थिक असमानता नियंत्रित हो सकती है।

740 सम्पत्ति का अधिकार

7400. किसी भी व्यक्ति को उसकी सहमति के बिना उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर किसी अन्य के साथ जुड़ते ही उसकी सम्पत्ति भी संयुक्त हो जाती है। इस तरह व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने की छूट नहीं हो सकती। इसलिए परिवार की सम्पत्ति संयुक्त होनी चाहिए, व्यक्तिगत नहीं। परिवार छोड़ते समय व्यक्ति अपना हिस्सा लेकर नए परिवार के साथ जोड़ सकता है। व्यक्तिगत सम्पत्ति की वर्तमान अवधारणा पूरी तरह घातक है।

7401. पश्चिम का पूंजीवाद कहता है कि मशीनों का अधिक उपयोग करके उत्पादन के निर्यात द्वारा विकास करो। साम्यवाद कहता है मशीनों का अधिकतम उपयोग करके उसका लाभ आम नागरिकों में बांट दो। गांधी कहते हैं मशीनों का कम उपयोग करो। मेरा मत है कि कृत्रिम ऊर्जा को बहुत मंहगा कर दो।

7402. दुनिया में तीन सम्पत्ति सिद्धान्त बताए गए हैं :- (1) व्यक्तिगत

सम्पत्ति जो पश्चिम में है, (2) सार्वजनिक सम्पत्ति जो रूस तथा चीन में थी, (3) गांधी का ट्रस्टीशिप जो अस्पष्ट है। सबको मिलाकर चौथा सिद्धान्त है - परिवार की सामूहिक सम्पत्ति।

7403. व्यक्ति अपनी बौद्धिक या श्रम-शक्ति से प्राप्त लाभ को धन के अतिरिक्त किसी अन्य स्वरूप से न तो संचित कर सकता है और न ही रूपांतरित। धन ही उसका एकमात्र संग्रह का आधार है, अन्यथा व्यक्ति का विशेष प्रयत्न स्वतः नष्ट हो जायेगा।

7404. आदर्श स्थिति में एक व्यक्ति एक मार्ग पर चलकर सिर्फ एक ही लाभ का परिणाम प्राप्त कर सकता है। चार प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते हैं :- 1. सम्मान, 2. शक्ति, 3. सुविधा और 4.सुख।

7405. किसी भी व्यक्ति को एक से अधिक लाभ नहीं मिलना चाहिए। वर्तमान समय में हर व्यक्ति चारों प्रकार के लाभ लेने की कोशिश कर रहा है। इसके कारण समाज में छीना-झपटी का वातावरण बन रहा है और अव्यवस्था पैदा हो रही है।

741 आर्थिक रेखा

7410. सम्पत्ति प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। कोई भी व्यवस्था व्यक्ति की सहमति के बिना उसकी सम्पत्ति की कोई सीमा नहीं बना सकती।

7411. अमीरी-गरीबी शब्द समाज में वर्ग-विद्वेषकारी है। दोनों शब्द सापेक्ष और तुलनात्मक है। प्रत्येक व्यक्ति ऊपर वाले की तुलना में गरीब और नीचे वाले की तुलना में अमीर होता है। इन शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। कुछ बिचौलिए अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए इन दोनों शब्दों का भरपूर उपयोग करते हैं। आमतौर पर

राजनेताओं का एक बड़ा समूह अमीरी रेखा और गरीबी रेखा के नाम पर अपनी राजनैतिक दुकानदारी मजबूत करते रहता है। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। कमजोरों की मदद करना व्यवस्था का कर्तव्य होता है, कमजोरों का अधिकार नहीं। कोई भी व्यवस्था आर्थिक आधार पर एक मध्य रेखा बनाकर उसके नीचे वालों को समान सहायता तथा ऊपर वालों को समान स्वतंत्रता का प्रावधान कर सकती है।

742 अमीरी रेखा

7420. ऐसी कोई अमीरी रेखा नहीं बनाई जा सकती है, जो किसी सीमा से ऊपर सम्पत्ति पर रोक लगा सके। गरीबी और अमीरी शब्द का अधिकाधिक प्रचार वर्ग-विद्वेष बढ़ाने के उद्देश्य से अधिक होता है, समाधान के लिए कम।

743 गरीबी रेखा

7430. गरीबों की मदद करना समाज तथा राज्य का कर्तव्य होता है, गरीबों का अधिकार नहीं। अमीर-गरीब के बीच सुविधा का अंतर हो सकता है, किन्तु अधिकारों का नहीं।

7431. गरीबी रेखा का अधिक ऊँचा मापदंड बना देने के बाद उसका श्रम पर भी दुष्प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए संतुलन बनाना आवश्यक होगा।

7432. सत्तर वर्षों के शासन काल में हम भारत के गरीब लोगों को इतना भी आश्वस्त नहीं कर सके कि उन्हें भरपेट भोजन तो मिलेगा ही। वर्तमान सरकार ने मुफ्त भोजन की घोषणा करके इस संबंध में अच्छी पहल की है।

7433. जब भारत चांद पर जा सकता है, बड़े-बड़े उद्योग लगाये जा सकते हैं, तकनीकी आधार पर दुनिया से प्रतिस्पर्धा की जा सकती है, तो कुछ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर करना कोई कठिन कार्य नहीं है। मेरे विचार से बुद्धिजीवी और पूंजीपति, राजनेताओं के साथ मिलकर गरीबी रेखा को इसलिए समाप्त नहीं करना चाहते कि इसी बहाने दुनिया से भारत को भीख मिलती रहेगी।

7434. गरीबी कोई स्वतंत्र शब्द न होकर एक सापेक्ष शब्द है, जिसके अनुसार यदि किसी व्यक्ति की तुलना बहुत बड़े आदमी से की जाए, तो वह गरीब दिखता है और अत्यंत गरीब से तुलना करें, तो वही धनवान दिखने लगता है।

744 गरीबी

7440. भारत में प्रत्येक व्यक्ति की क्रय-शक्ति बढ़ी है। गरीबों की क्रय-शक्ति बहुत धीमी और अमीरों की तीव्रगति से बढ़ी है। भारत के आर्थिक विकास के आंकड़ों से स्पष्ट है कि तैंतीस प्रतिशत श्रमजीवियों की विकास दर एक प्रतिशत, मध्यम वर्ग की सात प्रतिशत तथा तैंतीस प्रतिशत उच्च वर्ग की चौदह प्रतिशत के आसपास है, जिसका औसत निकालकर प्रचारित होता है। आज भी भारत की पंद्रह प्रतिशत आबादी ऐसी है, जिसकी दैनिक आय प्रति व्यक्ति चालीस रुपये से कम है। फिर भी भारत में गरीबी या गरीबों की संख्या घट रही है। गरीबी बढ़ने का प्रचार इसकी गलत परिभाषा के कारण है।

7441. आर्थिक असमानता तथा श्रम-शोषण में कमी साम्यवाद के विस्तार में घातक है। श्रम-शोषण के चार सरकारी प्रयत्नों (7099) के

परिणामों से वामपंथियों को वर्ग-संघर्ष के विस्तार में सुविधा होती है, क्योंकि श्रम-मूल्य वृद्धि आर्थिक-सामाजिक असमानता दूर करने का सबसे आसान तरीका है। पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों ने श्रम की मूल्य वृद्धि को रोके रखने के लिए उपरोक्त चारों नीतियों पर ईमानदारी से प्रयास किया है। भारत के सभी दक्षिणपंथी तथा वामपंथी राजनैतिक दल श्रम-शोषण के चारो सिद्धान्तों (7099) पर मिलकर काम करते हैं। वामपंथी तो स्वयं को श्रम हितैषी घोषित करके श्रम-शोषण के सिद्धान्तों की वकालत करते हैं।

7442. भारत की अधिकांश सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का समाधान श्रम-मूल्य वृद्धि में निहित है। श्रम-मूल्य वृद्धि के लिए उपरोक्त चार सरकारी बाधाएं (7099) तत्काल दूर करने की आवश्यकता है।

7443. श्रम-मूल्य वृद्धि अपराध नियंत्रण में भी आंशिक सहयोगी होगी। श्रम-मूल्य वृद्धि सामाजिक न्याय भी है और कानून व्यवस्था में सहायक भी।

7444. भारत में अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत दो वर्ग हैं :- (1) ग्रामीण, श्रमजीवी, मूल उत्पादन में लगा हुआ तथा गरीबी रेखा के नीचे का व्यक्ति, (2) शहरी, बुद्धिजीवी, प्रसंस्कृत उद्योग या व्यवस्था में लगा हुआ तथा गरीबी रेखा के ऊपर का व्यक्ति। हमारी अर्थनीति पहले वर्ग को प्रोत्साहित करने की होनी चाहिए। इससे यदि दूसरे वर्ग पर आंशिक विपरीत प्रभाव भी पड़े, तो ठीक है। दुर्भाग्य से हमारी अर्थनीति पहले वर्ग को कम और दूसरे को अधिक प्रोत्साहन दे रही है। वर्तमान ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना पहली बार पहले

वर्ग के आंशिक पक्ष में बनी है। इसका व्यापक विस्तार होना चाहिए। दुर्भाग्य से इसे प्रभावहीन बनाने की तैयारी होती रही है।

7445. भारत में शिक्षा पर व्यय बढ़ाने की मांग बुद्धिजीवियों का श्रम-शोषण का एक तरीका है। समाज में तीन प्रकार के लोग हैंः- (1) अशिक्षित (2) शिक्षार्थी (3) शिक्षित। शिक्षा का व्यय अशिक्षित भी वहन करे, यह पूरी तरह अन्यायपूर्ण है। मौलिक शिक्षा के अतिरिक्त सम्पूर्ण शिक्षा पर एक पैसे का व्यय भी तब तक रोक देना चाहिए, जब तक पहले प्रकार के लोगों पर टैक्स पूरी तरह समाप्त न हो जाए।

7446. गरीबी पचास वर्षों में घटी है, किन्तु गरीबों की आर्थिक सम्पन्नता पैदल की चाल से बढ़ी है तो धनवानों की हवाई जहाज की रफ्तार से।

750 श्रम और रोजगार

7500. एक भूखे श्रमिक को बीस रुपया मिले और वह मक्का की रोटी न खाकर किशमिश खाने की चिन्ता करे, तो भूल किसकी है? वर्तमान समय में गरीबों में अनाज की तुलना में शराब की बिक्री तेजी से बढ़ रही है।

7501. श्रम ही रोजगार का सृजन कर सकता है, बुद्धि नहीं। बुद्धि व्यक्तिगत रोजगार खोज सकती है, जो अन्ततोगत्वा कई गुना अधिक बेरोजगारी बढ़ायेगी। श्रम के साथ न्याय करना न सिर्फ पुण्य कार्य है, बल्कि हमारी आंतरिक व्यवस्था में भी शान्ति के लिए आवश्यक है। भूख, गरीबी और श्रम को अभी लम्बा संघर्ष करना बाकी है।

7502. बेरोजगारी दूर करने का अर्थ श्रम ऊर्जा को अधिकाधिक रोजगार प्रदान करने से है, कृत्रिम ऊर्जा चलित मशीनों से बेरोजगारी दूर हो ही नहीं सकती। क्योंकि जो कार्य सिर्फ मशीन से ही संभव है, उनकी वृद्धि या कमी से कोई फर्क नहीं होता। बेरोजगारी घटेगी-बढ़ेगी तीसरे प्रकार के कार्यों में श्रम और मशीनों के अनुपात की घट-बढ़ से। यदि समाज में श्रम की मांग बढ़ जाये तो उसका मूल्य भी बढ़ जायेगा और सम्मान भी। एक षड्यंत्र के अन्तर्गत श्रम की मांग को कम करने की योजनाएं बनाई जाती हैं, साम्यवादी इन योजनाओं को बनाने का नेतृत्व करते हैं और पूंजीवादी इन योजनाओं का समर्थन करते हैं।

7503. श्रम आधारित रोजगार की अपेक्षा तकनीक सहायक रोजगार अधिक सफल है।

7504. जब तक भारत में एक भी श्रमजीवी बेरोजगार और भूखा है, तब तक शिक्षा पर शासन द्वारा एक पैसा भी खर्च करना श्रम के साथ अन्याय है।

7505. जब तक श्रम की मांग नहीं बढ़ेगी, तब तक श्रम-मूल्य नहीं बढ़ेगा और जब तक कृत्रिम ऊर्जा श्रम-मूल्य की तुलना में सस्ती रहेगी, तब तक श्रम की मांग नहीं बढ़ेगी।

7506. यदि कृत्रिम ऊर्जा सस्ती हुई, तो श्रमसंभव रोजगार मशीनों की दिशा में आकर्षित होकर श्रम को बेरोजगार करेगा और यदि कृत्रिम ऊर्जा श्रम के अनुपात में महंगी हुई, तो श्रम ऊर्जा कृत्रिम ऊर्जा से रोजगार अपनी ओर खींच कर कृत्रिम ऊर्जा को बेकार करेगी।

7507. जिस व्यक्ति के पास आय के दो साधन हैं, वह कभी बेरोजगार हो

ही नहीं सकता। बेरोजगार तो वही हो सकता है, जिसके पास श्रम के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।

751 शिक्षित बेरोजगारी

7510. आपको एक पद की आवश्यकता होने पर कई हजार आवेदन प्राप्त होते हैं। दूसरी ओर खोजने पर भी मजदूर नहीं मिलते। इसका यह अर्थ नहीं कि बेरोजगारी घट या बढ़ रही है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि श्रम और शिक्षा के बीच अंतर लगातार बढ़ रहा है। इसलिए श्रमजीवी सुविधाजनक रोजगार की तरफ तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। शिक्षित बेरोजगार शब्द श्रम-शोषण का षड्यंत्र है, क्योंकि इस षड्यंत्र के अंतर्गत बुद्धिजीवियों ने बेरोजगारी की परिभाषा बदल दी है।

7511. लोग कहते हैं कि कहीं एक सौ पद के लिए मांग की जाती है, तो दसों हजार लोग उस पद के लिए टूट पड़ते हैं। अकसर दिया जाने वाला बेरोजगारी का यह उदाहरण बिल्कुल गलत भी है और षड्यंत्र भी। कहीं ऐसी भाग-दौड़ नहीं है, यदि उक्त एक सौ पद का वेतनमान न्यूनतम श्रम-मूल्य से कई गुना अधिक न हो। एक ड्रम रबड़ी रखकर उसे खाने के लिए टूट पड़ने वालों के आधार पर पूरे गाँव के भूखे होने का आंकलन तैयार करने वाली व्यवस्था को यदि षड्यंत्र न कहें तो और क्या कहें।

7512. यदि भारत सरकार वास्तव में वास्तविक बेरोजगारी को दूर करना चाहती है, तो उसे कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य-वृद्धि कर देनी चाहिए। साथ ही उसे शिक्षा पर लगने वाला पूरा खर्च बंद करके कृषि की ओर स्थानान्तरित कर देना चाहिए।

7513. शिक्षा प्राप्त व्यक्ति शोषण और अत्याचार में अधिक पारंगत होता है, इस तर्क के आधार पर यदि शिक्षा का विशेष विस्तार होता है, तो यह पूरी तरह गलत है। या तो शिक्षा को पूरी तरह समान होना चाहिए या स्वतंत्र।

752 रोजगार

7520. खादी भले ही महंगी हो, किन्तु हम यह सोचकर खादी पहने कि इससे रोजगार मिलेगा, भावनात्मक शुद्धि होगी, पर्यावरण पर असर होगा, ऐसी भावनात्मक बातें एक-दो प्रतिशत से अधिक लोगों पर असर नहीं डालती।

7521. एक व्यक्ति भूख से छटपटा रहा है। एक दूसरा व्यक्ति उसे दो रोटी देकर उससे दिनभर काम करा रहा है और आप उसे रोटी का एक टुकड़ा देने की अपेक्षा बाहर बैठकर काम कराने वाले की आलोचना कर रहे हैं। यह किसी भी स्थिति में न्यायसंगत नहीं है।

752 बेरोजगारी

7522. दुनिया में बेरोजगारी शब्द की भ्रामक और अस्पष्ट परिभाषा होने से भारत में भी इस शब्द का व्यापक दुरुपयोग हो रहा है। रोजगार का आंकलन आय के आधार पर होता है। कोई अमीर व्यक्ति बेरोजगार होते हुए भी वह मजबूर नहीं है। क्योंकि आय के तीन स्रोत होते हैंः- (1) श्रम (2) बुद्धि (3) धन। बेरोजगारी की परिभाषा सिर्फ श्रम के साथ ही जोड़ी जा सकती है क्योंकि बुद्धिजीवी और पूंजीपति के पास श्रम के साथ-साथ आय के अतिरिक्त स्रोत भी होते हैं।

7523. शिक्षित बेरोजगारी शब्द श्रम-शोषण के उद्देश्य से बुद्धिजीवियों

ने तैयार किया है, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति के पास श्रम भी है और बुद्धि भी। शिक्षा रोजगार का रूपांतरण कर सकती है रोजगार पैदा नहीं कर सकती। श्रम, रोजगार पैदा कर सकता है। बेरोजगारी की संशोधित परिभाषा यह होनी चाहिए "किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित न्यूनतम श्रम-मूल्य पर योग्यतानुसार काम का अभाव"। जो व्यक्ति न्यूनतम श्रम-मूल्य से अधिक के लिए काम नहीं कर रहा, वह उचित रोजगार की प्रतीक्षा में माना जाएगा, बेरोजगार नहीं। वर्तमान भारत में जिन्हें बेरोजगार प्रमाणित किया जाता है, उनमें उचित रोजगार की प्रतीक्षा कर रहे लोगों को जोड़कर वास्तविक बेरोजगारों को निकाल दिया जाता है।

7524. बेरोजगारी दो प्रकार की हैः- (1) कृत्रिम और (2) वास्तविक। शासन द्वारा घोषित श्रम-मूल्य और वास्तविक श्रम-मूल्य का अंतर वास्तविक बेरोजगारी है, जबकि शासन द्वारा घोषित योग्यता का मूल्य और घोषित श्रम-मूल्य के बीच का अंतर कृत्रिम बेरोजगारी है। न्यूनतम श्रम-मूल्य का अर्थ है सरकार द्वारा घोषित वह श्रम-मूल्य, जिस आधार पर प्रत्येक बालिग और सक्षम व्यक्ति को योग्यतानुसार रोजगार देने की लिए सरकार बाध्य है।

7525. मेरे आंकलन के अनुसार भारत सरकार को पूरे भारत में समान रूप से वर्तमान रुपए के आधार पर डेढ़ मूल रुपए अर्थात् तीन सौ वर्तमान रुपए प्रतिदिन घोषित करके वर्ष भर काम की गारंटी दे देनी चाहिए।

7526. भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में न्यायपूर्ण पक्ष मात्र इतना ही होना चाहिए कि बेरोजगार की परिभाषा में से शिक्षा को हटाकर श्रम को जोड़ दें। क्योंकि भारत श्रम बाहुल्य देश है।

7527. बेरोजगारी दूर करने का अर्थ श्रम-ऊर्जा को अधिकाधिक रोजगार प्रदान करने से है, कृत्रिम ऊर्जा चलित मशीनों से बेरोजगारी दूर हो ही नहीं सकती।

7528. जब किसी मूल वस्तु का अभाव होता है, तब विकल्प तैयार किया जाता है। विकल्प का उद्देश्य मूल का सहायक होना है, बेरोजगार करना नहीं।

7529. बेरोजगारी की अच्छी परिभाषा यह है कि किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित न्यूनतम श्रम-मूल्य पर योग्यतानुसार काम का अभाव।

7530. बेरोजगारी घटने-बढ़ने का कोई अच्छा बुरा प्रभाव आज तक स्पष्ट नहीं हुआ, क्योंकि इन सबकी जान-बूझकर परिभाषाए बदलने में पश्चिम की नकल की गई। जब परिभाषा ही बदल दी गई, तब वास्तविक अर्थ का पता कैसे चलेगा?

7531. दुनिया जानती है कि शिक्षित व्यक्ति कभी बेरोजगार नहीं हो सकता, भले ही वह उचित रोजगार की प्रतीक्षा में बेरोजगार बने रहने का नाटक ही क्यों न करे। किन्तु हमारे बुद्धिजीवियों ने बेरोजगारी की एक नकली परिभाषा बनाकर उस परिभाषा के आधार पर शिक्षित लोगों को भी बेरोजगार घोषित करना शुरू कर दिया। उचित तो यह है कि एक सीमा से नीचे श्रम मूल्य पर काम करने वाले मजबूर श्रमिक को बेरोजगार माना जाये तथा उससे ऊपर प्राप्त करने की प्रतीक्षा में बेरोजगार बैठे इंजीनियर को बेरोजगार न मानकर उचित रोजगार की प्रतीक्षा में माना जाये।

7532. न्यायपूर्ण तरीके से बेरोजगारी दूर करने का एकमात्र माध्यम है कि श्रम की मांग बढ़े। किन्तु हमारे देश के आर्थिक विशेषज्ञ सारी शक्ति लगाकर श्रम की मांग बढ़ने से रोकने का प्रयत्न करते रहते हैं।

7533. एक परिवार जिसके पांच सदस्य हों, उसे 500 रुपये प्रतिदिन अर्थात् 15 हजार रुपये मासिक आय के रोजगार की गारंटी होनी चाहिए और यदि उससे कम मिल पाता है, तो सरकार को उसकी पूर्ति की व्यवस्था करनी चाहिए।

7534. उचित रोजगार की प्रतीक्षा में खाली बैठे बेरोजगार का नाम बेरोजगार की सूची में है और न्यूनतम घोषित श्रम-मूल्य से भी नीचे पर काम करने को मजबूर व्यक्ति का नाम बेरोजगारों की सूची में शामिल नहीं है। वर्तमान में बेरोजगारी का प्रचलित अर्थ झूठा है। वर्तमान व्यवस्था में बेरोजगारी दूर करने के नाम पर श्रमजीवियों के साथ धोखा किया जा रहा है।

7535. केन्द्र सरकार ने पहली बार छोटे-छोटे स्वतंत्र रोजगार को भी रोजगार कहने का खतरा उठाया। देश भर के बुद्धिजीवियों ने पकौड़ा पॉलिटिक्स कहकर इस अच्छे प्रयास का मजाक भी उड़ाया और विरोध भी किया। ऐसा सिद्ध किया गया जैसे शिक्षित बेरोजगारों का अपमान किया जा रहा है। होना तो यह चाहिए था कि आज तक जिस तरह लघु उद्योग और श्रम का अपमान किया जाता रहा, उस अपमान पर मरहम लगाने की आवश्यकता थी।

7536. शिक्षा को ज्ञान का माध्यम मानना चाहिए, रोजगार का नहीं। नौकरी के लिए शिक्षा तो निकृष्ट प्रयत्न है।

7537. व्यक्ति को रोजगार प्राप्त कराना राज्य का स्वैच्छिक कर्तव्य होता है, दायित्व नहीं। क्योंकि रोजगार व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं होता, बल्कि संवैधानिक अधिकार मात्र होता है। रोजगार देना राज्य का दायित्व न होते हुए भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मानी जाती है। क्योंकि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव में व्यक्ति

कभी-कभी अपराध करने को मजबूर हो जाता है। ऐसे अपराध राज्य के लिए समस्या पैदा करते हैं।

754 नरेगा

7540. श्रम और बुद्धि, गाँव और शहर तथा विकसित और अविकसित क्षेत्रों के बीच दूरी कम करने के लिए नरेगा एक बहुत ही प्रभावकारी योजना सिद्ध हुई। लागू होने के दो वर्ष बाद ही विकसित क्षेत्रों के दबाव में सरकार ने इसे महत्वहीन बना दिया। वामपंथियों की सलाह से मनमोहन सिंह सरकार ने नरेगा योजना शुरू की थी और वामपंथियों के ही दबाव से सोनिया जी ने इसको प्रभावहीन बनवाया। नरेंद्र मोदी जी यह योजना फिर से सक्रिय कर रहे हैं।

7541. नरेगा योजना को प्रभावहीन बनाने के उद्देश्य से अनेक वामपंथी बुद्धिजीवियों की एक समिति ने निष्कर्ष निकाला कि नरेगा के कारण देश की कृषि उत्पादकता पर व्यापक दुष्प्रभाव पड़ रहा है। नरेगा के तहत सृजित परिसंपत्तियों की गुणवत्ता कुल मिलाकर घटिया, गैर-टिकाऊ और गैर-उत्पादक है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस योजना के तहत सृजित की जा रही परिसंपत्तियों की गुणवत्ता को नजर-अंदाज किया जा रहा है। इसलिए समिति का मानना था कि देश की उत्पादकता को प्रभावित होने से बचाने के लिए नरेगा बंद करना जरूरी है। सरकार को चाहिए, कि जब कृषि मौसम नहीं हो उस अवधि में ही नरेगा के तहत रोजगार दिया जाये। मेरे विचार से समिति के निष्कर्ष गलत हैं और बुरी नीयत से निकाले गये हैं।

7542. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना भी मनमोहन सिंह के कार्यकाल की बड़ी उपलब्धि है। नरेगा ने बाजार में वास्तविक मजदूरी को बढ़ाया है। सरकार द्वारा घोषित पूर्व प्रथा तो लगातार

श्रम का शोषण करती रही है। नरेगा में श्रम-मूल्य वृद्धि से बाजार में श्रम का मूल्य भी बढ़ता है तथा मांग भी। श्रम की मांग बढ़ने से श्रम का मूल्य बढ़ना एक शुभ लक्षण है।

7543. स्वतंत्रता के बाद नरेगा पहली योजना थी, जो पूरी तरह निष्कपट तथा प्रभावोत्पादक थी। इसकी विशेषता रही कि यह परिवार व्यवस्था को मान्यता देती थी, क्योंकि योजनानुसार परिवार के एक सदस्य को एक सौ दिन के काम की गारंटी दी गई थी। दूसरी विशेषता थी कि इसमें ग्रामीण रोजगार गारंटी देकर शहरी आबादी को बाहर रखा गया था। तीसरी विशेषता यह थी कि इसका श्रम-मूल्य अविकसित क्षेत्रों के वास्तविक श्रम-मूल्य के समकक्ष ही रखा गया था। चौथी विशेषता यह थी कि इस योजना में आदिवासी, गैर-आदिवासी या महिला-पुरूष का भेद न करके सबके लिए समान रूप से लागू की गई।

7544. नरेगा से अविकसित प्रदेशों के श्रमिकों का पलायन रूका। विकसित क्षेत्रों के किसानों का उत्पादन प्रभावित होना शुरू हुआ, जिस कारण उन्हें या तो स्वयं श्रम करना पड़ा अथवा मजदूरी बढ़ानी पड़ी। दोनों ही कारणों से उनका लाभ प्रभावित हुआ। इस योजना के प्रभाव से अविकसित क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा तथा विकसित व अविकसित के बीच का अंतर घटा। योजना का प्रत्यक्ष विरोध करने वालों की सरकार ने एक न सुनी किन्तु योजना के विरुद्ध अप्रत्यक्ष षड्यंत्रकारी लगातार सफल होते गये।

7545. नरेगा की योजना को भटकाने में वामपंथियां, पूंजीपतियों, बुद्धिजीवियों का तो हाथ रहा ही, किन्तु न्यायपालिका भी भटक गई। न्यायपालिका ने भटकाने वाले प्रयत्नों को जनहित मानने

की भूल करके इसका आकार बढ़ाने का ही काम किया। सांसद नरेगा में मिलने वाली मजदूरी ज्यादा होने के कारण कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले दुष्प्ररभाव के कारण चिंतित हैं, तो न्यायाधिपति न्यूनतम मजदूरी कानून से कम दी जा रही मजदूरी को बेगार या बलात्कार सिद्ध कर रहे हैं।

7546. नरेन्द्र मोदी सरकार ने बिल्कुल ठीक कदम उठाया है। योजना दो सौ अविकसित जिलों तक ही सीमित हों, इसमें गलत क्या है। क्यों विकसित क्षेत्रों में भी लागू किया जाये, जो कि घाटे का बजट है। विशेष स्थिति में ही पूर्व सरकार ने दो सौ जिलां में लागू किया था। तथाकथित अर्थशास्त्रियां के दबाव में ही कांग्रेस सरकार इसका स्वरूप सुरसा की तरह बढ़ाते गई।

7547. नरेन्द्र मोदी के पूर्व नरेगा योजना को भटकाने की कोशिश की गई है। इसके पूर्व 2011 में देश के सर्वोच्च न्यायालय के अनेक न्यायाधीशां तथा अधिवक्ताओं ने यही काम किया था। इसके पूर्व अनेक सांसदो की टीम ने नरेगा को बंद करने की बात कही थी।

7548. नरेगा में सरकार को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि श्रम-मूल्य न तो बाजार मूल्य से बहुत अधिक हो, न बहुत कम। यदि श्रम-मूल्य बाजार मूल्य से अधिक होगा, तो अन्यत्र रोजगार कर रहे लोग भीड़ बढ़ाकर बजट को असंतुलित करेंगे तथा श्रम-मूल्य बाजार मूल्य से बहुत कम होगा, तो नरेगा का उद्देश्य ही अधूरा रह जायेगा।

7549. अनेक विद्वान नरेगा को मौलिक अधिकार कहते हैं, जबकि नरेगा संवैधानिक अधिकार है। बेगार या बलाश्रम मूल अधिकारों का उल्लंघन है जबकि कानून से घोषित मूल्य से कम मजदूरी देना सिर्फ गैर-कानूनी है। नरेगा में भारत की मोदी सरकार दो सौ अविकसित जिलां में नरेगा को सीमित कर रही है, यह अच्छी बात है।

7550. नरेगा के विरुद्ध दोनों ओर से षड्यंत्र किया गया और सरकार ने दबाव में आकर इस योजना के स्वरुप को बदल दिया। इसका अर्थ हुआ कि अविकसित क्षेत्रों की अपेक्षा विकसित क्षेत्र में नरेगा का न्यूनतम श्रम-मूल्य अधिक कर दिया गया। इसमें भी कुछ श्रम-मूल्य केन्द्र सरकार ने बढ़ाया तो कुछ राज्य सरकारों ने भी अपनी तरफ से बढ़ा दिया और फिर से अविकसित और विकसित क्षेत्रों के मजदूरों के बीच खाईं चौड़ी हो गई।

7551. नरेगा एक अल्पकालिक राहत कार्य है समाधान नहीं। समाधान तो श्रम की मांग और मूल्य बढ़ना ही है। यदि सत्तर वर्षों के बाद भी भारत में एक बड़े समूह को राहत देनी पड़े, तो यह नाकामी का स्मारक ही कहा जा सकता है, सफलता का नहीं।

760 कर-प्रणाली

7600. वर्त्तमान भारत में राज्य की नीयत खराब है। राज्य निर्यात की प्रतिस्पर्धा के लिए श्रम-मूल्य घटाकर रखना चाहता है। इसका आसान मार्ग जो वह अपना रही है वह यह है कि जो वस्तु गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी, छोटे किसान अधिक उत्पादन और उपभोग करें, उन पर अप्रत्यक्ष कर लगाकर प्रत्यक्ष छूट दी जाये। जो वस्तु अमीर लोग अधिक उत्पादन उपभोग करें, उन पर प्रत्यक्ष कर लगाकर अप्रत्यक्ष छूट दी जाये। भारत सरकार लगातार यह कर रही है जो कि गलत है।

7601. भारत सरकार को सभी प्रकार के कर समाप्त करके सिर्फ सम्पत्ति कर लगाना चाहिए। सम्पत्ति कर का नाम "सुरक्षा कर" रखा जा सकता है। यह कर बिना भेदभाव किये सभी पर समान रूप से लागू हो। मंदिर, धर्मशाला, श्मशान सहित कोई संपत्ति कर मुक्त न हो,

जो सरकार से अलग किसी इकाई के स्वामित्व की हो। कृत्रिम ऊर्जा की बहुत भारी मूल्य-वृद्धि करके वह धन प्रत्येक व्यक्ति में समान रूप से वितरण कर दें। अन्य सारी आर्थिक सुविधाएं समाप्त कर दें। कृत्रिम ऊर्जा मूल्य-वृद्धि से निर्यात पर पड़ने वाले प्रभाव के लिए अलग व्यवस्था कर सकते हैं।

7602. भारत को आयात कम करके निर्यात बढ़ाना चाहिए। कृत्रिम ऊर्जा बहुत महंगी करने से आयात बहुत कम हो जाएगा। निर्यात बढ़ाने से उपभोक्ता वस्तुएं महंगी होंगी। इसका सीधा लाभ किसानों तथा उत्पादकों को होगा। उत्पादन बढ़ेगा, खपत घटेगी तथा जीडीपी सुधरेगी।

7603. बिचौलिया कभी कोई टैक्स नहीं देता। टैक्स या तो उत्पादक देता है या उपभोक्ता। अधिकांश उत्पादक और उपभोक्ता ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं तथा बिचौलिए शहरी क्षेत्रों में। स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों पर किए जाने वाले धन का अधिकांश हिस्सा टैक्स के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों से ही आता है। सफल अर्थनीति की पहचान है उत्पादक और उपभोक्ता मूल्यों के बीच न्यूनतम अंतर। दुर्भाग्य से भारत में यह अंतर बढ़ रहा है। अनावश्यक नियंत्रण और टैक्स इस अंतर को और अधिक बढ़ाते हैं। व्यापारियों द्वारा येन-केन-प्रकारेण धन कमाना ही उद्देश्य मान लिया जाता है। मिलावट और धोखा व्यापारिक कुशलता का चिह्न बन गया है। टैक्स और नियंत्रण अनैतिक व्यापारियों के लिए बसन्त का मौसम है। ये भ्रष्ट व्यापार में बहुत सहायक होते हैं। टैक्स और नियंत्रण भ्रष्टाचार की भी जड़ है। इनकी संख्या और मात्रा जितनी अधिक होगी, भ्रष्टाचार भी उतना ही अधिक होगा।

7604. पिछले साठ वर्षों में भूमि के मूल्यों में अनियंत्रित वृद्धि हुई है। भूमि के प्रति सामान्यतया आकर्षण भी बढ़ा है। भूमि का लगान आज भी पहले जितना ही है, जबकि लगान शुरू होने वाले वर्ष की अपेक्षा रुपए का मूल्य सिर्फ आधा पैसे बचा है। भूमि का लगान कम होना उन व्यवसायी भू-पतियों के लिए बहुत लाभकारी है, जो मूल्य-वृद्धि के लाभ के लिए जमीन खरीदकर रखते हैं। भूमि का लगान सौ गुना कर देना ही भूमि की समस्या का सर्वश्रेष्ठ समाधान है। इससे भूमि के मूल्य घटेंगे। भूमि व्यवसायियों से निकलकर किसानों के पास आएगी तथा भूमि के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाएगा। यदि भूमि सहित सम्पूर्ण सम्पत्ति पर दो प्रतिशत कर लगा दिया जाए तो भूमि पर लगान की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

7605. भारत के कुल बजट में शहर की अपेक्षा गांव दस गुना अधिक रेवेन्यू देता है।

7606. साइकिल पर 400 रुपये कर लगाकर रसोई गेस को सब्सिडी देने की वकालत करने में न वामपंथी पीछे हैं न दक्षिणपंथी। खर्चों की पूर्ति के लिए सब प्रकार के कृषि उत्पादनों तक पर कर लगाने का न किसी वामपंथी ने विरोध किया, न दक्षिणपंथी ने।

7607. साइकिल पर चार सौ रुपया प्रति साइकिल टैक्स लगाया और रसोई गैस को सब्सिडी देना शुरू किया गया। दूसरी ओर टेलीफोन, कम्प्यूटर, आवागमन आदि उच्च तकनीक को अधिकाधिक उपयोगी और सस्ता बनाया गया, जो बौद्धिक जगत के उपयोग में ज्यादा आती है। यह प्रणाली पूरी तरह बुद्धिजीवी षड्यंत्र मात्र है।

7608. पण्डित नेहरू की समाजवादी सनक के कारण प्राचीन समय में सरकार आय पर 90% तक कर वसूल करती थी। पंडित नेहरू की

मृत्यु के बहुत बाद यह कर धीरे-धीरे घटाया गया, जो आज भी लगभग 30 प्रतिशत के आसपास है।

7609. सरकारों की नीयत खराब है। सरकारें समाज को गुलाम बनाकर रखने के लिए अधिक से अधिक टैक्स वसूल करना चाहती हैं तथा बदले में आम लोगों को सुविधायें देकर अपने प्रति कृतज्ञ बनाती हैं। भारत में वर्तमान कर-प्रणाली अत्यंत भ्रष्टाचार प्रधान है। आप विचार करिये कि फल, सब्जी, अनाज, दवा, तेल, ईंट, खपड़ा जैसी हजारों ऐसी वस्तुओं पर कर लेना जिसकी खपत तथा उत्पादन का सघन जाल पूरे भारत में फैला हो, कितना भ्रष्टाचार युक्त है।

7610. वर्तमान व्यवस्था गरीबों की अनिवार्य आवश्यकता की वस्तुओं पर कर लगाती है और सुविधा की वस्तुओं पर छूट देती है। वह कर भी इस तरह चोरी-चोरी छुपकर तथा अप्रत्यक्ष रूप से लगाती है कि इन वस्तुओं के उत्पादक किसान और उपभोक्ता गरीब लोगों को बिल्कुल पता न चले और बीच में बिचौलियों के माध्यम से अरबों-खरबों रुपया वसूल लिया जाये।

7611. भारत जैसे देश में आर्थिक दृष्टि से मजबूत लोगों पर 'कर' लगाकर कमजोर लोगों को कर-मुक्त करना चाहिए। वर्तमान समय में इसका उलटा हो रहा है। सभी प्रकार के 'कर' हटाकर एक सुरक्षा-कर होना चाहिए, जो सम्पत्ति-कर के रूप में हो सकता है। किसी प्रकार की सुविधा के लिए सरकार को फीस लेने की व्यवस्था करनी चाहिए, टैक्स नहीं।

7612. हमने पश्चिम के व्यक्तिगत संपत्ति, मार्क्स का सामूहिक संपत्ति तथा गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के साथ इस तरह सामंजस्य किया कि व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार समाप्त होकर

सम्पत्ति परिवार की सामूहिक होगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार होगा।

7613. पोस्टकार्ड, मिट्टी तेल, बिजली, अखबार आदि वस्तुओं पर भारी सब्सीडी प्रदान करना एक राजनैतिक नाटक मात्र है। इनके नाटक की बानगी देखने लायक है कि पोस्टकार्ड, मिट्टी तेल, टेलीफोन का दाम बढ़ा तो वामपंथियों सहित सभी नेताओं ने संसद से सड़क तक भारी विरोध किया। किन्तु जब अनाज, तेलहन, दवा जैसी वस्तुओं पर भारी कर लगा या बढ़ाया गया तो कोई विरोध नहीं हुआ। गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी से हम जितना टैक्स वसूल कर रहे हैं और मध्यम उच्चवर्ग की सुविधा में उपयोग कर रहे हैं, यह तो सरासर अन्याय और अमानवीय है।

7614. शासन द्वारा टैक्स लगाने की अन्तिम सीमा क्या है? टैक्स समीक्षा का अधिकार किसे है? हम माँग करेंगे कि सरकार ऐसा सारा टैक्स लगाने, वसूलने या खर्च करने का सारा अधिकार स्थानीय इकाई को सौंप दे और जब तक ऐसा न हो, तब तक लोकतंत्र कि चौथी इकाई अर्थपालिका बनाकर टैक्स लगाने या खर्च करने का सारा अधिकार अर्थपालिका को दे दिया जाए।

7615. टैक्स का यह नियम है कि जो वस्तु गरीब लोग ज्यादा उपयोग करें, उसे कर-मुक्त और अमीरों की वस्तुएं कर-युक्त हों। भारत में इसके ठीक विपरीत है। यहां जो वस्तुएं गरीब लोग ज्यादा उपयोग करें उन पर अप्रत्यक्ष कर और प्रत्यक्ष सब्सिडी होती हैं, जबकि जो वस्तु बड़े लोग ज्यादा उपयोग करें, उन पर प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष सब्सिडी का प्रावधान होता है।

7616. सब जानते हैं कि रोटी, कपड़ा, मकान, दवा आदि आम उपभोक्ता

वस्तुए हैं तथा इनका गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी अधिक उपयोग करते हैं। दूसरी ओर कृत्रिम ऊर्जा गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी कम उपयोग करते हैं, अमीर, शहरी, बुद्धिजीवी लोग अधिक। सरकार रोटी, कपड़ा, मकान, दवा जैसी वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर लगाकर गरीबों को प्रत्यक्ष छूट देती है। दूसरी ओर कृत्रिम ऊर्जा पर कम कर लगाकर शहरी, अमीर, बुद्धिजीवी लोगों को सब प्रकार की अप्रत्यक्ष छूट देती है। साथ ही सरकारें अपने बजट में आवागमन को भी सस्ता करने की भरसक कोशिश करती हैं जबकि प्राथमिकता के क्रम में आवागमन रोटी, कपड़ा, मकान, दवा के बाद ही आता है। हम अपने बजट में इस स्थिति को बिल्कुल पलट देंगे।

7617. एक सिद्धांत है कि जब किसी वस्तु का मूल्य बढ़ता है, तो उसकी मांग घटती है। इस षड्यंत्र के अन्तर्गत ही लोग श्रम का मूल्य बढ़ाने की मांग करते हैं और सरकार षड्यंत्र के अंतर्गत ही बढ़ाती भी है। जिसका परिणाम होता है कि समाज में दो प्रकार के श्रम-मूल्य हो जाते हैं। मैं चाहता हूं कि सरकार न्यूनतम श्रम-मूल्य इतना ही घोषित करे जिस पर वह प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार देने के लिए बाध्य हो। इसका अर्थ यह हुआ कि बाजार के श्रम-मूल्य से अधिक की घोषणा वापस ले लेनी चाहिए एक तरफ श्रम-मूल्य की स्वाभाविक वृद्धि में बाधा पैदा करना तो दूसरी ओर कृत्रिम श्रम-मूल्य बढ़ाने का प्रयास बुद्धिजीवियों का षड्यंत्र मात्र है।

7618. मूल्य वृद्धि दो प्रकार की होती है :- 1. वास्तविक मूल्य वृद्धि, 2. पुनर्मूल्यांकन। मुद्रा-स्फीति के सूचकांक के आधार पर की गई मूल्य वृद्धि वास्तविक मूल्य वृद्धि न होकर पुनर्मूल्यांकन मात्र होती है, जिसका कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता। किन्तु सभी वस्तुओं

की कुल घट-बढ़ को मिलाकर जो औसत मूल्य वृद्धि शेष बच जाती है, वही मुद्रा-स्फीति होती है और महगांई का अर्थ भी वही है।

7619. सम्पूर्ण भारत में सरकार से कुल मिलाकर जितनी चोरी होती होगी, उसकी तुलना यदि समाज के सामाजिक कार्यों में स्वेच्छा से किए गए खर्च से करें, तो कौन आगे कौन पीछे, यह कहना कठिन है। हमारे सांसद, विधायक स्वेच्छा से अपना वेतन किसी भी सीमा तक बढ़ाने में शर्म महसूस नहीं करते, तो भारत की जनता टैक्स छिपाने में क्यों शर्म महसूस करे?

762 'कर' चोरी तथा काला धन

7620. 'कर' चोरी या काला धन रखना न कोई अपराध होता है, न ही अनैतिक। यह कार्य सिर्फ गैर-कानूनी होता है। सरकार की गलत 'कर' नीतियों के कारण टैक्स चोरी और काला धन संग्रह करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। आर्थिक विषमता को आर्थिक तरीके से न रोककर प्रशासनिक तरीके से रोकने की जिद्द ने काले धन की समानान्तर अर्थव्यवस्था खड़ी कर दी। सम्पत्ति कर के रूप में केवल एक प्रकार का 'कर' होना चाहिए- 'इनकम टैक्स खत्म, काला धन खत्म।'

7621. जीएसटी के रूप में भारत सरकार का कई टैक्स हटाकर एक टैक्स लाना अच्छा कदम है। इससे भ्रष्टाचार घटा तथा टैक्स की जटिलता कम हुई।

7622. नगद रुपया सिर्फ वस्तु विनिमय को सुविधाजनक बनाने का माध्यम मात्र है, कोई धन नहीं। लोग भ्रमवश उसे धन समझते हैं, क्योंकि उस रुपये में कोई वस्तु कभी भी स्वेच्छा से खरीदी जा सकती है। नगद रुपया अप्रत्यक्ष रूप से सरकार का एक प्रोमीसरी नोट मात्र ही है।

7623. नोटबंदी यदि सफल हो जाती तो उसका व्यापक प्रभाव पड़ता, यह निश्चित है। वर्तमान समय में औसत इनकम टैक्स 20% तथा लगभग इतना ही अप्रत्यक्ष कर होता है। इस 40% टैक्स से वर्तमान समय में करीब आधा सरकार को मिलता है तथा आधा बचा लिया जाता है। नोटबंदी सफल होती तो सिर्फ एक ही परेशानी होती कि वह 20% टैक्स बचाना कठिन हो जाता।

763 आवागमन

7630. भारत में स्वतंत्रता के बाद आबादी चार गुना बढ़ी है, तो आवागमन सौ गुना बढ़ गया है। सत्तर वर्षों में जीवन स्तर में बहुत सुधार हुआ तो दूसरी ओर आवागमन लगातार सस्ता होता गया। आवागमन सस्ता होने से लघु उद्योग बंद होते गए तथा बड़े उद्योग बढ़ते चले गए। आवश्यकताएं सुविधा में तथा सुविधाएं विलासिता में बदल गईं।

7631. आवागमन को बहुत महंगा होना चाहिए, क्योंकि आवागमन सस्ता होने से लघु उद्योग समाप्त होकर बड़े उद्योग बढ़ रहे हैं। मैं चाहता हूं कि बड़े उद्योग विस्तार करें, किन्तु लघु उद्योगों को समाप्त करके नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक तरीके से आगे बढ़ें।

7632. कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि से आवागमन महंगा होगा। इससे ग्रामीण उद्योग, लघ्यु उद्योग, हस्त उद्योग प्रोत्साहित होंगे, श्रम की मांग बढ़ेगी। अनेक ऐसे कार्य, जो मशीन और श्रम दोनों से हो सकते हैं, वे मशीनों से हटकर श्रम क्षेत्र की ओर आकर्षित होंगे, बेरोजगारी तीव्र गति से घटेगी। शहरी विकास घटेगा और ग्रामीण विकास बढ़ेगा।

7633. आवागमन यदि महंगा होता है और 10 प्रतिशत आवागमन प्रभावित होता है, तो 10 प्रतिशत हवाई जहाज वाले ट्रेन का, 10

प्रतिशत ट्रेन वाले बसों में, 10 प्रतिशत बस वाले साइकिल या पैदल सवारी करेंगे। मैं नहीं समझता कि पचीस प्रतिशत निम्न वर्ग को इससे क्या क्षति होगी। यह वर्ग प्रायः तो यात्रा करता ही नहीं और करता है, तो पैदल या साइकिल से। यह पूरी तरह श्रमजीवी है। मेरे विचार में कृत्रिम ऊर्जा की भारी मूल्य वृद्धि आवागमन को निरूत्साहित करेगी, जिससे पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम भी हो सकेगी और प्रदूषण निवारक उपाय हेतु धन भी उपलब्ध हो सकेगा।

764 उत्पादक-उपभोक्ता

7640. सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति उत्पादक भी होता है और उपभोक्ता भी, किन्तु कुछ लोग उपभोग की तुलना में उत्पादन अधिक करते हैं, तो अन्य लोग उत्पादन की तुलना में व्यवस्था। भारत में व्यवस्था में लगे लोगों ने उत्पादन में लगे लोगों का शोषण किया है। उपभोक्ता तो सभी होते हैं, चाहे वे उत्पादन में लगे हों या व्यवस्था में।

7641. दुनिया के विकसित देश कृत्रिम ऊर्जा उपलब्ध क्षेत्र हैं, तो भारत श्रम-बहुल देश। भारत में भी उत्पादन तो बढ़ा, किन्तु मानवीय श्रम और पशुओं को उत्पादन से दूर करके। इसलिए अन्य देश उत्पादन वृद्धि में हमसे आगे निकल गए। अन्य कई देशों में उत्पादित वस्तुए आज भी भारत से सस्ती है जिनका हम आयात करते हैं।

7642. भारत को उपभोक्ताओं की तुलना में उत्पादकों की अधिक चिन्ता करनी चाहिए, किन्तु कार्य इसके विपरीत हो रहा है। अब भारत को सुखी भारत की तुलना में आत्मनिर्भर भारत की दिशा में चलना चाहिए। इसके लिए :- (1) उत्पादन बढ़ाना तथा उपभोग घटाना होगा। (2) आयात घटाना तथा निर्यात बढ़ाना होगा। (3) उपभोक्ता वस्तुओं को महंगा और उत्पादन इकाईयों को प्रोत्साहित

करना होगा। (4) श्रम कानून तथा उपभोक्ता कानून बिल्कुल समाप्त करना होगा।

770 कृषि

7700. एक बार भी किसी ने कृषि उत्पादन टैक्स मुक्ति की बात नहीं की, न ही कृषि उत्पादन मूल्य वृद्धि की बात रखी।

7701. कृषि को उद्योग का दर्जा दिया जाए, यह भी एक उचित माँग है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संकट से उबरने देने की जरूरत है, इससे मैं सहमत हूं।

7702. भारत में पिछले कुछ वर्षों से कृषि क्षेत्र लगातार अपेक्षाकृत घटता जा रहा है, जो चिन्ताजनक है। भारत में कृषि उत्पादों का बाजार मूल्य और सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम मूल्य का अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है, जो चिन्ताजनक है।

7703. भारत पहले के जमाने में खेती की वस्तुओं का आयात करता था। बड़ी मुश्किल से हमारे लोगों का पेट भर पाता था। आज भारत कृषि उत्पादन के निर्यात की स्थिति में है। दाल और तेल हम पहले की अपेक्षा कम मात्रा में मंगा रहे हैं।

7704. आधुनिक तरीके से खेती लाभदायक व्यवसाय है और परंपरागत तरीके की खेती नुकसानदेह रही है।

7705. भारत में किसान आत्महत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती रही हैं। मजदूर या उपभोक्ता की आत्महत्या नगण्य है। भारत में कृषि उत्पादन भी तेजी से बढ़ा है। परम्परागत कृषि अलाभकर है और व्यावसायिक कृषि लाभकर। परम्परागत कृषि करने वालों को खेती बेचकर या तो मजदूरी करनी चाहिए या अन्य व्यवसाय। किसानों को दी जाने वाली सरकारी सहायता या कर्ज माफी किसानों की आत्महत्या वृद्धि में सहायक होती है।

7706. स्वतंत्रता के बाद एक मूल रुपया प्रतिदिन मजदूरी थी और सैंतीस मूल पैसे प्रति किलो गेहूं। आज प्रतिदिन मजदूरी ढाई गुनी बढ़कर ढाई मूल रुपए हो गई, तो गेहूं का मूल्य आधा होकर अठारह मूल पैसे प्रति किलो। परम्परागत खेती अलाभकर होना प्रत्यक्ष है। कृषि उत्पादन का मूल्य तेजी से बढ़ना चाहिए।

7707. भारत सरकार कृषि उत्पादन पर भारी टैक्स लगाती है और उपभोक्ताओं को राहत देती है। यह निर्णय विपरीत है। खेती को लाभदायक व्यवसाय के रूप से विकसित होना चाहिए।

780 औद्योगीकरण

7800. औद्योगीकरण से रोजगार पर दो प्रभाव पड़ते हैं - पहला रोजगार पर आकर्षण, दूसरा रोजगार का विकर्षण। कोई भी बड़ा उद्योग जितने क्षेत्र में रोजगार विकर्षण करता है या देता है, उसे रोजगार सहायक क्षेत्र मानते हैं और जितने क्षेत्र से रोजगार आकर्षण करता है या कम करता है उसे रोजगार शोषण क्षेत्र मानते हैं। हमें अपने औद्योगिक विस्तार को रोकने की कोई आवश्यकता नहीं है, किन्तु हम ऐसी नीति तो अवश्य ही अपना सकते हैं कि हमारा औद्योगिक विस्तार उन्हीं क्षेत्रों में हो, जो काम श्रम-संभव न हो।

781 पर्यावरण प्रदूषण

7810. विश्व की प्रमुख समस्याओं में पर्यावरण प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या है। भौतिक उन्नति की प्रतिस्पर्धा पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है। ग्लोबल वार्मिंग का सामान्यतया अर्थ पर्यावरण की ताप-वृद्धि माना जाता है। ग्लोबल वार्मिंग का वास्तविक अर्थ मानव-स्वभाव ताप-वृद्धि होना चाहिए। पर्यावरण की ताप-वृद्धि

की तुलना में मानव-स्वभाव ताप-वृद्धि अधिक घातक भी है और व्यापक भी। कोरोना की बीमारी ने प्रमाणित कर दिया है कि पर्यावरण प्रदूषण तथा ताप-वृद्धि कृत्रिम है, प्राकृतिक नहीं।

7811. पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु वन लगाना ही पर्याप्त नहीं, प्रदूषण फैलाने पर नियंत्रण होना भी आवश्यक है। एक ट्रैक्टर की नली से निकलने वाले आठ घण्टे के धुए को साफ करने में कई सौ पेड़ों की आवश्यकता होती है। डीजल, पेट्रोल आदि के प्रयोग में कमी पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से उचित कदम है। औद्योगीकरण को संतुलित करना पर्यावरण प्रदूषण निवारण का श्रेष्ठतम उपाय है।

7812. मोटर साइकिल के साईलेन्सर से निकलने वाला धुआँ 'जो प्रदूषण फैलाता है' उसका प्रभाव दूर करने के लिए रोटी, कपड़ा, दवा आदि पर टैक्स लगाया जाता है, यह गलत है। जिस वस्तु के उपयोग से प्रदूषण अधिक होता है, उस प्रदूषण को ठीक करने के लिए उसी वस्तु पर अधिक टैक्स लगाना चाहिए।

7813. यदि वन उत्पादन को पूरी तरह कर-मुक्त कर दिया जाये तो भारत में वनों का क्षेत्रफल अशासकीय क्षेत्र में स्वतः ही तेजी से बढ़ जाएगा। वनों के सम्बन्ध में भारत वन-सुरक्षा की नीति पर चल रहा है, जबकि उसे वन-विस्तार की नीति पर चलना चाहिए। पर्यावरण की दृष्टि से वन-विस्तार आवश्यक है, जो वन-सुरक्षा की नीतियों को बदले बिना संभव नहीं। वर्तमान शौकिया पर्यावरण प्रेमियों की नासमझी भी वन-विस्तार में बाधक है। कृत्रिम ऊर्जा पर पर्यावरण कर लगाकर तथा व्यक्तिगत वनों पर प्रतिवर्ष की पर्यावरण सब्सिडी वन क्षेत्र के विस्तार में सहायक हो सकती है।

782 न्यूनतम मूल्य

7820. यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई सरकार किसी वस्तु का न्यूनतम मूल्य तो घोषित कर दे, किन्तु उस वस्तु को घोषित मूल्य से कम कीमत पर बिकते हुए भी अपना दायित्व न समझे और उसे यों ही बिकने दे। आज हमारी सरकार न्यूनतम श्रम-मूल्य घोषित कर देती है, किन्तु उस घोषणा पर रोजगार नहीं देती। हमारी सरकार कृषि उत्पादन का भी न्यूनतम मूल्य घोषित कर देती है, लेकिन इस मूल्य पर खरीदती नहीं है।

783 अनुदान सब्सिडी

7830. सब्सिडी की भीख अल्पकालिक समाधान हो सकती है, न्यायोचित और दीर्घकालिक समाधान नहीं।

784 गांव और शहर

7840. विकास के नाम पर समाज में अलग-अलग समूह बनाये गये हैं और ये समूह कालान्तर में वर्ग का रूप लेकर समाज में समस्याएं भी पैदा करते हैं और विघटन भी।

7841. सस्ता पानी, सस्ती बिजली, सस्ता डीजल लेकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ तोड़ने वाले शहरी लोगों के पक्ष में ऐसा तर्क देना कि टैक्स शहर के लोग देते हैं, पूरी तरह गलत ही नहीं, आपत्तिजनक भी है। यदि एक बार गाँव अपने उत्पादन पर कर लगा दे तो शहरों का अस्तित्व ही खतरे में आ जायेगा।

7842. शिक्षा हो या स्वास्थ्य, सभी सुविधाएं शहरों से शुरू होती है और धीरे-धीरे इस तरह गाँव तक पहुंचती हैं, जिस तरह पुराने जमाने में बड़े लोग भोजन करने के बाद गरीबों के लिए जूठन छोड़ देते थे।

भ्रष्टाचार और अनैतिकता जैसी बुराई गांवों से शहर की ओर न आकर शहरों से गांवों की ओर जा रही है।

7843. गांव के रोजगार में श्रम का मूल्य शहरों की तुलना में बहुत कम होता है। यहां तक कि सरकार द्वारा घोषित गरीबी रेखा में भी शहर और गाँव के बीच भारी अंतर किया गया है। गांव के व्यक्ति की गरीबी रेखा का आंकलन 28रुपये प्रतिदिन है तो शहर का 32रुपये प्रतिदिन है।

7844. कई प्रकार के प्रयत्न हो रहे हैं, किन्तु शहरों की आबादी बढ़ती ही जा रही है, क्योंकि समाधान करने वालों की नीयत साफ नहीं है। शहरी आबादी घटाने का सबसे अच्छा तरीका कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि ही है। हमारे देश के बुद्धिजीवियों को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

7845. यदि गांव और शहर की तुलना करें तो भौतिक सुविधा, प्रगति के संसाधन, चालाकी और अपराध के मामले में शहर बहुत आगे है और गांव बहुत पीछे। दूसरी ओर शराफत, नैतिकता, मानवता तथा कानून से भय के मामले में गांव बहुत आगे हैं और शहर बहुत पीछे। सभी गुणों में आगे होते हुए भी विकास की परिभाषा में गांव को बैकवर्ड कहा जाता है।

7846. गांव की आबादी का शहरों की ओर पलायन बहुत घातक है। इसे हर हालत में रुकना चाहिए। कृत्रिम ऊर्जा मूल्य वृद्धि इसका सबसे अच्छा समाधान है।

785 बढ़ती आबादी

7850. बढ़ती आबादी एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है, इसे भारत की सभी समस्याओं का कारण बताना भ्रम फैलाने के अलावा कुछ नहीं है।

❐

8

व्यक्तिगत

800 व्यक्ति और परिवार

8000. परिवार की संशोधित संरचना के अंतर्गत परिवार की संवैधानिक परिभाषा इस तरह बनाई गई - "संयुक्त सम्पत्ति और संयुक्त उत्तरदायित्व के आधार पर एक साथ रहने हेतु सहमत व्यक्तियों का समूह"। नई व्यवस्था में व्यक्ति समाज की एक इकाई न होकर व्यक्ति परिवार की इकाई होगा और परिवार समाज का।

8001. परिवार की अपेक्षा गांव को, गांव की अपेक्षा राष्ट्र को और राष्ट्र की अपेक्षा समाज को सशक्त करना चाहिए। परिवार, गांव, जिला, प्रदेश आदि से तो राष्ट्र ऊपर की इकाई है, किन्तु समाज से राष्ट्र ऊपर न होकर नीचे ही होता है।

8002. आज सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि परिवार के पारिवारिक मामलों में समाज के हस्तक्षेप करने की सीमा क्या हो और समाज के सामाजिक मामलों में कानून के हस्तक्षेप की सीमा क्या हो? जब कोई परिवार इन दोनों सीमाओं को तोड़ता है, तभी

कानून को हस्तक्षेप करना चाहिए। वर्तमान स्थिति तो यह है कि कानून निर्माता न परिवार की सीमाओं को समझ रहे हैं, न समाज की। इनकी स्वयं की क्षमता और चरित्र भी परिवारों और समाज के औसत चरित्र की अपेक्षा कमजोर ही है।

8003. व्यक्ति का आचरण किसी वर्ग के साथ जोड़कर देखना गलत परम्परा है। जब नारी एक माँ होती है, तब वह पूज्य होती है और जब बेटी होती है, तब वह संरक्षिता होती है, अमानत होती है और जब पत्नी होती है, तब सहभागी। पत्नी कभी सहयोगी नहीं होती, बल्कि सहभागी होती है। सहभागी का अर्थ होता है बराबरी और सहयोगी का अर्थ होता है पीछे चलने वाला। अत: उसे सहयोगी कहना गलत है।

801 व्यक्ति

8010. मनुष्य एक स्वतंत्र इकाई है, जिसे प्राकृतिक रूप से जीने का मौलिक अधिकार स्वतः प्राप्त है। यह अधिकार कोई भी संविधान छीन नहीं सकता। भारत में भी यही व्यवस्था है। मनुष्य को मौलिक अधिकार संविधान प्रदत्त नहीं है और न ही संविधान उसकी व्याख्या कर सकता। यह तो मनुष्य को प्राकृतिक रूप से प्राप्त हैं, जिनकी सुरक्षा की गांरटी मात्र संविधान देता है।

8011. वासना में व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त होकर शारीरिक भूख हावी हो जाती है। ऐसे समय में धर्म, जाति, परिवार, उम्र, न्याय अन्याय, गरीब-अमीर, लोकलाज, सामाजिक, पारिवारिक नियम आदि की सीमाएं टूट जाती हैं।

8012. व्यक्ति के झुकाव के दो आधार होते हैं:- 1. न्याय 2. अपनत्व।

न्याय के पक्ष में झुकना निष्पक्षता मानी जाती है तथा अपनत्व के पक्ष में झुकना पक्षपात।

8013. आम आदमी तीन वर्गों में बांटे जा सकते हैं:- 1. निम्न, 2. मध्यम और 3. उच्च। निम्न वर्ग पर महंगाई का कोई विशेष प्रभाव नहीं होता है। क्योंकि जिस तरह वस्तुओं के मूल्य बढ़ते हैं, उसी तरह उसका श्रम-मूल्य भी बढ़ता है।

8014. मैं सेक्स संबंध को दो व्यक्तियों के बीच का व्यक्तिगत संबंध मानता हूं, जिसमें परिवार और समाज अपने आंतरिक नियम बना सकते हैं, किन्तु सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती। परिवार और समाज व्यक्ति को अनुशासित तो कर सकता है, किन्तु शासित नहीं।

8015. व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं:- 1. सामाजिक 2. असामाजिक और 3. समाज विरोधी। असामाजिक लोगों के चरित्र-निर्माण का कार्य समाज करता है। समाज विरोधी तत्वों पर नियंत्रण का कार्य तंत्र का होता है, जिसे हम अभी सरकार कहते हैं। यह तंत्र भी समाज में से ही समाज के द्वारा बनाया जाता है। इस तंत्र का कार्य न समाज पर नियंत्रण का है, न असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण का। सिर्फ इसका एक ही कार्य है और वह है, समाज विरोधी तत्वों पर नियंत्रण करना। चरित्र-निर्माण समाज का काम है, सरकार का नहीं। किन्तु सरकार सामाजिक लोगों पर भी नियंत्रण करना चाहती है और असामाजिक लोगों पर भी।

8016. भारत में तीन प्रकार के लोग हैं:- 1. श्रम प्रधान 2. बुद्धि प्रधान और 3. धन प्रधान। व्यक्ति श्रम और बुद्धि का उपयोग करता है, किन्तु

वह अपने श्रम और बुद्धि को किसी अन्य समय में उपयोग करने के लिए संचित नहीं कर सकता। श्रम और बुद्धि का रूपांतरण ही संपत्ति के रूप में होता है। यह सच है कि सभी प्राकृतिक संसाधनों पर सब का समान अधिकार है, किन्तु यह भी सच है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसाधन के रूपान्तरण करने का भी स्वतंत्र अधिकार है। इसीलिए संपत्ति को मौलिक अधिकार माना गया है।

8017. प्रत्येक व्यक्ति का सोच और चरित्र अलग-अलग होता है। दुनिया के कोई भी दो व्यक्ति सोच, चरित्र, क्षमता और योग्यता के मामले में एक समान नहीं होते, उसे किसी वर्ग के साथ बाँधना ठीक नहीं।

8018. समाज में चार प्रकार के व्यक्ति होते हैं:- (1) विचारक, (2) सुरक्षा कर्त्ता, (3) व्यवस्था कर्त्ता और (4) श्रमिक। इस व्यवस्था को ही हम वर्ण व्यवस्था कहते हैं।

8019. प्रत्येक व्यक्ति का यह स्वाभाविक संस्कार होता है कि वह ऊपर वालों से अधिकतम स्वतंत्रता का प्रयास करता है तथा अपने से नीचे वालों को कम से कम स्वतंत्रता देना चाहता है। यह व्यक्ति की एक बुराई है, इससे बचना चाहिए।

8020. व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं:- 1. धर्म प्रधान 2. सामान्य और 3. धर्मविरोधी। पहले प्रकार के लोग धार्मिक, दूसरे प्रकार के लोग अधार्मिक और तीसरे प्रकार के अपराधी होते हैं।

8021. जब कोई व्यक्ति आलोचना और आलोचना से बढ़कर विरोधी और विरोध की सीमाओं को भी लांघ कर आगे बढ़ जाता है, तब उसे शत्रु की श्रेणी में रखा जाता है। स्वाभाविक है कि उसके प्रति समीक्षक या आलोचक के समान व्यवहार नहीं होना चाहिए।

लेकिन यदि कोई व्यक्ति विरोधी भी है तो विरोधी को शत्रु मानना ठीक नहीं है।

8022. व्यक्ति दोषी नहीं है, बल्कि जब किसी व्यक्ति को अतिरिक्त शक्ति अर्थात् पावर मिलता है तब उसे सदुपयोग अथवा दुरूपयोग के अवसर मिलते हैं। ऐसा अधिकार प्राप्त व्यक्ति या तो स्वयं चरित्रवान हो तब सदुपयोग कर सकता है अथवा उसे किसी अन्य का भय हो तब।

8023. किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत मामले में अनावश्यक टिप्पणी करना, उसकी स्वतंत्रता का अतिक्रमण माना जाये।

802 व्यक्ति और समाज

8024. समाज के बिना व्यक्ति का जीना कठिन होता है, क्योंकि सुचारू जीवन के लिए, जिस व्यवस्था की आवश्यकता होती है वह समाज ही दे सकता है, कोई और नहीं। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति की यह मजबूरी है कि वह परिवार, गांव, देश और समाज की नागरिकता स्वीकार करे। कोई व्यक्ति अकेला रह ही नहीं सकता है।

8025. मनुष्य किसी देश का गुलाम मात्र नहीं है। वह विश्व समुदाय की एक इकाई है। उसके कुछ प्राकृतिक अधिकार हैं, जिनकी सुरक्षा विश्व समुदाय का दायित्व है। यदि राज्य भी उसके ऐसे अधिकार पर आक्रमण करे, तो विश्व समुदाय उसकी सुरक्षा के लिए राज्य को मजबूर कर सकता है।

8026. मैं सहमत हूँ कि मनुष्य एक भौतिक प्राणी है, एक सामाजिक प्राणी भी है, किन्तु आध्यात्मिक प्राणी है या नहीं यह स्पष्ट नहीं है। संभव है कि कुछ लोग आध्यात्मिक हों तथा कुछ लोग ना हों। समाज तथा परिवार से प्राप्त शिक्षा उसके चरित्र-निर्माण में बहुत सहायक

होती है, किन्तु स्कूल से प्राप्त शिक्षा चरित्र पर प्रभाव डालती ही है, ऐसा स्पष्ट नहीं है।

8027. सामाजिक शक्ति भी किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह के पास संग्रहित न होकर परिवार, गाँव, जिला, प्रदेश, देश और समाज तक विभाजित होनी चाहिए।

8028. मेरे विचार से व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई है, जो स्वतंत्र होते हुए भी परिवार, गांव, जिला, प्रदेश, देश और विश्व समाज के साथ जुड़ा हुआ है। इसका अर्थ हुआ कि समाज आवश्यक होते हुए भी व्यक्ति के मूल अधिकारों में कटौती नहीं कर सकता। अर्थात् यदि समाज को किसी व्यक्ति की जान की आवश्यकता है, तो वह व्यक्ति की सहमति के बिना उसकी जान नहीं ले सकता। मूल अधिकारों पर आक्रमण कोई भी सरकार कभी कर ही नहीं सकती। सारा विश्व मिलकर भी व्यक्ति के मूल अधिकारों में कभी कटौती नहीं कर सकता, जब तक उस व्यक्ति ने किसी अन्य व्यक्ति के मूल अधिकारों पर आक्रमण ना किया हो।

8029. हजारों वर्ष से यह बहस चली आ रही है कि व्यक्ति और समाज के बीच व्यक्ति स्वातंत्र्य और सामाजिक नियत्रंण के बीच का अनुपात और उसकी सीमा रेखा क्या हो? समाज के लोग व्यक्ति के व्यक्तिगत मामलों में नैतिकता की दुहाई देकर अधिक नियंत्रण करना चाहते हैं, जबकि व्यक्ति ऐसे नियंत्रण को तोड़ कर अधिक से अधिक स्वतंत्र रहना चाहता है। मेरे विचार से दोनों ही गलत है।

8030. वर्तमान समय में राज्य ने समाज को निगल लिया है। राज्य निरंतर मजबूत और समाज निरंतर कमजोर हो रहा है। राज्य स्वयं को समाज घोषित करने लगा है।

8031. व्यक्ति, परिवार और समाज एक-दूसरे के पूरक भी होते हैं और नियंत्रक भी। तीनों में से किसी को भी अनियंत्रित अधिकार नहीं है और न ही तीनों में से कोई भी अधिकार शून्य होता है।

803 व्यक्ति और नागरिक

8032. व्यक्ति समाज का और नागरिक राष्ट्र का अंग होता है। राष्ट्र और राज्य के बीच क्या फर्क है, वह भिन्न विषय है, किन्तु समाज और राष्ट्र बिल्कुल भिन्न-भिन्न होते हैं। राष्ट्र समाज का एक भाग होता है, प्रकार नहीं।

8033. भारत के प्रत्येक व्यक्ति को भी समान स्वतंत्रता होनी चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक को भी। इन अधिकारों को ही मूल अधिकार कहते हैं। किन्तु किसी भी व्यक्ति या नागरिक को न सामाजिक मामलों में समान अधिकार होते हैं और न ही संवैधानिक मामलों में। तंत्र पर संविधान का और संविधान पर समाज का नियंत्रण होता है। वर्तमान समय में तंत्र ने संविधान पर नियंत्रण कर लिया है।

8034. व्यक्ति मानव मात्र को माना जा सकता है और नागरिक उसी को माना जाता है जिसे राज्य और संविधान ने नागरिक अधिकार दिया है।

804 व्यक्ति और व्यवस्था

8040. व्यक्ति की नीयत पर विश्वास तो आवश्यक है, किन्तु वह विश्वास अंतिम सीमा तक नहीं हो सकता। ऐसी अंतिम सीमा से ऊपर किसी न किसी व्यवस्था का नियंत्रण होना ही चाहिए।

8041. व्यक्ति पर कानून का, कानून पर तंत्र का, तंत्र पर संविधान का और संविधान पर समाज का नियंत्रण होना चाहिए।

8042. न व्यक्ति को ही निर्णय का अन्तिम अधिकार देना ठीक है, न परिवार और न ही समाज को। तीनों का एक-दूसरे पर आंशिक अंकुश हो। परिवार और समाज को पूरी तरह किनारे करके बालिग स्त्री-पुरूष मिलन की असीम स्वतंत्रता मेरे विचार में उचित नहीं।

805 व्यक्ति और संगठन

8050. जब कोई व्यक्ति किसी संगठन से जुड़ जाता है, तो वह उस संगठन के प्रति प्रतिबद्ध हो जाता है, अनुशासन में बंध जाता है। संगठन से जुड़ जाने के बाद व्यक्ति की स्वतंत्रता तब तक संयुक्त हो जाती है, जब तक वह उस संगठन से अलग नहीं हो जाता। परिवार, गांव, राष्ट्र और समाज ऐसा ही संगठन है, लेकिन वर्तमान समय में इनके अतिरिक्त जो संगठन बने हुए हैं, वह गलत है।

8051. किसी आम सभा में कोई व्यक्ति समय लेकर और समय-सीमा का ध्यान रखकर ही बोल सकता है। यदि ऐसे अवसर पर कोई व्यक्ति अपनी सीमा का उल्लंघन करे तो आयोजक उसे रोक सकता है।

806 व्यक्ति और इकाई

8060. व्यक्ति के ऊपर दो प्रकार की इकाइयाँ होती हैं 1. परिवार, गांव, जिला, प्रदेश, देश, विश्व और 2. परिवार, कुटुम्ब, जाति, वर्ण, धर्म और समाज। पहली व्यवस्था को कानून और राज्य का संरक्षण प्राप्त है, तो दूसरी को संस्कारों और समाज का। वर्तमान समय में दूसरे प्रकार की व्यवस्था चल रही है, जिसे छोड़कर पहले प्रकार की व्यवस्था चलनी चाहिए, जाति वर्ण धर्म के आधार पर संगठन नहीं बनना चाहिए।

8061. नेहरू जी परिवार, जाति, वर्ण और धर्म व्यवस्था को अस्वीकार

करके गांव, जिला, प्रदेश और राष्ट्र व्यवस्था के पक्षधर थे, तो अम्बेडकर परिवार, जाति, वर्ण और धर्म की नई व्यवस्था के पक्षधर। बाद में राजनीतिक स्वार्थ के लिए नेहरू जी अंबेडकर के साथ हो गए। वर्तमान जाति, वर्ण और धर्म व्यवस्था को निष्क्रिय तो किया जा सकता है, ध्वंस नहीं।

8062. न धर्म प्रधान इस्लाम का सपना पूरा होगा, न धर्म प्रधान सावरकरवादियों का। जाति, धर्म से दूर धर्म-निरपेक्षता को आधार घोषित करके परिवार, गांव और जिले को स्वायत्तता देने के संवैधानिक प्रयास ही आगे की राह बन सकते हैं। भारत तो स्पष्ट रूप से इस राह पर चलता दिख रहा है। यदि कोई इशारा न समझे तो यह उसकी भूल है।

8063. असंतुलन का आधार भारतीय संविधान का वह स्वरूप है, जो मूल रूप से व्यक्ति, परिवार, राज्य और समाज के आधार पर न बनकर व्यक्ति, जाति, धर्म और राज्य के रूप में बना। अर्थात् संविधान से परिवार और समाज को बाहर निकाल कर जाति और धर्म को शामिल कर दिया गया।

8064. व्यक्ति से लेकर विश्व मानव समाज तक एक कड़ी जुड़ती हुई होनी चाहिए जो एक-दूसरे की पूरक भी हो और नियंत्रक भी। इन सब इकाइयों की अपनी-अपनी निश्चित सीमाएं हों, जिस सीमा का कोई इकाई यदि अतिक्रमण करे, तो ऊपर की इकाई उस अतिक्रमण को रोके और यदि वह इकाई अपनी सीमा में हो, तो कोई भी अन्य इकाई उसमें हस्तक्षेप न करे। ऐसी इकाइयाँ घोषित करके उनके अधिकारों का विभाजन हो जाना ही उचित व्यवस्था है।

8065. व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण-दोषों का आकलन करके उसका वर्ग घोषित होना चाहिए न कि वर्ग के अनुसार गुण-दोष। वर्ग के अनुसार गुण-दोष का निर्धारण करना घातक परंपरा है।

810 महात्मा गांधी और अहिंसा

8100. गांधी जी अहिंसा के पथ में इसलिए सफल हुए, क्योंकि उन्होंने समाज को सुरक्षा का आश्वासन दिया था। अहिंसा सैद्धांतिक रूप से भी उपयोगी मानी जा रही थी और व्यावहारिक धरातल पर भी।

8101. सम्पूर्ण भारत में लगातार हिंसा के प्रति समर्थन बढ़ रहा है तथा अहिंसा को असफल सिद्धांत माना जाने लगा है। पूरे देश में नरेन्द्र मोदी की माँग यह सिद्ध करती है कि कहीं ना कहीं गांधी के विचारों पर अविश्वास बढ़ा है। यह बिडबंना ही है कि जिस गुजरात ने गांधी के माध्यम से दुनिया को अहिंसा का संदेश दिया, वही गुजरात अब दुनिया को मोदी के नेतृत्व में अहिंसा की सुरक्षा के लिए हिंसा का संदेश दे रहा है।

8102. गांधी और महावीर अर्थात् जैन की अहिंसा में बहुत फर्क था। गांधी अहिंसा को शस्त्र और मार्ग मानते थे, जबकि महावीर अहिंसा को सिद्धांत मानते थे। मैं भी अहिंसा को मार्ग मानता हूं, सिद्धांत नहीं। महावीर की अहिंसा ने कायरता पैदा की तो गांधी की अहिंसा ने संघर्ष की प्रेरणा दी।

8103. गांधी जी की अहिंसा सफल हुई, इसका कारण वे खुद के साथ प्रामाणिक थे। उन्होंने खुद को कभी धोखा नहीं दिया, न ही खुद से झूठ बोला। आज हिंसा बढ़ी है, क्योंकि हम खुद के साथ प्रामाणिक नहीं हैं।

8104. यदि गांधी जी ने प्रशासन में न्यूनतम बल-प्रयोग की बात को शुरू से ही अस्वीकार करके उचित बल-प्रयोग की लाईन ली गई होती, तो आज समाज में हिंसा के पक्ष में जो वातावरण बना हुआ है, वह नहीं बनता। गांधी जी की यह भूल समाज के लिए बहुत भारी पड़ी।

8105. जो गांधी पूरी तरह अहिंसा के पक्षधर थे, वहीं सर्वोदय, हिंसा के समर्थक साम्यवादियों तथा हिंसक नक्सलवादियों के पक्ष में भी खड़ा दिखता है। क्या यह विचारणीय नहीं है, कि पचहत्तर वर्षों के बाद भी गांधी का गुजरात, हिंसा के समर्थक संघ के मोदी का समर्थक हो गया।

8106. गांधी जी ने दो बातें एक साथ कही थी – 1. अन्याय को बर्दाश्त करना कायरता का प्रतीक है। 2. किसी भी अन्याय के विरुद्ध बल-प्रयोग, गुण्डागर्दी का प्रतीक है। वर्तमान समय में इन दोनों को विपरीत कहा जा रहा है। एक तरफ अन्याय के विरुद्ध चुप रहने की सलाह दी जा रही है, तो दूसरी तरफ अन्याय के विरुद्ध बल-प्रयोग की भी वकालत हो रही है।

8107. बहुत दुःख की बात है कि सत्तर वर्ष बाद भी गांधी के देश में हिंसा और गांधी विचारों का विरोध बढ़ रहा है तथा गांधीवादी कहे जाने वाले लोग तर्क से उत्तर न देकर बल-पूर्वक या कानून से रोकने का प्रयास करते हैं। जो लोग सत्तर वर्षों तक गांधी के नाम पर सत्ता में बने रहे तथा गांधीवादी संस्थाओं के नाम पर देश भर में सब प्रकार की सुविधाएँ मिलने के बाद भी गांधी-विरोधी लहर को नहीं रोक सके, ऐसे निकम्मे लोगों को अपनी सोच और कार्य-प्रणाली पर फिर से विचार करना चाहिए।

811 गांधी विचार

8110. गली-गली में जाति प्रथा, छुआछूत, महिला-उत्पीड़न, अमीरी और गरीबी रेखा के नाम पर दुकानें खुली हुई हैं और लगभग सबके तार राजनैतिक सत्ता के प्रयत्न से जुड़े दिखते हैं। सत्ता धन के साथ सामंजस्य बिठाकर चल रही है, तो पूंजीपति भी सत्ता को अपने हाथ में रखने का पूरा प्रयास कर रहे हैं। सच बात यह है कि सत्ता समाज के हर क्षेत्र में अपना प्रभाव डाल रही है और समाज को अपना गुलाम बनाती जा रही है। आज तक दुनिया में ऐसा कोई अजूबा नहीं हुआ है, जहाँ सत्ता संघर्ष और व्यवस्था की स्थापना के प्रयत्न मिलकर एक साथ चल सकें।

8111. होशियारी जब सीमा से बहुत आगे बढ़ जाती है, तो धूर्तता में परिवर्तित हो जाती है और शराफत जब सीमा से बहुत आगे बढ़ती है, तो मूर्खता या बेवकूफी में बदल जाती है। इसीलिए गांधी जी ने हमेशा ही समझदारी को बहुत महत्व दिया।

8112. कट्टरवादी विचारों के लोग लम्बे समय तक भूल को या तो प्रचार की ताकत पर सही सिद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं या घुमा-फिरा कर उसकी भरपाई करने का प्रयास करते हैं। गांधी ऐसे प्रयत्नों को ही सही मानते थे। गांधी बिल्कुल साफ बात करते थे।

8113. गांधी समाजवाद के प्रबल पक्षधर थे, भले ही उन्होंने समाजवाद नाम नहीं दिया। गांधी जी ने 'समाज सर्वोच्च' का नारा दिया। उन्होंने अहिंसक तरीके से अकेन्द्रित सत्ता को लक्ष्य बताया। आर्थिक विषमता को उन्होंने दूसरे क्रम पर रखा। इसीलिए गांधी ने ग्राम स्वराज का यह अर्थ बताया, जिसमें राजनीतिक और आर्थिक

सत्ता का अधिकतम नियंत्रण और संचालन गांव के हाथ में हो।

8114. कोई भी विचारक कभी किसी संगठन से नहीं जुड़ता। गांधी जी एक विचारक थे। गांधी जी कभी किसी संगठन के सदस्य नहीं बने। वे कभी किसी अनुशासन से नहीं बंधे। यहां तक कि गांधी जी कांग्रेस की सदस्यता से भी त्यागपत्र दे दिए थे।

8115. गांधी की छवि कानून से नहीं बचेगी, न ही विरोध करने से बचेगी। बल्कि गांधी की छवि तर्कों के आधार पर समाज में वैचारिक धरातल मजबूत करने से बचेगी। दुर्भाग्य से ऐसी तर्कशक्ति न सावरकरवादियों के पास है न गांधीवादियों के पास। मेरे विचार में गांधी का चिंतन एक ऐसा व्यावहारिक धरातल देता है, जिसके समक्ष कोई अन्य टिक नहीं पाता। मेरा स्पष्ट मत है कि भारत को कट्टरवादी हिन्दुत्व और विदेशों की अन्धाधुंध नकल का मार्ग छोड़कर अपने भारतीय यथार्थ को देश-काल और परिस्थिति की कसौटी पर कसकर नया मार्ग तलाशना चाहिए। गांधी हमारे आदर्श थे, आज भी हैं और भविष्य में भी मार्गदर्शक बने रहेंगे।

8116. वर्तमान में जो दो विपरीत विचारधाराएं भारत में दिख रही है, उनमें एक गांधी का स्पष्ट विरोध करके आगे बढ़ रही है, तो दूसरी गांधी को माला पहनाकर, अपने नाम के साथ गांधी शब्द जोड़कर, खादी और चरखा का ढोंग करके तथा गांधी विचारधारा के विपरीत चलकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। न गांधी नाम रखने से किसी का भला होने वाला है और न ही गांधी को मानने मात्र से। गांधी को समझने की जरूरत है।

8117. मैं मानता हूं कि महात्मा गांधी ऐसे महापुरुषों में से है, जिनके

विचार तब तक अनुकरणीय हैं, जब तक कोई अन्य महापुरुष समाज में स्थापित न हो जाये। किन्तु मैं गांधी के विचार उनके जाने के बाद विचारकों के लिए बिना चिन्तन-मनन के ही अक्षरक्षः स्वीकार करने अथवा प्रचारित करने के विरुद्ध हूं।

8118. गांधी स्वयं एक विचारक थे। यदि उन्होंने भी स्वतंत्र विचार मंथन छोड़कर स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, गोखले या तिलक आदि का अक्षरशः अनुकरण किया होता, तो न देश की स्वतंत्रता में उनका निर्णायक नेतृत्व हो पाता, न ही गांधी स्वयं को गांधी सिद्ध कर पाते।

8119. गांधी और श्रीराम शर्मा मौलिक चिन्तक थे। गांधी के उत्तराधिकारियों में न मौलिक चिंतन की शक्ति है और न इच्छा है। यही स्थिति श्रीराम शर्मा जी के उत्तराधिकारियों के साथ है।

8120. गांधी ने या स्वामी दयानंद जी ने सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए समाज का आह्वान किया था न कि सरकार का। अम्बेडकर, राजाराम मोहन राय सरीखे लोगों ने सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए सरकार का आह्वान करके एक गलत परम्परा को जन्म दे दिया। राजाराम मोहन राय की गलतियों के कारण अंग्रेजों ने समाज को गुलाम बनाना शुरू किया और अंबेडकर के कानूनों के कारण समाज पूरी तरह से गुलाम हो गया।

8121. गांधी जी ने अपने जीवन में किसी को अछूत नहीं माना, क्योंकि उनके विचारों में कार्य होता था, कर्त्ता नहीं।

8122. गांधी जी की स्पष्ट सोच को तीन-चार अस्पष्टताओं ने नुकसान किया। ग्राम स्वराज्य में व्यक्ति और परिवार की स्पष्ट भूमिका होने के बाद भी स्थिति अस्पष्ट हो गई। इसी तरह शहर और ग्राम का भी

विवाद खड़ा हो गया। गांधी जी ने शराब और छुआछूत बंद करने के लिए कानून बनाने की, वकालत की जो गलत था। इसी तरह गांधी जी ने राज्य को न्यूनतम शक्ति प्रयोग की सलाह दी। इन सभी गलतियों के कारण अव्यवस्था पैदा हुयी।

8123. गांधीजी ने व्यक्तिगत और सामाजिक हिंसा का तो प्रतिरोध ठीक किया, किन्तु शासन द्वारा अपराधियों को दिये जाने वाले दण्ड के संबंध में उन्हें स्पष्ट समर्थन करना चाहिए था।

8124. गांधी जी छुआछूत और शराब के विरुद्ध थे, यह बात सही है। किन्तु छुआछूत और शराब को कानून से दण्डनीय बनाने का स्पष्ट विरोध न करने से ग्राम स्वराज्य की अवधारणा धुमिल हुई।

8125. हिंसा का सैद्धान्तिक रूप से भी और व्यावहारिक रूप से भी समर्थन करने वाले साम्यवादियों और आतंकवादी मुसलमानों के विरुद्ध गांधीवादियों का न कभी प्रत्यक्ष विरोध दर्ज होता है और न परोक्ष। किन्तु यदि प्रशासन इनके विरुद्ध कोई कठोर कदम उठाता है, तो गांधीवादी अवश्य ही विरोध में हल्ला करना शुरू कर देते हैं।

8126. गांधीवादी संगठनों ने राज्य को न्यूनतम या सीमित बल प्रयोग की शिक्षा दी। इसका परिणाम हुआ कि राज्य कमजोर हुआ तथा अपराध बढ़े। आज के गांधीवादी चरित्र की बातें करके राजनीति में चरित्र स्थापित भी करना चाहते हैं, तो दूसरी ओर नक्सलवाद का अप्रत्यक्ष समर्थन भी करते हैं।

8127. "ईश्वर सत्य है" ऐसा कहने की अपेक्षा मैं कहूंगा - "सत्य ही ईश्वर है।" सत्य का निकटतम संपर्क प्रेम द्वारा प्राप्त होता है।

812 गांधी मार्ग

8128. सत्य और अहिंसा के मार्गदर्शन में तत्कालीन समस्याओं के समाधान का प्रयास ही गांधी मार्ग होता है। गांधी जी के बाद उनके विचारों ने गांधीवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याओं का सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न।

8129. गांधी गुण प्रधान धर्म मानते थे और संगठन प्रधान धर्म के विरुद्ध थे। गांधी अहिंसा को शस्त्र की तरह प्रयोग करते थे, सिद्धांत के रूप में नहीं। गांधी हिंसा की तुलना में अहिंसा और कायरता की तुलना में हिंसा को ठीक मानते थे। गांधी पूरी तरह समझदार थे। उनकी नीति और नीयत दोनों ठीक थी। उस समय के कालखंड के लिए वे महामानव थे।

8130. शरीर का तभी तक महत्व है, जब तक उसमें आत्मा हो। आत्मावान शरीर के लिए तो सभी प्रयत्न करने चाहिए किन्तु आत्मा के निकल जाने के बाद शरीर तो मिट्टी बन जाता है। संघर्ष गांधीवाद की आत्मा है और समाज निर्माण शरीर। मेरे विचार में संघर्ष और निर्माण का अद्भूत तालमेल ही गांधीवाद है। स्वतंत्रता के तत्काल बाद ही बातों-बातों में बिड़ला और नेहरू के विरुद्ध संघर्ष की चेतावनी, गांधी और गांधीवाद का वास्तविक चरित्र स्पष्ट करती है। शासन-मुक्ति और शोषण-मुक्ति का संघर्ष गांधीवाद की आत्मा है।

8131. स्वतंत्रता के बाद में जिन ग्यारह समस्याओं का विस्तार हुआ है उसका समाधान सिर्फ गांधीवाद के पास है। इसका समाधान न तो

पूंजीवाद के पास है न ही साम्यवाद के पास।

8132. जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है, तो वह निष्कर्ष समाज की प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है। विचारक से महापुरुष बनने तक के बीच के कालखंड में विचारों को समाज तक पहुँचाने के लिए एक संगठन की आवश्यकता होती है। प्रत्येक संगठन अपने महापुरुष के साथ किये गये दुर्व्यवहार को अत्याचार घोषित करता है, जबकि वह स्वयं भी आगे वाले विचारकों के साथ बिल्कुल वैसा ही अत्याचार करना शुरू कर देता है।

8133. गांधी जी ने सत्य और अहिंसा से कभी समझौता नहीं किया, क्योंकि यह उनका मुख्य मार्ग था। चर्खा, खादी, गांधी टोपी से वे समझौते के लिए तैयार थे। यदि कोई व्यक्ति भिन्न वस्त्र टोपी या भिन्न संगठन वाला भी हो, तो वे उसका बहिष्कार नहीं करते थे। गांधी के बाद गांधीवाद विचारों से दूर होने लगा और धीरे-धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया।

8134. सारी दुनिया में गांधी स्थापित हो रहे हैं, किन्तु भारत में इसलिए विस्थापित हो रहे हैं, क्योंकि यहाँ गांधी के नाम पर नकली गांधीवाद को स्थापित किया जा रहा है। नकली गांधीवादी या तो गांधी-नाम या गांधी-मूर्ति का उपयोग करके गांधी विचारों के विरुद्ध जन जागरण कर रहे हैं।

8135. गांधीजी के बाद उनके विचारों ने गांधीवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याओं का सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न। गांधी के

बाद गांधीवाद विचारों से दूर होने लगा और धीरे-धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया। अब उसकी परिभाषा बदल कर सत्य और अहिंसा के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न करने तक सीमित हो गई। सत्य और अंहिसा लक्ष्य बन गया और समाधान गौण।

8136. गांधी जी की राह धर्म या आध्यात्म से हटकर समाज और राजनीति की तरफ प्रेरित थी। गांधी जी ने दो विपरीत दिशा वाले घोड़ों की एक साथ सवारी करने की गलती की। एक राजनीति का घोड़ा, दूसरा अध्यात्म का घोड़ा। विपरीत दिशाओं में चलने का परिणाम हुआ कि देश तो स्वतंत्र हो गया, किन्तु समाज गुलाम हो गया। राजनीति और धर्म दोनों विकृत हुए।

8137. जो गांधीवाद सम्पूर्ण विश्व को लोक स्वराज्य की राह दिखा सकता है, उसे गांधीवाद में अन्तर्निहित शक्ति का एहसास कराने की जरूरत है। इस एहसास को जिस केन्द्रित शासन व्यवस्था से मोर्चा लेना है, उसी शासन व्यवस्था ने इसको घेर रखा है।

8138. गांधीवाद या हिन्दुत्व कभी संगठन नहीं बनाता। आज तक न गांधी ने कोई संगठन बनाया न हिन्दुओं ने। सच बात यह है कि गांधी हिन्दुत्व को अच्छी तरह समझते थे।

813 गांधी और गांधीवादी

8139. गांधीवादी सत्य को भी स्थापित नहीं कर सके, क्योंकि गांधी विरोधी अपने मिशन के प्रति पूरी तरह ईमानदार थे। जबकि गांधीवादी गांधी के नाम पर स्वयं को ही स्थापित करने तक सीमित रहे।

8140. गांधी जी स्वयं को इतना दृढ़ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था, परिणाम स्वरूप वे सबके बीच अपनी बात रखने का साहस करते थे। गांधीवादी इतने भयभीत हैं कि वे दूसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते हैं।

8141. गांधी जी सरकारीकरण के बिल्कुल विरुद्ध थे और सामाजीकरण के पक्षधर थे। गांधी जी निजीकरण के स्थान पर सामाजीकरण चाहते थे। गांधीवादी निजीकरण का विरोध तो करते हैं, किन्तु वे सरकारीकरण को या तो समझते नहीं या उनके संस्कार उनकी समझदारी में बाधक हैं। गांधीवादी सामाजीकरण को समझते ही नहीं, वे तो व्यापारीकरण के स्थान पर सरकारीकरण की वकालत तक करते हैं।

8142. आज की समस्याओं के समाधान के निमित्त गांधीवाद को कोई गांधी ही परिभाषित कर सकता है, गांधीवादी नहीं। क्योंकि गांधी दाण्डी यात्रा समस्या के समाधान के लिए करते थे और ये गांधीवादी गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए नकल करते हैं। गांधी जी के वस्त्र किसी पूर्व महापुरुष की नकल न होकर, भारत के आम निवासियों के दुःख-दर्द की असल प्रतीक थे। यदि किसी गांधी ने आकर गांधीवाद को इस ढंग से परिभाषित किया, तो उक्त विचारक गांधी को सबसे पहला टकराव संस्कारित गांधीवादियों से ही झेलना पड़ेगा और वह टकराव किसी भी सीमा तक जा सकता है।

8143. नकली गांधीवादियों ने सत्ता पर कब्जा करके असली गांधीवादियों

को वनवास की प्रेरणा दे दी। गांधीवादियों ने न सत्ता से संबंध रखा, न सत्ता की नीतियों से। वे तो सत्ता को बेलगाम छोड़कर समाज सेवा का काम करने लगे। नकली गांधीवादियों ने असली गांधीवादी दिखने के चक्कर में मुसलमानों की धूर्त्तता पर कोई रोक नहीं लगाई, जिससे हिन्दुओं के मन में असुरक्षा का भाव पैदा हुआ। यदि संघ नहीं होता, तो भारत में गांधीवादी नीतियां हिन्दुओं के संख्या बल में बहुत कमजोर कर देती, भले ही हिन्दू संस्कृति जीवित रहती। कालान्तर में भारत इंडोनेशिया की राह पर चल पड़ता।

8144. गांधी विपरीत विचार रखने वाले को अछूत नहीं मानते थे, गांधीवादी उन्हें अछूत मानकर घृणा करते हैं। गांधी जी स्वयं को इतना दृढ़ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था। गांधीवादी इतने भयभीत हैं कि वे दूसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते हैं।

8145. गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे। वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नहीं करते थे। गांधीवादी धर्मीरिपेक्षता का एक ही अर्थ समझते हैं, संघ का विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण।

8146. आज देश में ग्यारह समस्याएँ बढ़ रही हैं। भारत के सभी राजनैतिक दल इन समस्याओं के समाधान की अपेक्षा दस प्रकार के नाटकों में संलग्न हैं। इन राजनैतिक दलों की नीतियाँ तो गलत हैं ही, नीयत भी गलत है। गांधीवादियों की नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही हैं।

8147. गांधीवादी तर्क से बहुत भागते हैं। वे स्वयं को अन्य लोगों से अधिक

श्रेष्ठ और आचरणवान मानकर दूसरों से घृणा करते हैं, किसी भी मामले में अपनी बात कभी नहीं कहते, बल्कि जो भी कहते हैं, उसमें गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का नाम जोड़े बिना न एक लाईन लिख सकते हैं, न बोल सकते हैं। संस्कारित गांधीवादियों के समक्ष वैचारिक गांधीवादी हमेशा भयभीत रहते हैं। विभिन्न अवसरों पर गांधी ने क्या-क्या कहा, उस पर विचार करने की आवश्यकता है। आंख बंद करके मानने की नहीं।

8148. गांधी जी वैचारिक विस्तार के पक्षधर थे। गांधीवादी संगठन की सुरक्षा में ही परेशान रहते हैं। गांधी जी इस्लाम के खतरे को भली-भांति समझते हुए भी एक रणनीति के अन्तर्गत उनसे समझौता करते थे। गांधीवादी इस्लाम के खतरे को न समझते हैं, न समझना चाहते हैं। गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे। वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नहीं करते थे। गांधीवादी धर्मनिरपेक्षता का एक ही अर्थ समझते हैं और वो है संघ का विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण। गांधी जी साम्यवाद को घातक विचार मानते थे, गांधीवादी साम्यवाद को समझते ही नहीं।

8149. समाजवाद और पंचशील भारत के स्लोगन बने। सत्ता-संघर्ष ही राजनीति का आधार बनने लगा। गांधीवादियों का कर्तव्य था कि वे सत्ता की राजनीति से दूरी के महत्व को रोकने के लिए गांधी विचारों के शस्त्र का उपयोग करते, किन्तु ये तो स्वयं ही राजनीति से दूरी की घोषणा करके इस संघर्ष से किनारा कर लिये। गांधीवादियों ने सरकार से मिलकर गांवों के प्रशिक्षण का काम तो खूब बढ़ाया किन्तु गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष को टालते गये।

गांधीवादियों ने गांधी के नाम पर समाज को जितना गुमराह किया, वे लोग अधिक गांधी विरोधी माने जायें, या मंच पर गांधी का प्रत्यक्ष विरोध करने वाले।

8150. विचारों में आचरण की सीमाएं नहीं होती और आचरण में विचारों की स्वतंत्रता नहीं होती। दूसरी ओर संगठन में आचरण की सीमाएं होती हैं, सहजीवन और एक-दूसरे का सहयोग होता है तथा धूर्तों द्वारा शरीफों के शोषण के अवसर भी होते हैं। संगठन के कुछ लाभ भी हैं, तो कुछ बंधन भी हैं। अक्सर जिसे गांधीवादियों के आचरण से जोड़ कर देखा जाता है, वह उनका दोष न होकर संगठन की मजबूरी है।

8151. गांधीवादी नीतियों से लोकस्वराज्य का समर्थक होता है तथा गांधीवादी चरित्र से त्याग प्रधान आचरण। गांधीवादियों को अहिंसक तो होना चाहिए किन्तु कायर नहीं। वास्तविक गांधीवादी हमेशा सत्ता के विकेन्द्रीकरण का पक्षधर होता है। वह हिंसा का विरोधी होता है, चाहे हिंसा साम्यवादी हो या इस्लामिक अथवा संघ परिवार प्रायोजित। कोई भी गांधीवादी कभी शासकीय सम्पत्ति प्राप्त करने की तिकड़म नहीं करता। इनका व्यक्तिगत जीवन भी बहुत पवित्र होता है। वर्तमान समय में तो गांधीवादी सत्ता और संपत्ति को छोड़कर कोई अन्य लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं।

8152. चरित्रवान बुजुर्ग खासकर गांधीवादियों में यह खास बीमारी होती है कि वे हर मामले में चरित्र घुसा देते हैं। सच बात तो यह है कि ये चरित्रवान लोग तानाशाह प्रवृत्ति के होते हैं। ये समाज को अपने समान चरित्रवान बनाना चाहते हैं। इनके सामने चरित्र की तुलना में स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं है।

8153. आज के गांधीवादियों में यदि कोई विचारक शामिल रहा होता, तो वह स्वतंत्रता के पूर्व बताये गये गांधी मार्ग का अन्धानुकरण करने की अपेक्षा उस मार्ग की दिशा खोजने का वही प्रयास करता जो वर्तमान देश-काल और परिस्थिति के अनुसार यदि गांधी होते तो करते।

8154. गांधीवादियों का वर्ग ही एक ऐसी जमात है, जो राजनीति से संबंध नहीं रखती, किन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि इनकी नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही हैं। राजनीतिज्ञ जान-बूझकर नाटक करते रहते हैं और गांधीवादी अनजाने में उसके पात्र बन जाते हैं।

8155. जो व्यक्ति चोरी, डकैती और हत्या में हृदय परिवर्तन का पक्षधर हो, वह व्यक्ति छुआछूत को दंडनीय अपराध बनाने का पक्षधर हो ही नहीं सकता। किन्तु या तो गांधी जी के विचारों में भूल रही या गांधीवादी समझने में भूल कर बैठे।

8156. गांधीवादी समस्याओं का ठीक-ठीक आकलन नहीं कर पाते। वे समस्याओं के समाधान के लिए अहिंसा को मार्ग के रूप में प्रयोग न करके अपने पलायन की ढाल के रूप में उपयोग करते हैं। वे विपरीत विचार वालों से तर्क नहीं कर सकते। विचार मंथन इनके आचरण में दूर-दूर तक नहीं है।

8157. गांधी का अर्थ है सत्य और अहिंसा के मार्ग से शासन व शोषण मुक्ति के लिए निरंतर संघर्ष। मठी गांधीवादियों ने गांधी विचारों का जितना नुकसान किया, उतना सावरकरवादियों ने नहीं किया। स्वतंत्र भारत में हिंसा पर समाज का विश्वास बढ़ा है। साम्प्रदायिकता बढ़ी है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था चौपट हुई है। फिर भी मठी गांधीवादी

नीतियों की समीक्षा करने के लिए तैयार नहीं हैं। ये गांधीवादी दिन-रात या तो संपत्ति पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं या पद की लड़ाई लड़ते हैं। वर्तमान समय में आप किसी गांधीवादी को इसके अलावा हटकर कोई चर्चा करते नहीं पाएंगे।

820 गांधीवादी और साम्यवाद

8200. नेहरूवादियों और प्रच्छन्न साम्यवादियों ने गांधीवादियों को अच्छी तरह समझा दिया, कि सत्ता की राजनीति से दूरी बनाकर रखना ही गांधी मार्ग है। इन लोगों ने गांधीवादियों को यह बात भी समझा दी कि यदि कोई साम्यवादी गांधी विचार के साथ जुड़ता है, तो वह तत्काल गांधीवादी चरित्र का बन जाता है और कोई अन्य जुड़ता है, तो वह गांधीवाद के लिए ही खतरनाक बन जाता है।

8201. साम्यवाद के लिए यदि कोई सबसे बड़ा खतरा है, तो वह है गांधीवाद। अधिकतम केन्द्रित सत्ता के विरुद्ध शासन मुक्त या न्यूनतम शासन की इतनी साफ सोच और किसी के पास नहीं।

8202. गांधीवाद के एकमात्र घोषित सिपाही "गांधीवादी" साम्यवादियों के मायाजाल में अन्दर तक उलझे हुए हैं। चिन्ता होती है कि कौन गांधीवाद को इन तिकड़मों से मुक्त करायेगा? कौन साम्यवाद को राजनैतिक धरातल पर चुनौती देगा? कौन समझायेगा कि केन्द्रित शासन व्यवस्था गुलामी की निशानी है और अकेन्द्रित शासन व्यवस्था लोक स्वराज्य की।

8203. पचहत्तर वर्षों की स्वतंत्रता और गांधी सरीखे विश्वस्तरीय महापुरुष की साख साथ में होते हुए भी गांधीवादी आज जिस तरह मुद्दों की तलाश में भटकते रहते हैं तथा साम्यवादियों से अमेरिका विरोध,

साम्प्रदायिकता, परमाणु शक्ति, आर्थिक समस्या जैसे मुद्दे उधार लेते हैं, यह चिन्ता का विषय है।

8204. गांधीवादी आमतौर पर बहुत शरीफ, ईमानदार, परिश्रमी तथा शांतिप्रिय होते हैं। गांधी के मरते ही नेतृत्व का अभाव हुआ और गांधीवादी, साम्यवादियों की बी टीम बन गए। गांधीवादियों में संघर्ष की जगह कायरता आई। वर्तमान समय में गांधीवादियों का एकमात्र कार्य है नक्सलवाद की सुरक्षा तथा इस्लाम की वकालत। हर गांधीवादी आंख बंद करके तब तक मोदी विरोधी है, जब तक साम्यवादी और मुसलमान मोदी विरोधी हैं।

8205. गांधी सामाजिक स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाकर चल रहे थे। गांधी के लक्ष्य में कहीं भी सत्ता संघर्ष नहीं था। वे तो सत्ता मुक्ति के प्रयत्नों तक सीमित थे। मार्क्स का लक्ष्य सत्ता परिवर्तन था। गांधी का लक्ष्य अकेन्द्रीकरण था, तो मार्क्स का केन्द्रीकरण। गांधी का लक्ष्य यथार्थ से जुड़ा हुआ था और मार्क्स का यूटोपिया से। गांधी वर्ग-समन्वय को महत्वपूर्ण मानते थे और मार्क्स वर्ग-संघर्ष को।

8206. गांधी ने अपने जीवन काल में अहिंसा का परिणाम दिखा दिया। मार्क्स के जीवन में कोई परिणाम निकला ही नहीं। इसके विपरीत उनके जाने के बाद जो परिणाम दिखा, वह आज तक सारी दुनिया को परेशान कर रहा है। इसलिए गांधी और मार्क्स की तुलना एक साथ ठीक नहीं।

8207. गांधी और मार्क्स दोनों ही सत्ता का अकेन्द्रीकरण चाहते थे लेकिन दोनों का मार्ग अलग-अलग था। गांधी का मार्ग प्रत्यक्ष था और

मार्क्स का अप्रत्यक्ष। गांधी प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकार स्वीकार करते थे, मार्क्स प्रत्येक व्यक्ति को मौलिक इकाई मानते थे और साम्यवाद उसे राष्ट्रीय संपत्ति।

8208. गांधी जी लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा में ले जाना चाहते थे और साम्यवादी लोक स्वराज्य की अपेक्षा आर्थिक असमानता को आगे लाकर लोक स्वराज्य के मुद्दे को पीछे करना चाहते थे।

8209. साम्यवादी गांधी विचारों से बिल्कुल विपरीत होते हैं, जबकि समाजवादी गांधी विचारों के निकट। साम्यवादी हिंसा के समर्थक होते हैं और समाजवादी विरोधी। साम्यवादी तानाशाही के पक्षधर हैं, तो समाजवादी लोकतंत्र के। साम्यवादी केन्द्रित सत्ता चाहते हैं, तो समाजवादी विकेन्द्रित। साम्यवादी बहुत चालाक होते हैं, तो समाजवादी सीधे-साधे। गांधी हत्या के बाद साम्यवादियों ने योजनापूर्वक गांधीवादियों को पूरी तरह प्रभावित कर लिया, तो समाजवादी गांधीवादियों से बहस ही करते रह गये।

8210. साम्यवाद हिंसा का समर्थन करता है, यहाँ तक कि अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी भी प्रकार की हिंसा से परहेज नहीं करता। साम्यवाद अमेरिका की हर नीति का आँख मूँदकर विरोध करता है। साम्यवाद वर्ग संघर्ष का प्रमुख समर्थक माना जाता है। सर्वोदय के सामान्य कार्यकर्ता अपने स्वाभाविक आचरण में साम्यवाद की उपरोक्त सभी नीतियों को न सिर्फ अस्वीकार करते हैं, बल्कि विरोध भी करते हैं। किन्तु सर्वोदय का उच्च नेतृत्व अपनी नीतियों तथा कार्यक्रमों में साम्यवाद की उपरोक्त सभी नीतियों का पूरा-पूरा पालन करते रहे।

821 गांधी हत्या

8211. स्वतंत्रता के कुछ वर्ष पूर्व से ही गांधी श्रद्धा की वस्तु माने जाने लगे थे और भविष्य में टकराव अवश्यसंभावी था। अच्छा हुआ जो वे चले गये, जिससे तीनों महापुरुष नेहरू, पटेल और अम्बेडकर गांधी की अवहेलना से उत्पन्न वैचारिक युद्ध से बच गये। यदि गांधी जीवित रहते तो इन तीनों की नीतियों का खुलकर विरोध करते।

8212. गांधी जी चरित्र बल को सामाजिक परिवर्तन का एक मजबूत हथियार मानते थे। सरकारी कानून की मांग करने वाले लोग तो निकम्मे होते हैं, जो चरित्र का प्रभाव नहीं रखते। गांधी जी यदि जीवित होते तो वे उदारवादी हिन्दुओं का कट्टरवादी इस्लाम के विरुद्ध नेतृत्व करते। गांधी जी उचित समय पर उचित निर्णय करने की कला जानते थे। यदि गांधी जीवित होते तो भारत बिल्कुल भी लोकतंत्र की पश्चिमी जगत की लोक नियुक्त तंत्र की परिभाषा की नकल नहीं कर पाता।

8213. गांधी हत्या का सबसे अधिक लाभ सत्ता-लोलुप गांधीवादियों ने उठाया। इन्होंने नेहरू के साथ मिलकर अपने राजनैतिक प्रतिद्वंदी 'संघ' को तो गांधी हत्या के नाम पर निपटा दिया और वैचारिक प्रतिद्वंदी सर्वोदय को बहला-फुसलाकर दूर हटा दिया।

8214. गांधी हत्या के बाद बुद्धिजीवियों और पूंजीपतियों के गठजोड़ ने औद्योगीकरण का ऐसा ताना-बाना बुना कि श्रम पुरी तरह असहाय हो गया। ग्रामीण कृषि पर भी विपरीत असर पड़ा और ग्रामीण उद्योग धंधे तो समाप्त ही हो गये। गांधी हत्या का सर्वाधिक नुकसान

देश की समाज व्यवस्था को हुआ। परिणामस्वरुप अल्पसंख्यक राजनेता, बहुसंख्यक समाज को गुलाम बनाने में सफल हो गये।

8215. बहुसंख्यक समुदाय तंत्र को चुन सकता है, पर नियंत्रण नहीं कर सकता है। लोकतंत्र की ऐसी शोषक परिभाषा गांधी हत्या का ही परिणाम है, जो अब तक भारत भुगत रहा है और आगे भी भुगतता रह सकता है।

8216. संघ को राजनीति से दूरी बनानी होगी और सर्वोदय को दूरी घटानी होगी। संघ को गांधी हत्या को समाज विरोधी कार्य घोषित करना होगा और सर्वोदय को गांधी हत्या को भूलकर आगे बढ़ना होगा। संघ को हिन्दू राष्ट्र का नारा छोड़कर समान नागरिक संहिता को मुख्य आधार बनाना होगा और सर्वोदय को मुस्लिम तुष्टीकरण से निकलकर धर्म निरपेक्षता की वास्तविक परिभाषा की ओर बढ़ना होगा।

8217. सत्ता के दो दावेदार गुटों में से एक ने गांधी के विरुद्ध ऐसा वातावरण बनाया कि गांधी की शारीरिक हत्या हो गई, तो दूसरे ने गांधी का वारिस बनकर ऐसा वातावरण बनाया कि गांधी विचारों की हत्या हो गई। आज भी एक गुट गांधी को गाली देकर गांधी के विरुद्ध सामाजिक वातावरण बना रहा है, तो दूसरा गुट गांधी को माला पहनाकर गांधी विचारों को धोखा देने में लगा हुआ है। नरेन्द्र मोदी के आने के बाद कुछ-कुछ अच्छी उम्मीद बन रही है।

8218. गांधी हत्या का पाकिस्तान बनने से कोई संबंध नहीं था। गांधी हत्या के कई प्रयत्न दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व से हो रहे थे, जब पाकिस्तान बंटवारे का कोई नामोनिशान नहीं था। पचपन करोड़ रूपया पाकिस्तान का था, जो भारत पर उधार न होकर अमानत था। चाहे

भारत की हार होती या जीत, किन्तु अमानत में खयानत करना बिल्कुल भी ठीक नहीं था। इसलिए गांधी हत्या को मुसलमान या पाकिस्तान से जोड़ना पूरी तरह गलत है। गांधी हत्या का कारण सिर्फ राजनैतिक है, जिसमें गांधी सत्ता के स्वशासन की बात करते हैं और राजनेता सुशासन की।

821 गांधी और गोडसे

8219. गांधी हत्या में संचालन किसी संकीर्ण विचारधारा तथा सत्ता-लोलुप राजनीति के तालमेल का था, न कि गोडसे का।

8220. गोडसे का कार्य गलत था, नीयत नहीं। गोडसे मूर्ख था, धूर्त्त नहीं। गोडसे की अपेक्षा नेहरू ने देश का अधिक नुकसान किया। नेहरू कभी गांधी के विचारों से सहमत नहीं रहे और स्वार्थवश गांधी की बात मानते रहे। गोडसे देशभक्त था, किन्तु वह मोटिवेटेड था। अर्थात वह ऐसे विचारों से प्रभावित हो गया था, जिन्हें न देश की चिन्ता थी और न समाज की। ऐसे लोग तो केवल साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करके सत्ता में आना चाहते थे। मैंने एक उदाहरण लिखा था, कि यदि मेरे गले में साँप या छिपकिली बैठी हुई है और मेरा लड़का मेरे विरोधी के प्रभाव में आकर अच्छी नीयत से साँप या छिपकली की हत्या करने के लिए मेरी गर्दन काट दे, तो मैं अपने लड़के को दोष दूं या उसको प्रभावित करने वाले मोटीवेटर को?

8221. महात्मा गांधी तथा क्रांतिकारी इस्लाम की अपेक्षा गुलामी को पहला शत्रु मानते थे, तो संघ परिवार इस्लाम को पहला शत्रु मानता था। आर्य समाज भी इस्लाम को पहला शत्रु मानना बंद करके गुलामी को पहला शत्रु मानने लगा था। यही कारण है

कि आर्य समाज प्रारंभ में इस्लाम के पूरी तरह विरुद्ध होते हुए भी स्वतंत्रता संघर्ष के समय उस विरोध को प्राथमिकता नहीं दे रहा था। यही कारण था कि गांधी पूरी तरह हिन्दू धर्म के पक्षधर होते हुए भी स्वतंत्रता संघर्ष में इस्लाम को साथ लेकर चलना चाहते थे और संघ परिवार स्वतंत्रता भले ही देर से मिले या न भी मिले, किन्तु वह इस्लाम से किसी भी प्रकार के समझौते के विरुद्ध था।

8222. नाथूराम गोडसे और नेहरू में बहुत फर्क था। एक ने गांधी की शरीर की हत्या कर दी तो दूसरे ने विचारों की। गोडसे का मार्ग गलत था और नेहरू की नीयत। गोडसे यदि गलत विचारों से प्रभावित न होकर गांधी के साथ जुड़ा होता तो नेहरू की तुलना में अच्छा प्रधानमंत्री बन सकता था।

8223. नाथूराम गोडसे वैचारिक धरातल पर बिल्कुल मूर्ख और अंधा था। वह पूरी तरह देशभक्त था, पंडित नेहरू से भी अधिक। किन्तु वह जिस विचारधारा से प्रेरित था, वह विचारधारा गलत थी। यदि गोडसे उस गलत विचारधारा से हटकर गांधी विचारों से जुड़ा होता, तो समाज के लिए बहुत लाभदायक होता क्योंकि गांधी मोटीवेटर थे और गोडसे मोटिवेटेड। गोडसे का कार्य पूरी तरह हिन्दुत्व के भी विपरीत था और राष्ट्र के भी। गांधी हत्या का किसी भी रूप से कोई औचित्य नहीं था। गोडसे का कार्य लंबे समय तक कलंकित माना जाएगा। गांधी हत्या का देश विभाजन अथवा पचपन करोड़ से भी कोई सम्बन्ध नहीं था, क्योंकि गांधी हत्या के प्रयत्न देश विभाजन से तो कई वर्ष पूर्व ही शुरू हो गए थे।

823 गांधी और क्रान्तिकारी

8230. यदि गांधी की बात मानकर क्रान्तिकारी भी अहिंसक संघर्ष में शामिल हो गये होते, तो स्वतंत्रता और जल्दी मिल सकती थी। लोकतांत्रिक भारत में सुभाषचन्द्र बोस अथवा अन्य क्रान्तिकारी सम्मान के पात्र तो हैं, किन्तु उनका मार्ग अनुकरण के लिए बिलकुल अनुपयुक्त है।

8231. गांधीवादियों की अकर्मणीयता तथा संघ परिवार की अतिसक्रियता के कारण आज भी क्रान्तिकारीयों अथवा सुभाष बाबू के मार्ग की चर्चा जीवित है। यहां तक कि भारत की अधिकांश जनता विभाजन के लिए गांधी को दोषी मानती है, जबकि विभाजन का प्रस्ताव सरदार पटेल, नेहरू, अंबेडकर आदि ने पारित किया था।

8232. तानाशाही में व्यवस्था परिवर्तन का कोई मार्ग उपलब्ध नहीं होता है, तब हिंसा ही एक मार्ग दिखता है। किन्तु लोकतंत्र हो तब हिंसा-अहिंसा पर बहस अर्थहीन हो जाती है, क्योंकि लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं होता। यदि स्वतंत्रता के बाद भगत सिंह या सुभाषचंद्र बोस जीवित होते, तो हिंसा का पूरी तरह विरोध करते।

824 गांधी और नेहरू

8240. नेहरू ने स्वतंत्रता के बाद देश को गुमराह किया, उसमें नेहरू का स्वार्थ अधिक था और त्याग कम। नेहरू कभी गांधी विचारधारा के प्रति समर्पित नहीं रहे। गांधी की हत्या होते ही नेहरू जी ने जिस तरह गांधी जी के लोक स्वराज्य व ग्राम स्वराज्य के साथ धोखा किया, वह किसी भी तरह छोटा अपराध नहीं है। चिन्तन और निष्कर्ष का काम उन राजनेताओं ने ले लिया, जिन्होंने गांधी को

कभी समझा ही नहीं। नेताओं ने बड़ी चालाकी से गांधीवादियों को विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय कर दिया और चिन्तन के सारे सूत्र अपने पास समेट लिए।

8241. स्वतंत्रता के पूर्व ही क्रांतिकारी देशभक्तों के बलिदानों को योजनापूर्वक किनारे किया जा चुका था, किन्तु स्वतंत्रता की आहट से नेहरू के नेतृत्व में राजनेताओं द्वारा गांधी जी को भी दरकिनार करने की कोशिश शुरू कर दी गई। इन नेताओं में आपसी संघर्ष सत्ता के लिए चाहे कितना भी रहा, किन्तु इस बात पर सब एकजुट रहे कि गांधी जी को तथा उनके सिद्धांतों को कैसे किनारे किया जाये?

8242. गांधी की अवधारणा न्यूनतम शासन की है और यदि राज्य ऐसा न करे, तो अहिंसक संघर्ष की है। जबकि नेहरू की भूमिका अधिकतम शासन की है, जिसके लिए अहिंसा के नाम पर कायरता का विस्तार आवश्यक है। गांधी हत्या के बाद नेहरू ने जो अधिकतम शासन और सामाजिक कायरता की शुरूआत की, वह आजतक जारी है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या अहिंसक कायरता और हिंसक संघर्ष के दो विपरीत विचारों के बीच प्रतिस्पर्धा है, जिसका एक पक्ष गांधीवादियों के नेहरू मॉडल के साथ जुड़ा है, तो दूसरा नक्सलवादियों तथा सावरकरवादियों के साथ। बीच में गुलाम समाज गुलामी के दो ध्रुवों के बीच तमाशा देख रहा है।

8243. नेहरू, पटेल, अम्बेडकर सत्ता के लिए प्रयत्नशील थे, स्वतंत्रता उसके साथ जुड़ी हुई थी। इसलिए गांधी के समक्ष नेहरू, पटेल, अम्बेडकर जनमत के मामले में बौने थे। दुनिया जानती है कि

पंडित नेहरू, पटेल, अम्बेडकर जैसों के लिए, स्वतंत्र भारत में गांधी बोझ बने हुए थे। यदि गांधी जी जीवित रहते तो वे केन्द्रित राज्य तथा अर्थव्यवस्था के प्रबल पक्षधर नेहरू जी के कन्धे पर बन्दूक रखकर अपनी लोक स्वराज्य की अवधारणा को कार्यान्वित करने में सफल हो जाते, किन्तु गांधी हत्या के बाद बन्दूक नेहरू जी के कन्धे से उतर कर उनके हाथ आ गयी और सत्तावादी नेहरू ने गांधीवाद के ही कन्धे पर बन्दूक रखकर लोक स्वराज्य की अवधारणा को समाप्त करना शुरू किया। गांधी हत्या ने साम्यवादियों को वह अच्छा अवसर दे दिया, जिसके जरिये वे गांधीवाद में घुसपैठ कर सकें।

8244. गांधी जी के लोक स्वराज्य से न नेहरू जी को कुछ मतलब था न पटेल को। गांधी जी के लिए दोनों बेकार थे। किन्तु यदि दो में से ही एक चुनना था, तो नेहरू, पटेल की अपेक्षा अधिक लोकतांत्रिक थे, तो पटेल अधिक देशभक्त। नेहरू को प्रधानमंत्री चुनना गांधी की मजबूरी थी इच्छा नहीं।

8245. गांधी जी स्वयं को भी कांग्रेस से भिन्न मानते थे। नेहरू जी, गांधी जी के जीवित रहते ही गांधी विचारों के बिलकुल विपरीत विचार रखते थे तथा अंतिम दिनों में गांधी जी से छिपाकर भी वार्ता कर लेते थे।

8246. गांधी ने समाज सशक्तिकरण का नारा दिया था। नेहरू ने उसे बदलकर राष्ट्र सशक्तिकरण अर्थात राज्य सशक्तिकरण का नारा दे दिया। मेरे विचार से यदि आज गांधी होते, तो वे या तो नेहरू खानदान के अलोकतांत्रिक साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का विरोध

करते अथवा हम सबके समान ही एक खतरा उठाकर परिवर्तन की राह खोलते।

8247. पण्डित नेहरू गांधी जी के सर्वाधिक विश्वासपात्र व्यक्ति भी रहे और गांधी विचारों के प्रबल विरोधी भी। स्वतंत्रता के पूर्व राजनेताओं में कोई ऐसा व्यक्ति सामने नहीं आया, जिसमें राजनैतिक क्षमता भी हो और लोक स्वराज्य का विचार भी। जयप्रकाश भी गांधी के मरने के बाद ही इस दिशा में सक्रिय हुए।

825 गांधी और अम्बेडकर

8250. मैंने जितना गांधी को समझा तो यह पाया कि गांधी वर्ग-समन्वय के पक्षधर थे। यहाँ तक कि वे वर्ग निर्माण भी ठीक नहीं समझते थे, जबकि अम्बेडकर इसके ठीक विपरीत वर्ग-निर्माण, वर्ग-विद्वेष और वर्ग-संघर्ष के लिए दिन-रात प्रयत्नशील रहते थे। मैं गांधी की नीयत ठीक मानता हूँ, भले ही उनके कुछ निर्णय गलत भी थे। दूसरी ओर अंबेडकर जी की नीयत खराब थी, भले ही उनके कुछ निर्णय सही भी थे।

8251. पंडित नेहरू गांधी से सहमत थे, किन्तु उनकी कुछ नीतियों को अव्यावहारिक मानते थे। अम्बेडकर गांधी के ही विरुद्ध थे, नीतियों के विरुद्ध तो थे ही। आज के अम्बेडकरवादी भी गांधी को इसीलिए गाली देते हैं कि गांधी को गाली देने से ही अम्बेडकर जी की आत्मा को शान्ति मिलेगी।

8252. गांधी की नीयत और कार्य-प्रणाली बिल्कुल ठीक थी और अम्बेडकर की नीयत और कार्य-प्रणाली बिल्कुल गलत। गांधी समाजवाद का अर्थ राजनैतिक समानता के साथ जोड़कर देखते

थे, तो पंडित नेहरू और अम्बेडकर ने समाजवाद का अर्थ आर्थिक और सामाजिक समानता के साथ जोड़ दिया और राजनैतिक समानता को पूरी तरह छोड़ दिया।

8253. गांधी आस्तिक थे, नेहरू नास्तिक थे और अंबेडकर स्वार्थी थे। गांधी धर्म निरपेक्ष थे, नेहरू साम्प्रदायिक थे, पटेल धर्म सापेक्ष थे। गांधी इस्लाम और इसाईयत की तुलना में हिंदुत्व को अधिक महत्व देते थे, नेहरू हिंदुत्व की तुलना में इस्लाम और साम्यवाद को महत्व देते थे। अंबेडकर सिर्फ अपनी कुर्सी को ही महत्व देते थे। उन्हें हिंदू, मुसलमान, ईसाई या साम्यवाद से ना कोई विरोध था, ना लगाव।

8254. पूरे स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता के बाद तक भीमराव अम्बेडकर की भूमिका खलनायक की रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी उनकी भूमिका कमजोर थी और स्वतंत्रता के बाद भी वे हमेशा सत्ता की तिकड़म करते रहे।

826 गांधी और अन्य नेता

8260. स्वतंत्र भारत में गांधी जी समाज की व्यवस्था चाहते थे, और सत्ता की भूमिका सिर्फ सहायक के रूप में सीमित रखना चाहते थे। लेकिन राजनीतिज्ञ सत्ता की व्यवस्था को मजबूत करना चाहते थे और समाज की व्यवस्था को गौण।

8261. गांधी जी की विचारधारा थी कि शासन-मुक्त समाज शोषण-मुक्ति की दिशा में चले, किन्तु तत्कालीन शासकों ने शासन-मुक्ति की दिशा में तो कोई कदम नहीं बढ़ाया, इसके विपरीत शोषण-मुक्ति के नाम पर समाज को अनेक वर्गों में विभाजित कर समाज में हस्तक्षेप के अनगिनत द्वार खोल दिये।

8262. स्वतंत्रता के पूर्व गांधी जी ने आश्वासन दिया था कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र भारत में भयमुक्त होगा। स्वतंत्र भारत में ऐसा क्या हुआ? सारे गुण्डे और अपराधी तो भयमुक्त हो गये और सभी शरीफ लोग पुलिस से भी भयग्रस्त हैं और गुण्डों से भी।

8263. स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करने वाले गांधी के प्रति संपूर्ण भारत में अगाध श्रद्धा और विश्वास था। उनके साथ दो प्रकार के लोग थे। एक, जो निःस्वार्थ थे, छल कपट रहित थे दूसरे, जो स्वतंत्रता का आभास होते ही तिकड़म करने लग गये थे। पहले प्रकार के लोग क्षमता में कमजोर थे तथा दूसरे प्रकार के लोगों की क्षमता पर्याप्त थी। पहले प्रकार के लोगों में राजेन्द्र प्रसाद, विनोबा भावे, खान अब्दुल गफ्फार खान आदि को माना जा सकता है, तो दूसरे प्रकार में नेहरू, अम्बेडकर और जिन्ना सरीखे लोगों को। सरदार पटेल को इन दोनों के बीच में माना जा सकता है। सावरकर इन सब से बाहर थे ही। पहले प्रकार के लोग धोखा खा सकते थे, दे नहीं सकते थे। दूसरे प्रकार के लोग धोखा दे सकते थे, खा नहीं सकते थे। पहले प्रकार के लोग राष्ट्र भाव से ओत-प्रोत थे, तो दूसरे प्रकार के लोग अपना राजनैतिक स्वार्थ अधिक देख रहे थे। दूसरे प्रकार के लोग संविधान निर्माण में हावी हो गये और पहले प्रकार के लोग धोखा खा गये। उस समय की परिस्थितियों में इसके अतिरिक्त कुछ और करना संभव नहीं था। इसलिए जो भी हुआ, वह हम सबकी मजबूरी थी, पूरा देश इन सबसे धोखा खा गया।

8264. गांधी ने कहा था कि विभाजन मेरी लाश पर होगा, क्योंकि गांधी धार्मिक आधार पर टकराव के विरुद्ध थे और विभाजन नहीं चाहते

थे। सरदार पटेल, नेहरू या अम्बेडकर ने कभी ऐसा नहीं कहा, क्योंकि उन्हें न स्वतंत्रता से मतलब था, न राष्ट्रीय एकता से। इसलिए पटेल, नेहरू, अंबेडकर ने मिलकर विभाजन का प्रस्ताव भी स्वीकार कर लिया और सारा दोष गांधी पर डालने का पाप भी किया। कभी नेहरू, पटेल, अंबेडकर ने खुलकर नहीं कहा कि विभाजन का प्रस्ताव उनका था, गांधी का नहीं।

8265. जिस तरह स्वतंत्रता के पूर्व गांधी ने सुभाष चंद्र बोस के प्रयत्नों से हटकर नया मार्ग खोजा था, जो सफल भी हुआ। उस पर भी सोचे जाने की जरूरत है। अब वर्तमान समय में भी समस्याओं के समाधान के लिए इसी तरह कुछ नया सोचने के जरूरत है।

8266. गांधी और लोहिया में बहुत फर्क था। राजनैतिक मामलों में लोहिया गांधी के समान सत्ता के अकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे और आर्थिक मामलों में सत्ता के केन्द्रीकरण के पक्षधर, जबकि गांधी दोनों मामलों में अकेन्द्रीकरण चाहते थे।

8267. गांधी जी समाज को मालिक और सत्ता को मैनेजर मानते थे। इनके बाद आये लोगों ने समाज को बीमार और स्वयं को डाक्टर मान लिया। सत्ता जिस गति से इन चरित्रवानों के पास इकट्ठी हुई, उसी गति से चरित्रहीनों का प्रवेश राजनीति में बढ़ता गया। वर्तमान स्थिति यह हो गई है कि राजनीति पूरी तरह व्यापार बन गयी है।

8268. गांधी और संघ भारत में सामाजिक हिंसा के विस्तार के लिए दोषी हैं। गांधी ने राज्य को न्यूनतम हिंसा की सलाह दी, तो संघ ने समाज को अपनी सुरक्षा के लिए हिंसा के उपयोग की सलाह दी।

8269. गांधी विचार का मूल तत्व अहिंसा और वर्ग-समन्वय है, जबकि

संघ इस्लाम और साम्यवाद का हिंसा तथा वर्ग-विद्वेष। गांधी जी का जीवन और चिन्तन एक पूर्ण समाजशास्त्र है, जबकि संघ की विचारधारा में समाज बिल्कुल नहीं है। उसमें धर्म भी नहीं है। फिर भी, संघ परिवार इस्लाम तथा साम्यवाद के समान समाज विरोधी धारणा नहीं रखता।

8270. भारत ही नहीं, पूरे विश्व में एकमात्र गांधी ही ऐसे व्यक्ति हुए, जिन्होंने लोक स्वराज्य की इतनी स्पष्ट व्याख्या की तथा लोक स्वराज्य को विश्व की सभी समस्याओं का समाधान बताया। गांधी हत्या के बाद कांग्रेस तथा गांधी आश्रम की सोच भिन्न-भिन्न हो गई। आश्रम की शक्ति कमजोर हुई तथा नेहरू, पटेल के नेतृत्व में कांग्रेस ने स्वराज्य के स्थान पर सुराज्य को अपना लक्ष्य घोषित कर दिया।

8271. अधिकारों का विकेन्द्रीकरण अधिकांश समस्याओं का एकमात्र और सुविधाजनक समाधान है। गांधी जी, विनोबा जी तथा जयप्रकाश जी विकेन्द्रित व्यवस्था के पूरी तरह पक्षधर रहे। गांधी जी स्वराज्य के लिए निर्माण और संघर्ष में समन्वय के पक्षधर थे। विनोबा जी संघर्ष की अपेक्षा निर्माण पर ज्यादा जोर देते थे। जयप्रकाश जी निर्माण की तुलना में संघर्ष पर अधिक जोर देते थे।

8272. स्वतंत्रता संघर्ष के बाद सुभाषचंद्र बोस अस्थाई तानाशाही के पक्षधर थे, सरदार पटेल सीमित मताधिकार के, नेहरू जी बालिग मताधिकार के और गांधी जी स्वशासन के। स्वतंत्रता के बाद गांधी जी कम से कम नियंत्रण चाहते थे और नेहरू जी अधिक नियंत्रण के पक्ष में थे। गांधी जी स्वराज्य के पक्षधर थे और नेहरू जी सुराज्य के।

827 गांधी और गांव

8273. गांधी जी गांव से प्रारंभ करके विश्व तक जुड़ना चाहते थे। नेहरू जी विश्व से प्रारंभ करके गांव तक जाना चाहते थे। पटेल गांव और विश्व की चिन्ता छोड़कर राष्ट्र को ज्यादा महत्व देते थे।

8274. गांधी जी ने हमें काम के तीन सूत्र तीन चरण में दिये थे:- (1) गांवों की अपनी गांव सम्बन्धी निर्णय में अधिकतम स्वतंत्रता, (2) गांव के निवासियों को ऐसी स्वतंत्रता के सदुपयोग की ट्रेनिंग और (3) समाज में श्रम के महत्व और सम्मान का अधिक विकास। इसे ही गांधी जी ने शासन-मुक्ति, शोषण-मुक्ति का नाम दिया था। गांधी के जाने के बाद पहला चरण नेताओं ने अपने जिम्मे ले लिया और कभी दिया ही नहीं। दूसरा चरण गांधीवादियों ने दिया और वह थककर असफल हो गए, क्योंकि पहले चरण के अभाव में दूसरा चरण महत्वहीन हो गया था। तीसरा चरण तो कभी शुरू ही नहीं हुआ।

8275. गाँव स्वावलम्बी तब होंगे जब प्रत्येक गाँव को एक आर्थिक इकाई के रूप में विकसित किया जायेगा।

828 गांधी और लोक स्वराज्य

8280. मठी गांधीवादियों ने लोक स्वराज्य के लिए संघर्षरत गांधीवादियों पर चौतरफा आक्रमण किया। आक्रमण तभी ठंडा हुआ, जब व्हिप जारी हुआ कि गांधी आश्रम से किसी भी प्रकार की लोक स्वराज्य आंदोलन की गतिविधियों का संचालन वर्जित होगा तथा सर्व सेवा संघ का कोई भी जिम्मेदार अधिकारी ऐसी गतिविधियों में किसी भी रूप में सक्रिय सहयोग नहीं कर सकेगा। मैंने स्वयं

प्रत्यक्ष रूप से देखा है, जब सर्व सेवा संघ ने ठाकुरदास बंग के खिलाफ ऐसे ही व्हिप जारी किया।

8281. मृत महापुरुषों के नाम पर दुकान चलाने वाले उनके अधूरे कार्य को आगे बढ़ाने में सबसे बड़े बाधक होते हैं। गांधी का नाम जपना और लोक स्वराज्य के विरोध से चौंकने की जरूरत नहीं। ये लोग बड़े मायावी होते हैं। इन्हें पहचानना भी आसान नहीं होता। बहुत से लोगो ने अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपने नाम के साथ गांधी शब्द जोड़ने का फैशन बना लिया है।

8282. हमने यदि गांधी और जयप्रकाश की बात मानी होती, तो भारत दुनिया का पहला लोक स्वराज्य बन गया होता और सुव्यवस्था स्थापित हो गई होती। हम दुनिया को लोकतंत्र के विकल्प के रूप में लोक स्वराज्य के विचारों का निर्यात कर सकते थे।

8283. गांधी ने गुलामी से मुक्ति दिलाई थी और यदि आज गांधी होते तो सारा काम छोड़कर इस संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलने का प्रयास करते। दुनिया उनकी प्रशंसा करती, उससे गांधी प्रभावित हुए बिना अपनी दिशा में आगे बढ़ते। मेरे विचार से गांधी को आज यही सच्ची श्रद्धाजंलि होगी कि हम भारत में लोक स्वराज्य को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करने की शुरूआत करें, जो न गांधी विरोधी करने को तैयार हैं, न गांधी भक्त।

8284. गांधी लोकतंत्र का अर्थ समझते थे, जबकि देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत अन्य अधिकांश नेता न लोकतंत्र को समझते थे, न लोक स्वराज्य को। वे तानाशाही प्रवृति के थे, जिन्हें मजबूरी में लोकतंत्र के लिए समझौता फार्मूला स्वीकार करना पड़ा।

8285. गांधी ने हमेशा लोक नियंत्रित तंत्र का पक्ष लिया था, किन्तु गांधी के नाम पर राजनेताओं ने लोक नियुक्त तंत्र की नई राह बनाई। इसका परिणाम हुआ कि देश भारतीय राजनेताओं का गुलाम हो गया।

8286. सत्ता को समाज तक पहुंचाकर सत्ता के अधिकार, दायित्व, हस्तक्षेप और न्यूनतम कर दिये जाएं। यह आदर्श स्थिति है।

8287. गांधी हत्या में प्रयुक्त संगठनों या व्यक्तियों से ऐसे व्यक्ति या संगठन भी कम दोषी नहीं हैं, जिन्होंने गांधी की विरासत को हथिया कर गांधी विचारों की हत्या कर दी। साठ वर्षों में जिस तरह विनोबा जी के स्वराज्य शास्त्र, लोहिया जी के चौखम्बा राज्य या जयप्रकाश जी की लोक स्वराज्य की आवधारणा को निरूत्साहित किया गया, उस षड्यंत्र पर गंभीर मंथन की जरूरत है। विनोबा जी के सामने यह सब हुआ और वे चुप रहने के लिए मजबूर क्यों थे? आज भी लोक स्वराज्य की आवधारणा की लड़ाई में सर्वोदय विभाजित क्यों है? लोक स्वराज्य के संघर्ष की पीठ में छुरा घोंपकर सिर्फ खादी पहनना, शराब बन्दी, गौ-हत्या बन्दी और अहिंसा के नाम पर कायरता ही गांधी की शिक्षा नहीं है।

8288. दुनिया के लोकतांत्रिक इतिहास में सर्वोदय ही एकमात्र ऐसी संस्था है, जो लोक स्वराज्य की पक्षधर रही है। अन्यथा अन्य सभी संगठन या तो राज्य सशक्तिकरण में संलग्न हैं या राज्य निरपेक्ष संस्था के रूप में सेवा-कार्य में लगे हैं।

8289. गांधी जी के मरते ही सर्वोदय ने सेवा-कार्य को पहली और लोक स्वराज्य को औपचारिकता तक सीमित कर दिया, किन्तु लोक

स्वराज्य को इन्होंने कभी छोड़ा नहीं। यदा-कदा लोक स्वराज की दिशा में कुछ न कुछ पहचान तो बनी ही रहती थी। गाँव तक को निर्णय की स्वतंत्रता की लड़ाई इनकी पहचान बन गई थी, भले ही अन्दर-अन्दर ये इस लड़ाई से बचते ही रहते थे।

8290. भारत का सबसे ज्यादा नुकसान सर्वोदय ने किया है, जिसने लोक स्वराज्य की लाईन छोड़कर राजनेताओं को इतनी छूट दे दी।

8291. भारत की सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान गांधी के बताये उस मार्ग में ही निहित है, जिसमें अहिंसक संघर्ष के द्वारा शासन के अधिकार, दायित्व तथा हस्तक्षेप न्यूनतम होने को लक्ष्य माना गया है।

829 गांधी और मैं

8292. मेरे अधिकांश विचार स्वामी दयानंद, मार्क्स और लोहिया से भी प्रभावित हैं। किन्तु अनेक मामलों में मैं इन सबसे भिन्न भी हो जाता हूं, यहां तक कि गांधी से भी। संभव है कि कालांतर में चिंतन करते-करते मैं अपने ही पुराने विचारों से अलग सोचना शुरू कर दूं, किन्तु यह नई सोच चिंतन का विचलन नहीं मानी जायेगी। फिर भी मैं अन्य सभी महापुरुषों की अपेक्षा गांधी विचार को अधिक उपयुक्त मानता हूँ।

8293. आप स्वयं जानते हैं कि मेरे पास न कोई धन-संपत्ति शेष है, न ही कोई राजनैतिक शक्ति। दोनों को ही त्यागकर मैं लगभग रिक्त हूँ। फिर भी आप लोग समय और पैसा खर्च करके आते हैं, सुनते हैं, तर्क-वितर्क करते हैं, तो फिर इससे ज्यादा मुझे क्या चाहिए? अतः मैं इन विचारों को कसौटी पर कसने का दायित्व आप

सभी को सौंपता हूँ। लोग सहमत होते हैं या नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि मेरे और दूसरों के बीच विचार मंथन में आपको क्या ठीक लगा, क्या गलत। यदि एक भी व्यक्ति किसी एक भी विषय पर मुझे ठीक मानता है, भले ही अन्य विचारों में वह मुझे गलत ही क्यों न समझे, वह साथी ही मेरी पूंजी होगा।

829 जयप्रकाश नारायण

8294. जयप्रकाश जी एक गंभीर विचारक थे और मुरारजी भाई ईमानदार प्रशासक।

8295. लोक स्वराज्य की जितनी स्पष्ट अवधारणा जयप्रकाश की थी, उतनी विनोबा की नहीं थी। गांधी के मरने के कुछ वर्ष बाद ही जयप्रकाश ने लोक स्वराज्य पुस्तक लिखकर समाज का जो मार्गदर्शन किया था, वह स्वतंत्र भारत में हिंद स्वराज से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

8296. गांधी के बाद समाजशास्त्र तथा लोकतंत्र की सबसे अच्छी समझ जयप्रकाश जी को थी। जयप्रकाश जी सत्ता की राजनीति से दूर रहकर राजनीति पर सामाजिक नियंत्रण के पक्षधर थे। विनोबा जी राजनीति से दूर रहकर समाज सुधार चाहते थे और राममनोहर लोहिया सत्ता की राजनीति में रहकर राजनीति का शुद्धिकरण चाहते थे। जयप्रकाश जी की लाईन अन्य सबकी तुलना में गांधीवाद के अधिक नजदीक थी। विनोबा जी ने न कभी जयप्रकाश की लाईन का समर्थन किया न जयप्रकाश का। जब जयप्रकाश जी ने अलग लाईन ली, तो विनोबा जी ने खुला विरोध किया। जयप्रकाश जी के बाद गांधी को सबसे अधिक समझने वाले व्यक्ति ठाकुरदास बंग हुए। बंग जी को सिद्धराज जी का समर्थन मिला, किन्तु साम्यवादी

मुस्लिम गठजोड़ प्रभावित टीम ने बंग जी की लाईन का खुला विरोध किया। इस विरोध का नेतृत्व कुमार प्रशांत ने किया। बंग जी के बाद आंशिक रूप से अन्ना हजारे ने गांधी की लाईन पकड़ी, किन्तु अन्ना के पास ऐसी कोई टीम नहीं थी, जैसी जयप्रकाश जी या बंग जी के पास थी। अन्ना जी जल्दी ही राजनेताओं के पीछे चलने को मजबूर हो गए।

830 धर्म निरपेक्षता

8300. हिन्दुओं की सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए हिन्दू कोड बिल को भले ही लागू किया जाय, किन्तु मुसलमानों की आन्तरिक बुराइयों में हस्तक्षेप उनके धर्म का उल्लंघन है। धर्म निरपेक्षता के इस अतिवादी तथा एकपक्षीय सोच ने इन सब धर्मनिरपेक्षों को हिन्दू समाज में अविश्वसनीय बना दिया।

8301. भारत में धर्मनिरपेक्षता का अस्तित्व खतरे में है। यदि भारत का आम हिन्दू साम्प्रदायिक हो गया, तो भविष्य में धर्मनिरपेक्षता किसके सहारे जीवित रहेगी?

8302. साम्प्रदायिकता को कुचला जा सकता है, किन्तु संतुष्ट नहीं किया जा सकता। महात्मा गांधी सरीखे महापुरुष भी मुस्लिम साम्प्रदायिकता को न संतुष्ट कर सके, न ही समझौता। और अंत में मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने भारत विभाजन कराकर ही दम लिया।

8303. अब तक धर्मनिरपेक्षता के दो रूप दिख रहे हैं:- (1) संघ परिवार, जो मुस्लिम साम्प्रदायिकता के विरोध को ही धर्मनिरपेक्षता समझता है। (2) संघ रहित शेष लोग, जो संघ विरोध को ही धर्मनिरपेक्षता मानकर अपनी योजना बना रहे हैं।

831 संघ

8310. एकमात्र संघ ही ऐसा संगठन है, जिसमें धर्म और समाज की चिन्ता करने वाले लोगों का भारी मात्रा में समावेश हुआ। भारत में कोई अन्य ऐसा संगठन नहीं है, जो धर्म, समाज और चरित्र की एक साथ चिन्ता करता हो।

8311. संघ उग्रवाद की राह पर चलता रहा तो जिस तरह आज बजरंग दल के कुछ लोग सामने आये हैं, उसी तरह भविष्य में संघ के भी कुछ लोग सामने आ सकते हैं। पानी में डूबकर मछली निगलने का सुख कभी दुःख में भी बदल सकता है। अब यदि कोई कार्यकर्ता अति उत्साह में आकर किसी निश्चित सीमा रेखा से आगे चला जाता है, तो उसके कलंक के छींटे तो आप पर पड़ने स्वाभाविक ही हैं।

8312. हिंसा और केन्द्रीकरण संघ का स्वाभाविक गुण न होकर संगठनात्मक आधार है। जब कोई व्यक्ति या संगठन अपने गुण को संस्कार या सिद्धान्त के रूप में प्रचारित कर देता है, तो उस गुण को निरंतर बनाये रखना उसकी मजबूरी भी हो जाया करती है। ऐसे गुण से पीछे हटना उस व्यक्ति या संगठन के लिए बहुत हानिकर हो जाता है। कभी-कभी तो यह हानि सामान्य से भी कई गुना अधिक हो जाती है।

8313. संघ परिवार में सीधे-साधे भावना प्रधान लोगों का वर्चस्व है। वे न दूरगामी सोच सकते हैं, न योजना बना सकते हैं। संघ परिवार में कूटनीतिज्ञ कभी रहे ही नहीं। यही कारण है कि घटनाओं के ऐतिहासिक मोड़ पर इनके निर्णय दूरगामी न होकर तात्कालिक

होते हैं, जिनका दुष्प्रभाव ये लम्बे समय तक भोगते रहते हैं। नरेन्द्र मोदी के प्रभावी होने के बाद स्थितियां बदल रही हैं।

8314. संघ समाज से ऊपर धर्म या राष्ट्र तो मानता है, किन्तु समाज को ऊपर नहीं मानता। राष्ट्र भावना को भी कभी राष्ट्रवाद की दिशा में नहीं बढ़ना चाहिए, क्योंकि हिन्दू समाज को राष्ट्र या धर्म से ऊपर मानता है, जो अन्य लोग नहीं मानते।

8315. संघ न तो हिन्दुओं की समस्या है, न ही समाधान। दवा और टानिक में फर्क होता है। यदि दवा के स्थान पर टानिक दिया जाये, तो आवश्यक नहीं कि गंभीर बीमारी ठीक ही हो जाये। किन्तु यदि स्वस्थ व्यक्ति टानिक की जगह दवा लेना शुरू कर दे अथवा बीमारी ठीक होने के बाद भी लम्बे समय तक दवा लेता रहे, तो दवा के साइड इफेक्ट भी हो सकते हैं। स्वतंत्रता के पूर्व संघ की गतिविधियों पर हिन्दू समाज को संदेह नहीं था, क्योंकि स्वतंत्रता के पूर्व तक संघ समाज निर्माण तक सीमित था। किन्तु स्वतंत्रता के बाद एकाएक संघ ने समाज निर्माण की लाईन छोड़कर सावरकरवादियों के प्रभाव में आकर राष्ट्र निर्माण शुरू कर दिया, जिसके अन्दर सीधा-सीधा सत्ता संघर्ष छिपा था, तो हिन्दू समाज को संघ के प्रति अविश्वास होने लगा। अब धीरे-धीरे हिन्दुओं में विश्वास बढ़ रहा है।

8316. अपने विस्तार के लिए संघ प्रेम, सेवा, सद्भाव का भी सहारा लेता रहा है। यदि कोई आकस्मिक दुर्घटना हो जाती है, तो संघ बिना भेदभाव के भी सेवा करने को आगे आ जाता है। हिन्दुत्व को गंभीर

रूप से प्रभावित करने वाली बीमारियों से टकराने में संघ अकेला सबसे आगे रहा है।

8317. संघ हिन्दुओं का रक्षक मात्र है, स्वतंत्र विचारधारा नहीं। रक्षक यदि विचारों में भी हस्तक्षेप करता है, तो घातक होता है। स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक व्यवस्था ने हिन्दुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर रखा, जिसके विरुद्ध संघ ने निरन्तर अलख जगाई, इसलिए संघ बधाई का पात्र है।

8318. मैं मानता हूँ कि संघ परिवार ने हिन्दुओं के इस्लामीकरण से बचाव में बहुत अच्छा काम किया है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि संघ परिवार का यह कार्य अच्छा होते हुए भी, कोई आदर्श कार्य है। इस बिंदु में कुछ लोगों ने संघ परिवार की अनेक दोषपूर्ण नीतियों का उल्लेख किया है। इसमें उनके चश्मे का दोष है। मुझ जैसे दूसरे रंग का चश्मा पहनने वालों को ये ही नीतियां अच्छी लगती हैं। इसके लिए लंबी बहस की जरूरत है, अलबत्ता संघ की नीतियां अधिनायकवाद की ओर झुकी अवश्य हैं। देश को नेताओं ने लूटा ही इस कदर है, कि कभी-कभी अच्छा विचारक भी यह सोचने को विवश हो जाता है कि लोकतंत्र के नाम पर हजारों हिटलरों की तुलना में एक ही हिटलर होता, तो अच्छा था। तब आम जनता सुकून से रहती।

8319. गांधी हत्या में संघ परिवार का कोई हाथ नहीं था। इसके बाद भी उस समय से आज तक गांधी हत्या का सर्वाधिक नुकसान संघ परिवार ही उठा रहा है। यदि शेर की सवारी का आपने लाभ उठाया है, तो शेर के खतरे कौन उठायेगा। यदि संघ और गांधी हत्या कांड

एक साथ नहीं जोड़े गये होते, तो संघ का विस्तार किसी के रोकने से रूकने वाला नहीं था किन्तु एक अप्रत्याशित घटना ने संघ को बहुत नुकसान किया।

8320. संघ को कुछ लोगों ने उग्रवादी बताया और आगे बढ़कर यह भी बताया कि गांधी हत्या के बाद इसको कुचल देना चाहिए था। जबकि गांधी हत्या में संघ का कोई लेना-देना नहीं था। बल-प्रयोग और हिंसा का अधिक समर्थन न कभी संघ ने किया है, न कभी करेगा। किन्तु संघ एक कायर, डरपोक, दब्बू प्रकृति का संगठन नहीं है, यह देशभक्तों का संगठन है, जिसके बलिदान का गौरवमयी इतिहास है।

8321. अकेला संघ परिवार ही ऐसा था, जो हिन्दू समाज को जोड़कर तथा एकजुट करके बहुसंख्यक तुष्टिकरण का प्रयास करता था। संघ विचारधारा भारतीय राष्ट्रवाद की पोषक है, तो शेष दोनों इस्लाम और साम्यवाद राष्ट्रवाद के विपरीत अंतराष्ट्रीय संगठनों का संवाहक।

8322. लगभग पूरा का पूरा संघ परिवार, ईमानदार तथा भावना प्रधान होता है। संघ परिवार के लोगों का एक घोषित चरित्र है कि वे आर्थिक मामलों में ईमानदार हैं। यही कारण है कि अब तक राजनीति में ईमानदारी के सवाल पर मोदी और संघ परिवार एकजुट हैं।

8323. जिन लोगों ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को ब्राह्मणवादी विचारधारा, जाति प्रथा के साथ जोड़ा, यह मेरे विचार में या तो उनका अज्ञान है या संघ के विरुद्ध कोई दुराग्रह। ब्राह्मणवादी विचारधारा कभी हिंसा का समर्थन नहीं कर सकती, जबकि संघ, हिंसक विचारों का समर्थक हैं। ब्राह्मणवादी विचारधारा किसी संगठन से कभी

नहीं बनती, जबकि संघ परिवार एक संगठन है। मेरे विचार में संघ परिवार को क्षत्रिय विचारधारा कहा जा सकता है।

833 सावरकरवादी

8330. सावरकरवादी और साम्यवादी उतने ही कट्टर होते हैं, जितने कि मुसलमान। ये व्यक्ति के रूप में तो कहीं भी रह सकते हैं, किन्तु दल के रूप में ये पूरी तरह सतर्क और सक्रिय रहते हैं। सावरकरवादी गांधी विरोध का प्रत्यक्ष झंडा उठाये घूम रहे थे, तो साम्यवादी सर्वोदय में चुपचाप घुसकर उसका ब्रेन-वाश कर रहे थे।

8331. सावरकरवादियों की पकड़ घट रही है और भाजपा की पकड़ मजबूत हो रही है। जिन्ना की तारीफ करने वाले आडवाणी अब भी सम्मान के पात्र बने हुए हैं।

8332. सावरकरवादियों ने पूरा प्रयास किया कि राम जन्मभूमि का मुद्दा किसी भी रूप में उसके हाथ से न निकले, लेकिन नरेन्द्र मोदी और मोहन भागवत ने उनका प्रयास विफल कर दिया। आज सावरकरवादी, प्रवीण तोगड़िया और उद्धव ठाकरे राम मंदिर मामले को दूर से देखने के लिए मजबूर हैं।

8333. यदि सावरकरवादियों को लगता है कि भारत के निवासियों में 80% हिन्दू हैं और वह उनकी बात को स्वीकार कर लेंगे, तो वे एक बार हिन्दू या हिन्दुस्तानी के मुद्दे पर ही चुनाव लड़कर देख लें कि उन्हें कितने प्रतिशत हिन्दू वोट देते हैं।

8334. सावरकरवादियों ने हिन्दुओं की सहनशीलता का राजनैतिक स्वार्थ के लिए दुरूपयोग किया। उनका उद्देश्य अगर हिन्दू सशक्तिकरण रहा होता, तो राम जन्मभूमि या कश्मीर की समस्या सुलझ गयी होती।

8335. अम्बेडकर ने स्वतंत्रता संघर्ष के समय भी अपनी राजनैतिक तिकड़म जारी रखी। ठीक इसी तरह सावरकरवादियों को भी न हिन्दू से मतलब है, न ही हिन्दू धर्म से। प्रवीण तोगड़िया और उद्धव ठाकरे ने जितनी जल्दी अपनी निष्ठाएँ बदल दीं, वह स्पष्ट उदाहरण है।

8336. सावरकरवादी लोग स्वयं हिंसा नहीं करते, बल्कि दूसरों को हिंसा के पक्ष में प्रेरित करते रहते हैं। कट्टरवादी मुसलमान भी लगभग ऐसा ही करते हैं।

8337. वीर सावरकर का पूर्वार्द्ध कार्यकाल गांधी की तुलना में अधिक संघर्ष का रहा था। मैंने अंडमान की सेल्यूलर जेल को देखकर उनके कष्टों का अनुभव भी किया। जेल में समझौते के बाद सावरकर पर संदेह है कि उन्होंने पूरी ईमानदारी से अंग्रेजों का काम किया। अंग्रेज तीन काम चाहते थे:- (1) भारत में हिंदू-मुस्लिम का अलग-अलग ध्रुवीकरण। (2) असहयोग आंदोलन का विरोध। (3) गांधी से मुक्ति। इन तीनों दिशाओं में सावरकर की सक्रियता उनकी जेल के बाद की देशभक्ति पर संदेह खड़े करती है।

834 संघ परिवार और नरेन्द्र मोदी

8340. नरेन्द्र मोदी नीतियों के आधार पर गांधी या सूफीमत की प्रशंसा कर रहे हैं और संघ परिवार परिस्थितियों के आधार पर गांधी और सूफीमत की प्रशंसा करता है।

8341. सरकार ने परिवार व्यवस्था को कभी संवैधानिक न मानकर सिर्फ कानूनी माना। संघ परिवार ने कभी परिवार व्यवस्था को संशोधित स्वरूप में संवैधानिक व्यवस्था बनवाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया?

अन्य सभी दल व्यक्ति, वर्ण, जाति, धर्म को संविधान सम्मत मानते हैं। संघ परिवार ने व्यक्ति, परिवार, गांव और जिले की मुहिम क्यों नहीं चलाई? मेरे विचार से संघ परिवार ने इस संबंध में भूल की है।

8342. संघ परिवार की तो जन्मघुट्टी ही केन्द्रित शासन प्रणाली से शुरू होती है। संघ परिवार और उनके चेहरे नरेन्द्र मोदी घोषित रूप से केन्द्रीकरण के पक्षधर हैं, क्योंकि संघ परिवार की घोषित नीतियों में केन्द्रित राजनीति सबसे ऊपर है।

8343. एक तरफ संघ परिवार और नरेन्द्र मोदी की जुगलबंदी है, तो दूसरी तरफ अनेक स्वार्थी राजनेताओं का संयुक्त समूह। नरेन्द्र मोदी अभी सबसे आगे दिख रहे हैं, जिनकी गति बहुत तेज है। फिर भी, वे अगले चुनाव में कहां तक निकल पाएंगे, यह पता नहीं।

835 संघ और राजनीति

8350. संघ परिवार की नीयत अर्द्ध-राजनैतिक है। उसकी नीतियाँ साम्प्रदायिकता से भी प्रभावित है और पूंजीवाद से भी। परिणाम स्वरूप वे अन्य समस्याओं के तो समाधान की चिन्ता करते हैं, किन्तु आर्थिक असमानता और श्रम शोषण पर नियंत्रण की वे कभी नहीं सोचते। मिलावट की रोकथाम के विषय में भी वे चुप ही रहते हैं। क्योंकि मिलावट और व्यापार का चोली-दामन का संबंध बन गया है। सबसे दुखद है कि संघ परिवार साम्प्रदायिकता के विषय में भी स्पष्ट नहीं है। उसके अनेक कार्य तो साम्प्रदायिकता को मजबूत करने में ही सहायक होते हैं।

8351. संघ के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन की यह सबसे अधिक गंभीर भूल थी कि उसने राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से कूदने का निर्णय लिया।

स्वतंत्रता से पूर्व संघ राजनीति से दूर रहकर राजनीति पर अंकुश की बात करता था। स्वतंत्रता के बाद संघ सत्ता-संघर्ष में शामिल हो गया।

8352. संघ राजनीति में इस्लाम विरोध के साथ-साथ और दलों की अपेक्षा चरित्र का अधिक पक्षधर रहा, जिसके परिणाम स्वरूप चरित्र विरोधियों का भी जमावड़ा संघ विरोधियों के पास इकट्ठा होने लगा।

8353. संघ को अपनी राजनैतिक सफलता के लिए साम्यवाद से यह दुर्गुण सीखना चाहिए कि अतिवादी हिंसक नक्सलवाद और अतिवादी अहिंसक गांधीवाद को एक साथ जोड़कर एक म्यान में दो तलवारें कैसे सुरक्षित रखी जा सकती हैं।

8354. संघ ने प्रारम्भ की राजनीति में तीन वैचारिक मुद्दे उठाये थे:- (1) समान नागरिक संहिता, (2) धर्म परिवर्तन पर रोक और (3) अल्प संख्यक बहु संख्यक की अवधारणा की समाप्ति। संघ मोदी के साथ मिलकर लगातार इस दिशा में सक्रिय है। संघ परिवार के ये तीन ऐसे शस्त्र थे, जो साम्प्रदायिकता पर अंकुश लगा सकते थे और धार्मिक मुसलमानों व इसाइयों को इससे विचार प्रसार में कोई दिक्कत नहीं होती। संघ परिवार ने इस विचार को बीच में ही छोड़कर हिन्दू राष्ट्र, घर वापसी जैसे मुद्दे उठाकर गलत किया है।

8355. मैं संघ के समान नागरिक संहिता के विचार का पूरा-पूरा समर्थक ही नहीं, बल्कि सहयोगी तथा सहभागी भी हूं। दूसरी ओर मैंने संघ के हिन्दू राष्ट्र के विचार का हमेशा विरोध किया है, जो अब तक है।

836 संघ के गुण और अवगुण

8360. अर्थनीति का तो संघ को कभी ज्ञान रहा ही नहीं, किन्तु अन्य मामलों में भी इनके पास लाठी के अलावा कभी कुछ नहीं रहा अन्यथा जिस तरह भारत के आम लोगों ने संघ परिवार की मदद की है और वह पूरी की पूरी व्यवस्था में बदलाव के लिए पर्याप्त थी। किन्तु जिस तरह साम्यवादी समय-समय पर अपनी नीतियों की समीक्षा करते रहते हैं उस तरह इन्होंने समीक्षा नहीं की। पिछले पांच-सात वर्षों से मोहन भागवत परिस्थितियों पर समीक्षा करके बदलाव कर रहे हैं, उसके बाद संघ अधिक विस्तार कर रहा है।

8361. संघ हमेशा केन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर रहा है, जिसका अन्तिम अर्थ है तानाशाही। अटल जी हमेशा विकेन्द्रित शासन व्यवस्था के पक्षधर रहे, जिसका अन्तिम अर्थ है लोकस्वराज्य। भाजपा राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवस्था में तो हमेशा अस्पष्ट रही और अपनी आन्तरिक व्यवस्था में सामंजस्यवादी। अब तक का उसका यही इतिहास रहा है।

8362. संघ वामपंथ के मुकाबले दक्षिणपंथ की दिशा में चलना चाहता है, जबकि उसे अब उत्तरपंथ की दिशा में चलना चाहिए अर्थात् संघ को परम्परा और आधुनिकता के बीच यथार्थ का सहारा लेना चाहिए।

8363. मैं संघ परिवार को सलाह दूंगा कि दुनिया को हिन्दू और गैर-हिन्दू के बीच बांटने की मूर्खतापूर्ण कवायद को छोड़कर संगठित इस्लाम बनाम धार्मिक इस्लाम में बांटकर धार्मिक इस्लाम को गैर-इस्लाम के साथ जोड़ दिया जाये।

8364. अखंड भारत का नारा संघ परिवार का नाटक मात्र है और कुछ नहीं।

8365. संघ परिवार की विचारधारा हिन्दुत्व से भी मेल नहीं खाती, बल्कि संघ की सोच इस्लाम और साम्यवाद के अधिक निकट है। किन्तु संघ की तुलना इस्लाम और साम्यवाद से भी नहीं की जा सकती। इस्लाम और साम्यवाद की तुलना में संघ हिन्दुत्व के बहुत निकट है। संघ में सुधार संभव है, किन्तु इस्लाम और साम्यवाद में कोई बदलाव नहीं हो सकता।

837 संघ और अन्य संगठन

8370. नीतीश जी ने संघ मुक्त भारत का जो नारा दिया, वह भी किसी के गले नहीं उतर रहा है, क्योंकि साम्यवाद और कट्टरवादी मुस्लिम गठजोड़ के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक संगठन के रूप में संघ जिन्दा है। ऐसी स्थिति में संघ मुक्त भारत का नारा उचित नहीं दिखता, बल्कि इस नारे में सिर्फ राजनैतिक स्वार्थ ही दिखता है। जिस तरह विकल्प दिखते ही कांग्रेस का औचित्य समाप्त दिखने लगा है, उसी तरह साम्यवाद कट्टरवादी इस्लामिक गठजोड़ को छूट देकर संघ मुक्त भारत की मांग कैसे उचित कही जा सकती है?

8371. संघ परिवार तथा इस्लामिक विचारधारा के लोग व्यक्तिगत चरित्र तथा खानपान के मामले में बहुत सतर्क रहते हैं, जबकि वामपंथी विचारधारा के लोग ऐसे व्यक्तिगत चरित्र और खानपान की नैतिकता को अपनी प्रगति में बाधक मानते हैं।

8372. संघ की आलोचना तभी कर सकते हैं, जब हम इस्लाम की भी समीक्षा करें। इस्लाम संघ की अपेक्षा कई गुना अधिक साम्प्रदायिक

है। मैं संघ और इस्लाम के बीच जब तुलना करता हूं तो पाता हूं कि इस्लाम की नीयत राजनीतिक रूप से भी खराब है, धार्मिक रूप से भी और सामाजिक रूप से भी। किन्तु संघ परिवार की नीयत सिर्फ राजनीतिक रूप से ही खराब है, सामाजिक और धार्मिक रूप से नहीं।

8373. संघ को रोकने के नाम पर सभी अल्पसंख्यक समूह सत्ता-लोलुप नेताओं की मद्द में हमेशा तैयार रहते हैं।

8374. मुसलमान आसानी से कट्टरता की ओर झुक जाता है और हिन्दू आसानी से कट्टरता के विरुद्ध हो जाता है। संघ इस प्राकृतिक अंतर को नहीं बदल सकेगा, यह उसे स्वीकार करना चाहिए।

8375. जब मुसलमान या इसाई हिन्दुओं को अपने साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं, तब संघ के साथ इनकी छीना-झपटी शुरू होती है, जिसका परिणाम है साम्प्रदायिक दंगा।

8376. भारत में हिन्दुत्व को खतरा है इस्लाम और इसाईयत से, जो हिन्दुत्व को संख्या बल में कमजोर करने का प्रयास करते रहते हैं। इनमें भी इसाई धन-बल का सहारा अधिक लेते हैं और इस्लाम संगठन शक्ति का।

8377. संघ के साथ यदि कुछ अन्य साम्प्रदायिक हिन्दुओं को छोड़ दें, तो अन्य आम हिन्दू नहीं समझता कि हिन्दू राष्ट्र की जगह पर हिन्दुस्तानी या भारतीय कहे जाने में क्या दिक्कत है।

8378. संघ परिवार और मुसलमान दो ध्रुव बनकर साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण करा रहे हैं और सर्वोदय इस धुरवीकरण में मुसलमानों के पीछे खड़ा है। स्पष्ट दिखता है कि साम्यवादियों ने गांधी हत्या

के बाद और आज भी सर्वोदय में छद्म नाम, छद्म रूप में प्रवेश किया और लगातार सर्वोदय को संघ और अमेरिका विरोध में उकसाते रहे। यदि भारत का प्रधानमंत्री भी किसी मुद्दे पर अमेरिका के साथ खड़ा दिखे, तो सर्वोदय सबसे आगे बढ़कर भारत के उस प्रधानमंत्री का भी विरोध करेगा। सर्वोदय के इन कार्यक्रमों की समीक्षा करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि सर्वोदय के लोगों को साम्यवादियों की ओर से धोखा दिया जा रहा है।

8379. यदि हम संघ, सिख, इस्लाम और साम्यवाद के बीच तुलना करें, तो सबसे ज्यादा खतरनाक विचारधारा साम्यवाद की है। साम्यवाद न परिवार व्यवस्था को मानता है, न समाज व्यवस्था को और न ही धर्म को। साम्यवाद की हर गतिविधि परिवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था को कमजोर करने वाली होती है। आज भारत में जो भी आर्थिक समस्याएं हैं या बढ़ रही हैं, वे सबकी सब साम्यवादी दुष्प्रचार की देन हैं। आज दुनिया में जो भी सत्य-असत्य के समान विश्वसनीय दिख रहा है, वह सब साम्यवादी प्रचार का परिणाम है। स्पष्ट है कि साम्यवादी दुनिया के सबसे ज्यादा चालाक कूटनीतिज्ञ माने जाते हैं और संघ परिवार सबसे कम। मुसलमान इस मामले में साम्यवाद के बाद हैं। संघ तो केवल साम्यवाद और इस्लाम की क्रिया के विरुद्ध प्रतिक्रिया मात्र करता है। वे लोग जब जैसा चाहते हैं, वैसा संघ से करवाते हैं और संघ वैसा ही करने में अपनी बहादुरी समझता है।

8380. जयप्रकाश जी ने जिस समय संघ की प्रशंसा की, वह देश-काल और परिस्थिति के अनुसार ठीक थी। आज भी वैसी स्थिति में

निर्णय करना ही होता है। मैं भी मानता हूं कि आज तक संघ में उच्च चरित्रवान त्यागी-तपस्वी लोगों का आधिक्य है। एक समय था कि पण्डित नेहरू तक ने युद्ध काल में संघ की भूमिका की प्रशंसा की थी तथा जयप्रकाश जी तक ने संघ को साम्प्रदायिक मानने से इनकार कर दिया था।

840 सर्वोदय और गांधी

8400. गांधी के बाद गांधीवादियों की नीतियां लगातार नीचे की ओर गईं, क्योंकि सर्वोदय ने संघर्ष का मार्ग छोड़कर पलायन का मार्ग पकड़ लिया। संघ का चरित्र जो इतना ऊंचा था, वह राजनीति में सक्रियता के कारण गिरता गया। यदि संघ और सर्वोदय बैठकर ठीक दिशा में सोचते तो शायद कुछ मार्ग निकलता, किन्तु वैसा नहीं होने से दोनों के पास विचार शून्यता हो गयी। 30 वर्ष पहले ज्ञान यज्ञ परिवार ने दोनों को एक साथ बिठाने की कोशिश की, जिसके अच्छे परिणाम अब दिख रहे हैं।

8401. सर्वोदय के अधिकांश कार्यक्रमों का ढांचा प्रच्छन्न साम्यवादी बनाते हैं। उनमें एक-एक भाषण में दस-दस बार अमेरिका और संघ विरोध शामिल होता है। विषय चाहे कोई भी हो, इससे मतलब नहीं। गांधी जी की मृत्यु के बाद गांधीवादी लोगों ने जो नीतियां अपनाई, उसमें देश भी लगातार पीछे गया है और सर्वोदय भी।

8402. गांधी और लोहिया हमेशा इस विचार के पक्षधर रहे कि यदि श्रम की मांग और मूल्य बढ़ जाये तो अवर्णों का जीवन स्तर भी अपने आप सुधर जायेगा और जातिवाद भी कम हो जायेगा, किन्तु न अम्बेडकर ने और न नेहरू ने गांधी-लोहिया की एक न सुनी। इन

दोनों ने मिलकर हिन्दुओं की छाती पर आरक्षण की एक और कील ठोक दी और बता दिया कि इस कील का बायां भाग सवर्ण कहा जायेगा और दायां अवर्ण।

8403. गांधी जी के वारिस विनोबा भावे तो इतने शरीफ निकले कि सब कुछ लुट जाने में भी वे सुख और शान्ति का अनुभव करते रहे। त्याग का कीर्तिमान बनाते-बनाते हमारी सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था लुट गई और विनोबा जी त्याग का कीर्तिमान बनाते रहे।

8404. गांधी आम नागरिकों को निर्णय की स्वतंत्रता दिलाने के संघर्ष को प्राथमिक कार्य मानते थे और प्राकृतिक खेती, शराब बन्दी, खादी, ग्रामोद्योग, श्रम-शोषण मुक्ति आदि को उसके बाद। विनोबा जी स्वावलम्बी भारत, ग्राम उद्योग, प्राकृतिक खेती, शराबबंदी, खादी, श्रम शोषण-मुक्ति के लिए संघर्ष करते रहे और नेहरू के नेतृत्व में राजनेताओं ने सारी सामाजिक स्वतंत्रता छीन ली।

8405. गांधी के जाने के बाद गांधी का नाम ही बीमारी की दवा बन गया। भाजपा ने गांधीवादी समाजवाद नाम से नयी विचारधारा स्थापित करने की कोशिश की, जो चल नहीं सकी। सर्वोदय ने गांधी के नाम पर ही ग्राम स्वराज्य नाम से नई अवधारणा प्रस्तुत की, जो गांधी के बाद आज तक समाज को गुलाम बनाकर रखने का मुख्य आधार बनी हुई है। ग्राम स्वराज्य का अर्थ स्वावलम्बी ग्राम नहीं होता है, बल्कि स्वराज्य ग्राम होता है। ग्राम स्वराज्य का अर्थ होता है गांवों को राजनैतिक तथा आर्थिक निर्णय की अधिकतम स्वतंत्रता।

8406. गांधी विरोधी सावरकरवादियों ने गांधी के नाम का तो विरोध किया, किन्तु गांधी विचारों का सुनियोजित तरीके से विरोध नहीं

किया। दूसरी ओर गांधी समर्थक सर्वोदय ने गांधी नाम की सुरक्षा की, संघ का विरोध किया, किन्तु गांधी विचारों की सुरक्षा नहीं की। गांधी समर्थक सर्वोदयी प्रत्यक्ष रूप से नक्सलवाद अथवा साम्यवाद का समर्थन करते हैं। परिणाम जो होना था वही हुआ, गांधी का नाम जीवित रह गया और गांधी का विचार मरणासन्न है।

8407. गांधी जी राजनीति से दूरी का अर्थ राजनीति में सक्रियता से दूरी तक सीमित मानते थे, किन्तु शासन की गलत नीतियों का विरोध, सत्याग्रह और आंदोलन के पूरी तरह पक्षधर थे, किन्तु विनोबा जी ने राजनीति में सक्रियता से दूरी का अर्थ राजनीति और शासन निरपेक्ष कर दिया।

8408. दुनिया जानती है कि गांधी इस्लाम की सारी बुराईयों को जानते थे। गांधी विदेशी स्वतंत्रता से संघर्ष के लिए मुसलमानों को भी जोड़कर रखना चाहते थे, किन्तु सर्वोदय स्वतंत्रता के बाद भी हिंदुओं की जगह पर मुसलमानों को अधिक प्राथमिकता देता रहा।

8409. गांधी समस्याओं के समाधानकर्त्ता थे और विनोबा संत। गांधी समझदार थे और विनोबा शरीफ। गांधी ने स्वतंत्रता दिलाई और विनोबा ने राजनेताओं की गुलामी। गांधी संस्थाओं के पक्षधर थे और नेता संगठन बनाना चाहते थे। नेताओं ने सीधे-साधे विनोबा को धोखा देकर एक सर्व-सेवा-संघ नाम से गांधीवादियों का संगठन बना दिया। बेचारे विनोबा जीवन भर समाज सुधार का कार्य करते रहे और देशभर के राजनेता सारे समाज को राजनैतिक आधार पर गुलाम बनाने में सफल हो गये।

8410. गांधी जी के नाम पर सर्वोदय संस्थाओं से जुड़े कुछ लोगों के

लिए लोक स्वराज्य आवश्यक नहीं। ये एनजीओ चलाकर करोड़ों रूपया विदेशी धन ले भी सकते हैं और विदेशी संस्थाओं को गाली भी दे सकते हैं। ये समाज को त्याग का उपदेश भी दे सकते हैं और स्वयं संस्था की सम्पत्तियों पर अनधिकृत कब्जा भी बनाये रख सकते हैं। ये अतिवादी अहिंसा का नाम लेकर अतिवादी हिंसा का समर्थन भी कर सकते हैं। ये ब्रह्मचर्य के उपदेश के साथ साथ विवाहित होते हुए भी दूसरी महिला को घर में रख सकते हैं। ये दूसरों को केस मुकदमों से दूर रहने की सलाह देते हैं और अपनी संस्था के मुकदमें अपने अन्दर न निपटाकर न्यायालय से निपटाते हैं। गांधीवाद इनकी ढाल है, खादी इनका आवरण है। वास्तव में इनका गांधीवाद से कोई सम्बन्ध नहीं।

841 सर्वोदय और संघ

8411. यदि हम सर्वोदय परिवार और संघ परिवार की तुलना करें, तो दोनों में अनेक समानताओं के बाद भी दोनों में काफी असमानताएँ हैं। संघ एक संगठन का स्वरूप है, जिसके नेता निर्णय करते हैं और कार्यकर्ता तदनुसार आचरण करते हैं। जबकि सर्वोदय का प्रत्येक कार्यकर्ता ही स्वयं में एक नेता है, इसमें न तो एक नेतृत्व है, न ही प्रतिबद्ध अनुकरणकर्त्ता। संघ में पूरी तरह अनुशासन है, तो सर्वोदय में पूरी तरह स्वशासन। संघ का एक स्पष्ट लक्ष्य है हिन्दू तुष्टीकरण के माध्यम से भारतीय राजनीति में निर्णायक भूमिका अदा करना। सर्वोदय दिशाहीन है, उसका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं।

8412. सर्वोदय ने इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरुद्ध एक निर्णायक पहल की। किन्तु सर्वोदय से भूल हुई कि उसने उक्त पहल करने में

संघ तथा साम्यवादियों को मिलाकर एक मंच बना दिया। सर्वोदय गुजरात में वही भूल दुहराने जा रहा है। गुजरात में भाजपा को हराकर कांग्रेस को सत्ता दिलाने से सर्वोदय की अपनी शक्ति का प्रदर्शन तो संभव है, किन्तु समाज को कोई लाभ नहीं होगा। संघ को साथ लेकर सर्वोदय ने कांग्रेस को सबक सिखाया था और अब कांग्रेस को साथ लेकर भाजपा को सबक सिखाना किसी दृष्टि से समाज की समस्याओं के समाधान हेतु कोई ठोस पहल नहीं है। सर्वोदय को इससे बचना चाहिए।

8413. साम्प्रदायिक तत्वों के झगड़े में मैं किसी एक का पक्ष लेकर धर्मनिरपेक्ष होने का अपना अहं तुष्ट नहीं कर सकता था और वास्तविक धर्मनिरपेक्षता का गुजरात में कोई अस्तित्व नहीं था।

8414. एक-दूसरे पर अन्याय करने के उद्देश्य से संघर्ष कर रहे मुस्लिम और संघ परिवार में से किसी एक का ऐसा विरोध करना, जो दूसरे को मजबूत कर दे, न तो न्यायसंगत है और न ही समस्या का समाधान।

8415. मुसलमान राजनीति से अपना धार्मिक उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं तथा संघ धर्म से अपना राजनैतिक उद्देश्य पूरा करना चाहता है। मुसलमान अपने संगठित वोटों के आधार पर राजनैतिक दलों को अपने इशारे पर नचाता रहता है तथा संघ परिवार, मुसलमानों का नाम लेकर अपना वोट बैंक मजबूत करता रहता है।

8416. संघ प्रत्यक्ष रूप से बल प्रयोग का समर्थक है। उसकी कथनी-करनी में कोई फर्क नहीं। सर्वोदय प्रत्यक्ष रूप से अहिंसा की बात करता है, किन्तु परोक्ष रूप से नक्सलवाद, मुस्लिम आतंकवाद तक का

समर्थन करता है। इनकी कथनी और करनी में आसमान जमीन का फर्क है। मेरे विचार में सर्वोदय भटक रहा है।

8417. संघ और साम्यवादी उतने ही कट्टर होते हैं, जितने कि मुसलमान। ये व्यक्ति के रूप में तो कहीं भी रह सकते हैं, किन्तु दल के रूप में ये पूरी तरह सतर्क और सक्रिय रहते हैं।

8418. मैं भारत में संगठनात्मक हिन्दुत्व की तुलना में गुणात्मक हिन्दुत्व के होने का पक्षधर रहा हूं। मैं उम्मीद करता हूं कि आर्य समाज तथा सर्वोदय भी वैचारिक तथा गुणात्मक हिन्दुत्व के समर्थन में अपनी पुरानी गलतियों की समीक्षा करेंगे।

8419. स्वतंत्रता और उच्छृंखलता के बीच एक अस्पष्ट सीमा रेखा होती है। इस सीमा रेखा के भीतर का आचरण व्यक्ति की स्वतंत्रता मानी जाती है और उसका उल्लंघन उच्छृंखलता मानी जाती है। व्यक्ति सीमा रेखा के बाहर जाने से स्वतः अपने को रोक लेता है, तो उसे स्वशासन कहते हैं। किन्तु यदि ऐसा व्यक्ति स्वतः को नहीं रोक पाता और परिवार या समाज के भय से ही रुकता है, तो उसे अनुशासन कहते हैं।

8420. सर्वोदय सत्य और अहिंसा के मार्ग से शासन मुक्ति, भय मुक्ति और शोषण मुक्ति का प्रयास करने वालों का समूह है।

8421. संघ नेतृत्व पूरी तरह सतर्क, सक्रिय और चालाक है। सर्वोदय नेतृत्व सक्रिय तो है, किन्तु ढीला-ढाला तथा शरीफ प्रवृति का है। संघ का उद्देश्य सत्ता प्रधान है और परिणाम सफलता है, जबकि सर्वोदय का उद्देश्य जनहित का है, किन्तु परिणाम शून्य है।

843 सर्वोदय और साम्यवाद

8430. साम्यवाद केन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर है और सर्वोदय विकेन्द्रित शासन व्यवस्था का पक्षधर। जब भी सर्व सेवा संघ में अधिकारों के विकेन्द्रीकरण की बात आती है, तो वामपंथी वर्ग किसी न किसी बहाने उसे पीछे करने में सफल हो जाता है। वामपंथी सर्वोदय को कभी लोक स्वराज्य की दिशा में आगे नहीं बढ़ने देते।

8431. सर्वोदय वालों पर न इस्लाम का कोई प्रभाव है, न ही मुसलमानों का कोई दबाव है। इनके मन में संघ के प्रति घृणा है और वामपंथी उस घृणा को इस्लाम समर्थन के रूप में हमेशा भुनाते रहते हैं। वर्तमान सर्वोदय पूरी तरह साम्यवाद की 'बी' टीम है।

8432. राजनीति से दूर रहने का नाटक करने वाला सर्वोदय गुजरात के चुनाव में अपना झण्डा और डंडा लेकर पहुंच गया। सर्वोदय का मोदी के विरोध में गुजरात चुनाव में प्रत्यक्ष कूदना गलत था। नरेंद्र मोदी के विरोध को सर्वोदय ने साम्यवादियों के प्रभाव में आकर अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया। उससे सर्वोदय को बहुत नुकसान हुआ।

8433. आज स्थिति यह हो गई है कि सर्वोदय पूरी तरह आतंकवादी वामपंथियों का भोंपू बना हुआ है। वामपंथ की बिल्कुल साफ नीति है "अमेरिका विरोध"। इसके लिए वे इस्लाम के साथ भी गठजोड़ कर सकते हैं और आतंकवाद के साथ भी। सर्वोदय के किसी भी कार्यक्रम में आप अमेरिका विरोध और इस्लाम समर्थन अवश्य पाएंगे। यहां तक कि वामपंथियों के बीच भी अति वामपंथ और

नरम वामपंथ की बात उठती है, तो सर्वोदय हमेशा उग्र वामपंथ के पक्ष में खड़ा होता है, नरम वामपंथ के पक्ष में नहीं।

8434. सर्वोदय न कभी इस्लामिक आतंकवाद के विरुद्ध आवाज उठाता है, न ही नक्सलवादी हिंसा के खिलाफ। उसे बंगाल की मार्क्सवादी हिंसा तब तक नहीं दिखती, जब तक वह नक्सलवादियों के खिलाफ न हो। हाथ में गांधी की अतिवादी अहिंसा का झण्डा और सड़क पर अतिवादी हिंसा के साथ गठजोड़। सर्वोदय संघ विरोध के नाम पर इस्लामिक आतंकवाद और वामपंथी उग्रवाद से भी गठजोड़ करना शुरू कर दे, तो हमें हिंसा और अहिंसा के बीच स्वतंत्र सोच बनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

8435. सिद्धान्त रूप में एकमात्र सर्वोदय ही है, जो अकेन्द्रीकरण का भी अर्थ समझता है और विकेन्द्रीकरण का भी। लेकिन वामपंथी सर्वोदय के लोगों को ठीक दिशा में सोचने नहीं देते।

8436. बंगाल के साम्यवादी सरकार और नक्सलवादियों के बीच टकराव में भी सर्वोदय की सहानूभूति हिंसा समर्थक नक्सलवादियों के साथ ही रही।

8437. वामपंथ मोटिवेटर है और सर्वोदय मोटिवेटेड है। सर्वोदय में वामपंथी कम हैं, किन्तु प्रभाव उन्हीं का है। वामपंथी जैसा चाहते हैं वैसा ही सर्वोदय करता है। लेकिन इनकी न नीयत खराब है, न ही इनमें भ्रष्टाचार है। ये तो वामपंथियों की सोच को राष्ट्रहित समाजहित मानकर उसी तरह काम करते रहते हैं।

8438. सर्वोदय का उच्च नेतृत्व साम्यवादियों के इस सीमा तक प्रभाव में था कि संघ अति सतर्क था। संघ स्वयं इतने घमंड में था कि

बस अब कुछ ही वर्षों में भारत की सम्पूर्ण सत्ता उसकी मुट्ठी में आने वाली है। संघ अपनी योजना में सफल हो गया और सर्वोदय साम्यवादियों के साथ असफल हो गया।

8439. मैंने कई बार लिखा है कि सर्वोदय साम्यवादियों की कठपुतली बना हुआ है। ऐसा दिखता है कि सर्वोदय गांधीवादी संस्था न होकर साम्यवादियों की 'बी' टीम है।

8440. मैंने सर्वोदय को साम्यवाद प्रभावित लिखा है। आप विचार करिये कि हमेशा सर्वोदय के लोग नक्सलवादियों के पक्ष में ढाल बनकर खड़े हो जाते हैं। कभी सर्वोदय के लोगों ने साम्यवाद की आलोचना नहीं की, किन्तु पूंजीवाद की आलोचना में हमेशा मुखर रहे।

8441. आज भी सर्वोदय लोक स्वराज्य की बात से तो दूरी बनाता है, और दूसरी ओर नक्सलवादियों की मदद करता है। संसद पर आक्रमण के संदेहास्पद आरोपी प्रो0 गिलानी का सम्मान करता है, साम्यवादियों के इशारे पर विद्युत उत्पादन योजनाओं का विरोध करता है। यहां तक कि साम्यवादियों के कहने से नेहरू परिवार का भी विरोध करने के लिए सर्वोदय तैयार रहता है। सन् 1947 से लेकर आज तक लगभग पूरा सर्वोदय नक्सलवाद की भी ढाल बनकर खड़ा हो जाता है और मुस्लिम आतंकवादियों की भी।

8442. सर्वोदय की स्थिति यहां तक खराब हुई कि सर्वोदय के लोगों ने हिन्दुओं को भी संघ परिवार के साथ जुड़ा हुआ मान लिया, जबकि भारत के आम हिन्दुओं ने कभी संघ का साथ नहीं दिया। गांधी हिन्दुत्व को महत्वपूर्ण मानते थे और इस्लाम को परिस्थिति के अनुसार। सर्वोदय साम्यवाद को महत्वपूर्ण मानने लगा और हिन्दुत्व को परिस्थिति के अनुसार।

845 सर्वोदय

8450. संघ के लोगों में भी मेरे विचार उसी तरह पढ़े और समझे जाते हैं, जैसी मैं अपेक्षा करता हूं। सर्वोदय के लोगों ने संघ की आलोचना न करके या तो विरोध किया या घृणा फैलायी। सर्वोदय ने सावरकरवादियों की गलतियों को संघ के साथ जोड़ने की गलती की। सर्वोदय ने संघ का विरोध करते-करते हिंदू और हिंदुत्व का भी विरोध शुरू कर दिया। इससे समाज में संघ तो कमजोर नहीं हुआ, सर्वोदय अवश्य कमजोर हुआ।

8451. गांधी जी के विचारों के आधार पर जो समाज में जन-जागृति पैदा करने का प्रयत्न करें वे सर्वोदयी होते हैं। सर्वोदय की हमेशा नीति रही है कि उच्च वर्गों में इस तरह कर्तव्य भाव जागृत किया जाये कि शोषण समाप्त हो और वर्ग-संघर्ष कमजोर हो। लेकिन वर्तमान सर्वोदय ठीक इसके विपरित काम कर रहा है।

8452. आज भारत की सबसे बड़ी समस्याएं आंतकवाद का विस्तार और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाकी समाप्ति के रूप में हैं। इन समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करने के स्थान पर संघ परिवार मुसलमानों के पीछे पड़ा है और सर्वोदय संघ के पीछे, यहां पर दोनों ही गलत हैं।

8453. सर्वोदय ने तीन काम पूरी ताकत से किये और अब भी कर रहे हैं:- (1) संघ विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण, (2) अमेरिका विरोध और वामपंथी हिंसा का समर्थन और (3) पूंजीवाद विरोध और श्रम शोषक अर्थनीति का समर्थन। तीनों प्रयत्नों से शासक वर्ग मजबूत और शासित वर्ग कमजोर हुआ। तीनों ही प्रयत्नों ने राजनीतिज्ञों का उद्देश्य पूरा किया।

8454. समाज में कोई वैचारिक बहस न छिड़े, समाज में आन्तरिक संघर्ष बढ़ता रहे, समाज राज्य के अधिकारों के विरुद्ध कोई संगठित प्रयास न करे, यह कार्य सर्वोदय के दोनों धड़े दिन-रात करते रहते हैं।

8455. हर धूर्त्त लगातार यह प्रयत्न करता है कि उसके अन्य साथी पूरी तरह शरीफ बने रहें। शराफत की कोई सीमा न रहे। समाज के सभी क्षेत्रों में यह प्रवृत्ति काम कर रही है और सर्वोदय भी इससे भिन्न नहीं है। गांधी जिस बीमारी से कोसों दूर थे, उसी बीमारी ने सर्वोदय को जकड़ लिया है, यह चिन्ता की बात है।

8456. नेहरू जी ने योजनापूर्वक विनोबा जी को गुमराह किया, जो आज तक जारी है। आज भी सर्वोदय नेहरू विचारधारा से उबर नहीं पाया है।

8457. त्याग और तपस्या करने वाले संघ में सर्वोदय की अपेक्षा क्षमता अधिक है, किन्तु संघ एक संगठन है और सर्वोदय संस्था। सर्वोदय के विचार पहले संकीर्ण नहीं थे, जो अब है और संघ के विचार पहले संकीर्ण थे, जो अब नहीं है।

8458. संघ परिवार सत्ता-संघर्ष में लिप्त है, तो गायत्री परिवार, आर्य समाज आदि संस्था सिर्फ सेवा कार्य तक सीमित है। सर्वोदय ने राजनीति से दूर रह कर राजनीति पर सामाजिक नियंत्रण को प्राथमिकता घोषित किया।

8459. देश जान गया है कि स्वतंत्रता के बाद गांधी जी के ग्राम स्वराज्य को भ्रमित करने में सिर्फ राजनेताओं की ही भूमिका न होकर सर्वोदय नेतृत्व का भी मौन समर्थन रहा है। समाज को सिर्फ संघ परिवार से ही नहीं, सर्वोदय से भी प्रश्न करने का अधिकार है।

8460. गांधीवादियों ने गांधी के मरते ही सर्वोदय के नाम पर इस योजना में स्वयं को एक पक्ष के रूप में शामिल कर लिया। गांधीवादी संघ के एकपक्षीय विरोध के लिए इस सीमा तक उतावले हो गये कि उन्होंने न केवल गांधी के प्रयत्नों को छोड़ा, बल्कि उससे आगे बढ़कर उन्होंने सरकारीकरण और हिंसा तक का समर्थन शुरू कर दिया। सर्वोदय का हर कार्यकर्ता निजीकरण का खुलेआम विरोध करता रहा, पूंजीवाद को गाली देता रहा, संघ और हिन्दुत्व के विरोध का नेतृत्व करता रहा, किन्तु सरकारीकरण, साम्यवाद हिंसा या इस्लामिक हिंसा पर या तो वह चुप रहा या उसने मौन समर्थन किया।

8461. सर्वोदय दिशाहीन है। उसका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं। कभी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तो कभी स्वदेशी का नारा और कभी ग्राम स्वराज्य तो कभी साम्प्रदायिकता उन्मूलन। एक वर्ष के लिए भी इनके लक्ष्य टिकाऊ या स्पष्ट नहीं होते।

8462. यदि अब भी सर्वोदय ने अपनी नीतियों में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं किया, तो सर्वोदय समाज की समस्याओं के समाधान में कोई निर्णायक भूमिका निभा सकेगा, इसमें मुझे पूरा संदेह है।

8463. सर्वोदय नेतृत्व हमेशा ही लोक और तंत्र के बीच पर्दे के रूप में उपयोग किया गया। जब भी तंत्र के सामने कोई संकट आया, तो सर्वोदय नेतृत्व ने विरोध की पहल हाथ में लेने का नाटक किया। लेकिन सर्वोदय तब तक तंत्र का कोई विरोध नहीं करता, जब तक साम्यवादी तंत्र का विरोध ना करें।

8464. सर्वोदय को चाहिए था कि वह साम्प्रदायिक और धर्मनिरपेक्ष

या हिंसक और शान्ति-प्रिय वर्ग विस्तार करता। किन्तु सर्वोदय मुसलमान और हिन्दू या पूंजीवाद और वर्ग-संघर्ष में उलझ गया।

8465. सर्वोदय को राजनीति से पूरा परहेज है। चुनाव में प्रायः वोट भी नहीं देते हैं, किन्तु गुजरात के चुनाव में बिलकुल आगे जाकर भाजपा का विरोध करते हैं। इतना आगे जाकर कि उससे लगता है कि जैसे वह चुनाव सर्वोदय ही लड़ रहा है।

8466. मैं आज तक नहीं समझा कि हिंसा और साम्प्रदायिकता का जीवन भर गांधी ने विरोध किया, किन्तु गांधी के जाते ही सर्वोदय समाज ने नेहरू और वामपंथियों के प्रभाव में आकर सिर्फ संघ का विरोध किया तो दूसरी ओर संघ का विरोध करते-करते मुस्लिम साम्प्रदायिकता और नक्सलवाद समर्थक तक से समझौता कर लिया।

8467. स्वराज्य गांधी का लक्ष्य था और अहिंसा, सत्य, खादी, आदर्श ग्राम, छुआछूत निवारण आदि चरित्र निर्माण का मार्ग। गांधी हत्या के बाद सर्वोदय भटक गया और उसने मार्ग को ही लक्ष्य मान लिया। गांधी के विचार में सर्वोदय का अर्थ अधिकारविहीन और सर्वाधिकार सम्पन्न के बीच की दूरी को घटाना था, किन्तु वह दूरी निरंतर बढ़ती चली गई।

8468. जब मुसलमानों के पक्ष में अलग कानून बनते रहे, तब भी सर्वोदय परिवार ने ऐसे कानूनों का कोई विरोध नहीं किया। सर्वोदय परिवार के पतन का सबसे बड़ा कारण यह हुआ कि संघ परिवार को इस्लाम और साम्यवाद तो प्रत्यक्ष रूप से हिंसा के समर्थक दिखते थे, किन्तु सर्वोदय प्रत्यक्ष रूप से अहिंसा की बात करता रहा और

अंदर-अंदर संघ विरोध के नाम पर हिंसा करने वालों का साथ भी देता रहा।

8469. सर्वोदय आज तक यह स्पष्ट नहीं कर पाया कि कायरता और अहिंसा में क्या फर्क है। सर्वोदय ने प्रत्यक्ष रूप से राजनीति से दूरी बनाकर रखी, किन्तु यदि कहीं भारतीय जनता पार्टी या संघ परिवार के लोग मजबूत होते दिखे, तब सर्वोदय ने अपनी कंठी माला छोड़कर भारतीय जनता पार्टी को हराने में प्रत्यक्ष भूमिका अदा करनी शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि सर्वोदय को अहिंसक और गांधीवादी मानने की अपेक्षा नासमझ व नाटकबाज समझा जाने लगा। जब ठाकुरदास जी बंग, सिद्धराज ढढ्डा आदि ने समझाने का प्रयास किया तो सर्वोदय पूरी ताकत से इनके विरुद्ध ही खड़ा हो गया। आज भी जो गांधीवादी संघ विरोध की लाईन को छोड़कर लोकस्वराज्य और अहिंसक मार्ग पर बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, उनके साथ भी वामपंथी व इस्लाम समर्थक सर्वोदयी तालमेल बनाने के लिए तैयार नहीं हैं।

8470. गांधीवाद और अहिंसा का मजबूत समर्थक सर्वोदय ही जब नक्सलवाद और इस्लामिक कट्टरवाद का समर्थन करने लगा, तो हिंसा की भावना का मजबूत होना स्वाभाविक था।

850 विनोबा

8500. विनोबा में समझदारी की तुलना में शराफत अधिक थी। गांधी की सर्वोच्च प्राथमिकता थी राजनैतिक गुलामी से संघर्ष तो विनोबा की प्राथमिकता थी, आदर्श समाज निर्माण। विनोबा आदर्श समाज बनाते रहे और राजनेताओं ने सारे देश के अधिकार लूट कर उन्हें स्वदेशी गुलाम बना लिया।

851 महापुरुष

8510. मृत महापुरुषों के विचार यथावत समाज के समक्ष सूचनार्थ तो रखे जा सकते हैं, किन्तु पालनार्थ नहीं। हर महापुरुष देश-काल, परिस्थिति के अनुसार अपने विचारों में संशोधन करता रहता है, जो उस महापुरुष के मरने के बाद मार्गदर्शक विचार होता है। कुछ लोग जो संगठन बनाने पर ज्यादा जोर देते हैं, वे न तो महापुरुष होते हैं, न ही विचारक।

8511. मृत महापुरुषों के विचारों को देश-काल, परिस्थिति के साथ तुलना करने के बाद ही कोई नीति बनाने का पक्षधर हूँ। इसका अर्थ हुआ कि मैं बिना विचार किये किसी निष्कर्ष का अंधानुकरण न करना चाहता हूँ, न ही दूसरों को सलाह देता हूँ। मैं अहिंसा और सत्य को सबसे अच्छा मार्ग मानता हूँ।

8512. मृत महापुरुषों के विचार बिना स्वयं विचारे आँख मूंदकर स्वीकार करना हमेशा घातक होता है। मेरा मानना है कि मृत महापुरुषों के विचार बिना स्वयं विचार मंथन किये अक्षरशः कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए। इसका अर्थ हुआ कि गांधी के विचारों की वर्तमान देश-काल, परिस्थिति अनुसार समीक्षा और संशोधन करके ही स्वीकार करना चाहिए।

8513. यदि देश-काल, परिस्थिति के अनुसार व्यवस्थाओं में संशोधन की प्रक्रिया बंद हो जाये, तो व्यवस्थाएँ रूढ़ बन जाती हैं। ऐसी रूढ़ग्रस्त व्यवस्थाएँ समाज में विकृति पैदा करती हैं। महापुरुष ऐसी विकृतियों के समाधान के लिए व्यवस्थाओं में संशोधन का प्रयास करते हैं, तो लोकतांत्रिक देशों के राजनेता ऐसी विकृतियों का लाभ उठाकर स्वयं को स्थापित करने की कोशिश करते हैं।

8514. सिद्धांत यह है कि मृत महापुरुषों के विचार देश-काल, परिस्थिति के अनुसार आकलन करके ही मानना चाहिए। अंतिम निर्णय स्वयं का होना चाहिए, अंधानुकरण ठीक नहीं।

8515. आवश्यक नहीं है कि मृत महापुरुषों के विचार अंतिम सत्य मानकर बिना समीक्षा किये स्वीकार कर लिया जाये। सच्चाई यह है कि महापुरुषों ने भी पिछले महापुरुषों के विचारों को उसी तरह आगे बढ़ाने की अपेक्षा समीक्षा करके उसमें कुछ जोड़ने की पहल की, तभी तो वे महापुरुष बन सके।

8516. संगठन मृत महापुरुषों के विचार समाज तक पहुँचाने का सबसे सफल और घातक माध्यम होता है, इसलिए मृत महापुरुषों के विचार बिना विचारे कभी अक्षरशः स्वीकार नहीं करना चाहिए।

8517. जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार-मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है, तो वह निष्कर्ष समाज की प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है। यदि उक्त निष्कर्ष समाज की तात्कालिक समस्याओं के समाधान में निर्णायक परिणाम देता है, तो उक्त विचारक महापुरुष बन जाता है।

8518. त्याग के मामले में क्रान्तिकारी गांधी से आगे थे, किन्तु देश-काल, परिस्थिति के अनुसार गांधी का मार्ग ज्यादा सफल हुआ, क्योंकि टकराव किसी वैश्य प्रवृत्ति वाले अंग्रेजों से था।

852 सुभाष चंद्र बोस

8520. स्वतन्त्रता आन्दोलन में सुभाष बाबू की नीयत और त्याग बहुत अच्छा था, किन्तु नीतियां गलत। सुभाष बाबू स्वतंत्रता के बाद कुछ वर्षों तक तानाशाही के पक्षधर थे। उन्होंने जर्मनी, जापान के

साथ समझौता करके गलती की। यदि भारत उनकी राह पर चला होता, तो भारत स्वतंत्र हो ही नहीं पाता, जैसा कि जर्मनी का हाल हुआ। सुभाष बाबू ने आसाम में आक्रमण करके भूल की, जिसमें लगभग एक लाख भारतीय सैनिक मारे गये।

8521. सभी क्रांतिकारियों का त्याग और नीयत बहुत अच्छी थी, लेकिन मार्ग गलत। यदि गांधी अपना मार्ग छोड़कर क्रांतिकारियों के साथ हो जाते, तो गांधी भले ही शहीद हो जाते, किन्तु स्वतंत्रता आन्दोलन को कोई लाभ नहीं होता। यदि क्रांतिकारी गांधी के साथ हो जाते, तो स्वतंत्रता और जल्दी मिल सकती थी। पटना में झंडा फहराने के क्रम में जो अहिंसक सात लोग शहीद हुए, उनका त्याग क्रांतिकारियों के त्याग से कुछ अधिक मानना चाहिए।

853. लोहिया

8530. गांधी सत्ता और सम्पत्ति के अकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। गांधी के अनुसार सत्ता और सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकतम निर्णय का अधिकार ग्रामसभा को रहे और इसमें सरकार का हस्तक्षेप न्यूनतम हो। जयप्रकाश भी इसके पक्षधर थे। लोहिया जी सत्ता के सम्बन्ध में गांधी विचार के साथ थे और आर्थिक मामलों में समाजवादी विचारों के साथ। अटल जी में अच्छे राजनेता के सभी गुण थे। सिद्धांतों के मामले में मुरार जी देसाई, अटल जी से भी ज्यादा मजबूत थे। अटल जी व्यावहारिक अधिक थे। अटल जी की नीतियों को संघ ने कभी पसंद नहीं किया। इसलिए अटल सरकार नहीं चल सकी।

854. नरेन्द्र मोदी

8540. नरेन्द्र मोदी में अटल जी की तुलना में कूटनीतिक समझ अधिक है। अटल जी राजनीतिक बुराइयों में सुधार के पक्षधर थे, तो मोदी राजनीति में बदलाव चाहते हैं। अटल जी शांतिप्रिय थे, तो मोदी आक्रामक। संघ परिवार के लिए नरेंद्र मोदी एक मजबूरी हैं। यदि मुसलमान बुद्धि का प्रयोग करने लगें, तो संघ कभी भी मोदी से किनारा कर सकता है। यदि राहुल गांधी नरम हिंदुत्व के साथ संघ से सम्बन्ध सुधार लें, तब भी संघ मोदी से दूर हट सकता है। वर्तमान राजनैतिक वातावरण में मोदी का कोई विकल्प नहीं है।

8541. सत्तर वर्षों तक जो लोग पक्ष-विपक्ष में विभाजित होकर सम्पूर्ण समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व कर रहे थे, उन सब लोगों को नरेन्द्र मोदी ने किनारे लगा दिया है।

8542. एनडीए में शामिल घटक दल भी पूरी तरह मोदी के खिलाफ हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि मोदी किसी की बात नहीं सुनते, जो उनको ठीक लगता है वह बिना किसी की सलाह लिए स्वयं करते हैं। वे हर मामले में स्वतंत्र रूप से तकनीकी लोगों की टीम बनाकर उससे जांच कराते हैं और किसी के दबाव में नहीं आते हैं। नरेन्द्र मोदी व्यक्तिगत रूप से सीधे मतदाताओं को संबोधित कर रहे हैं, न कि बिचौलियों के माध्यम से। 70 वर्षों से चली आ रही राजनैतिक व्यवस्था में वोटों के व्यापारी जिस प्रकार बिचौलिए की भूमिका निभाते थे, वे समाप्त होंगे या एकजुट होकर नरेन्द्र मोदी को समाप्त कर देंगे। यह अभी स्पष्ट नहीं कहा जा सकता।

8543. मैं कोई भविष्य वक्ता नहीं हूं। मैं तो स्पष्ट देख रहा हूं कि एक तरफ साम्प्रदायिकता, जातिवाद, संगठनवाद और सत्ता की जोड़-तोड़ मजबूती के साथ खड़ी है, तो दूसरी तरफ नरेन्द्र मोदी ने अंगद का पैर इस तरह जमा दिया है कि उसे हिलाना भी बहुत कठिन हो रहा है।

8544. मैं तो व्यक्तिगत रूप में साम्प्रदायिकता, जातिवाद, परिवारवाद, संगठनवाद आदि का विरोधी हूं, किन्तु मैं इस कार्य में मोदी जी की कोई मदद नहीं कर पा रहा, क्योंकि मुझे अपने वोट देना नहीं है। वोट दिलाना भी नहीं है। मैं तो जब तक भारत में मोदी या कोई अन्य विकृत लोकतंत्र की उठा-पटक को छोड़कर आदर्श लोकतंत्र अर्थात लोकस्वराज्य या सहभागी लोकतंत्र की दिशा में नहीं बढ़ेगा, तब तक मैं कुछ करने की स्थिति में नहीं हूं। इसलिए मैं तो सिर्फ मोदी के सशक्त होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना मात्र कर सकता हूं।

8545. नरेन्द्र मोदी से आम जनता को जिस प्रकार की उम्मीद थी, वे पूरी नहीं हुई। किन्तु पिछले 70 वर्षों में जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं, उन सबकी तुलना में नरेन्द्र मोदी ने बहुत कम समय में बहुत अच्छा काम किया है।

8546. स्वतंत्रता के बाद नरेन्द्र मोदी भारत के अकेले ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं, जिन्होंने खतरे उठाकर भी महत्वपूर्ण निर्णय लिए। आज हम नरेन्द्र मोदी से जिन समस्याओं के समाधान की उम्मीद कर रहे हैं, वे समस्याएं पिछले 70 वर्षों की शासन व्यवस्था की देन है।

8547. मैं समझता हूं कि पिछली सरकार के समय लाभ उठा रहे लोग पूरी तरह नरेन्द्र मोदी के खिलाफ प्रचार अभियान में एकजुट हो गये हैं। 70 वर्षों में जिन लोगों ने समस्याएं पैदा की हैं, उन्हें तो कम से कम मोदी से प्रश्न नहीं करना चाहिए, जब तक उनके पास कोई नया वैचारिक विकल्प न हो।

8548. यद्यपि नरेन्द्र मोदी ने विकास का नारा दिया था, किन्तु चरित्र पतन के मामले में भी उनकी भावभंगिमा ने कमाल का परिवर्तन किया। भ्रष्टाचार करने वाले राजनेता छुपछुप कर भी भ्रष्टाचार करने से डर रहे हैं। अनैतिकता के बनते हुए कीर्तिमान अब नैतिकता के कीर्तिमान बनाने के लिए आतुर दिख रहे हैं। उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी ऐसा कुछ संकेत दिखने लगेगा, किन्तु सच्चाई यह है कि संकेत दिखने लगा है। मैं मानता हूं कि इस दिखने के पीछे नरेन्द्र मोदी को मिला पूर्ण बहुमत का परिस्थितिजन्य सहारा भी है। किन्तु मैं नहीं मानता कि इस सफलता में मोदी की कार्यशैली की सफलता का योगदान न हो।

8549. मैं पिछले तीस-चालीस वर्षों से यह प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई ऐसा प्रधानमंत्री आयेगा, जो राजनीति और व्यापार को अलग-अलग कर देगा। इसके साथ ही जो भारत से समाजवाद और साम्प्रदायिकता की अंत्येष्टि कर देगा। नरेन्द्र मोदी के रूप में ऐसा प्रधानमंत्री आया है, जो दोनों काम कर रहा है।

8550. गरीबों को रोजगार के अवसर न देकर सुविधाएं देना अच्छी राजनीति नहीं है। नरेन्द्र मोदी इस मामले में भी अच्छा कर रहे हैं।

अब स्पष्ट दिखता है कि पंडित नेहरू की पारिवारिक सत्ता से ही नहीं, बल्कि पंडित नेहरू की नीतियों से भी पिण्ड छूट चुका है।

8551. बुरे आदमी की बुराई दूर होने के बाद भी अगर अच्छा आदमी बदले की भावना से बुरा काम करता है, तो वह भी बुरा है। मोदी जी समस्याओं का समाधान चाहते हैं और सावरकरवादी मुस्लिम साम्प्रदायिकता की जगह हिन्दू साम्प्रदायिकता स्थापित करना चाहते हैं। मोदी जी हिन्दू रीति-नीति से साम्प्रदायिकता का समाधान चाहते हैं और सावरकरवादी इस्लामिक तरीके से।

8552. मैं मोदी जी द्वारा प्रारंभ किये गये अधिकांश कार्यक्रमों से सहमत हूं। उन्होंने "मेक इन इण्डिया" का जो नारा दिया है, वह पूरी तरह ठीक है। मैं जानता हूं कि स्वदेशी जागरण मंच अथवा ऐसी ही कुछ और संस्थाएं इस योजना का विरोध कर रही हैं। क्योंकि उनके अनुसार विदेशी कम्पनियां भारत में आयेंगी और भारत से धन कमाकर ले जायेंगी। मैं यह नहीं समझ सका कि हम जो वस्तुएं विदेशों से आयात करते हैं और अपनी विदेशी मुद्रा उन्हें देते हैं, वे वस्तुएं यदि वे लोग भारत में ही बना दें, तो हमें इससे क्या नुकसान होगा?

8553. नरेन्द्र मोदी के आने के पूर्व साम्प्रदायिक मुसलमानों के संगठित वोट बैंक की लालच में हिन्दुओं को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर रखा गया। अब नरेन्द्र मोदी के आने के बाद साम्प्रदायिक हिन्दू संगठनों ने यह प्रयास तेज कर दिया है कि मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बनाकर रखा जाये। यह बात सच है कि दुनिया के अधिकांश देशों में संगठित मुसलमान अन्य धर्मावलम्बियों को

समान स्तर पर नहीं रहने देते। हिन्दुओं को शांति से रहने की सलाह देना भी खतरे से खाली नहीं, क्योंकि साम्प्रदायिक मुसलमान अब भी मोदी पूर्व की अपनी वरीयता का सपना पाले हुए हैं।

8554. स्वामी विवेकानंद राजनेता नहीं थे, कलाकार नहीं थे, साहित्यकार भी नहीं थे, बल्कि विचारक थे। जबकि नरेन्द्र मोदी में विचारक के कोई गुण अभी तक नहीं दिखे। ईमानदार होना और अच्छा प्रशासक होना, चरित्र का मापदण्ड हो सकता है, किन्तु विचारों की नहीं।

8555. मेरा अपना आकलन है कि नरेन्द्र मोदी के आने के बाद उच्चस्तरीय भ्रष्टाचार घटा है, डिजीटल इंडिया की दिशा में जिस तेजी से सरकार बढ़ रही है, उससे भ्रष्टाचार और अधिक घटेगा।

856 नरेन्द्र मोदी और नेहरू परिवार

8560. अब नरेन्द्र मोदी कुछ अलग नीतियों पर चलकर पंडित नेहरू की गलतियों को भी सुधार रहे हैं तथा सरदार पटेल की नीतियों को भी आगे बढ़ा रहे हैं। नरेन्द्र मोदी में सरदार पटेल के गुण दिखते हैं। अभी तो प्रारंभ है। अभी कुछ और समय बीतने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

8561. नरेन्द्र मोदी के आने के बाद भारत की राजनैतिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक स्थितियों में निर्णायक बदलाव हुआ है। नरेन्द्र मोदी के पूर्व आर्थिक स्थिति सामान्य तरीके से चल रही थी। राजनैतिक स्थिति परिवार के तुष्टीकरण तक केन्द्रित थी तथा साम्प्रदायिक स्थिति इस्लाम के पक्ष में एकतरफा झुकी हुई थी। आमतौर पर

कांग्रेस के परिवारवाद और मुस्लिम तुष्टीकरण के बीच एक अलिखित गठजोड़ था, जो सम्पूर्ण शासन व्यवस्था पर हावी था। नरेन्द्र मोदी और संघ ने मिलकर इस प्रदूषित लोकतंत्र को धूल चटा दी।

8562. नरेन्द्र मोदी के आने के पूर्व तक कोई ऐसी सरकार बनी ही नहीं थी, जिनसे हिन्दू सस्थाओं को कोई सहायता मिलती। मेरी व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार मोदी सरकार आने के बाद हिन्दू संगठनों में भी सहायता लेने-देने की होड़ मची है। तीर्थ यात्राओं के लिए धन दिया जा रहा है, शिशु मंदिरों के लिए भी जमीन या पैसा दिया जा रहा है।

8563. भले ही मेरी उम्मीदें कभी पूरी न हो, किन्तु मेरी हार्दिक इच्छा है कि अब नरेन्द्र मोदी के पूर्व की राजनीति किसी भी परिस्थिति में जिन्दा न हो सके। इसका अर्थ हुआ कि या तो मजबूरी में मोदी ही रहें अथवा मोदी की जगह कोई अन्य नये विकल्प की राजनीति भारत में आगे बढ़े, जो पिछली राजनैतिक प्रणाली को कब्र में दफनाकर मोदी की कार्यप्रणाली से गुणात्मक प्रतिस्पर्धा कर सके।

8564. पंडित नेहरू और नरेन्द्र मोदी में एक स्पष्ट फर्क है। नेहरू जी गांधी के प्रशंसक थे, किन्तु गांधी जी की नीतियों के पूरी तरह विरुद्ध थे। मोदी जी गांधी जी के प्रशंसक तो नहीं दिखते, किन्तु गांधी की नीतियों के विरुद्ध नहीं। दूसरा अंतर यह भी है कि नेहरू जी की नीयत ठीक नहीं थी, जबकि मोदी जी की नीयत पर अब तक कोई संदेह नहीं है।

8565. पूर्व में भारत किसी एक परिवार की कृपा तक आश्रित था। अब नरेन्द्र मोदी के बाद परिवारवाद की गुलामी से मुक्ति मिली है। नरेन्द्र मोदी निरंतर सुशासन की दिशा में बढ़ रहे हैं, जो लोकस्वराज्य की दिशा के ठीक विपरीत केन्द्रीकरण की दिशा है। या तो मोदी जी लोकस्वराज्य अर्थात सहभागी लोकतंत्र और संसदीय लोकतंत्र का अंतर समझेंगे या भारत की जनता में सुशासन के बाद स्वशासन की भूख बढ़ेगी।

856 नरेन्द्र मोदी और तानाशाही

8566. मोदी व्यक्तिगत रूप से तानाशाह नहीं दिखते। संघ परिवार भी अलग से तानाशाह नहीं दिखता। किन्तु जब दोनों एक हो जाते हैं, तब तानाशाही की गंध आने लगती है, जो वर्तमान अव्यवस्था के वातावरण में आवश्यक भी दिखती है। नरेन्द्र मोदी का विस्तार आदर्श स्थिति न होकर एक मजबूरी है। जब तक लोकस्वराज्य की कोई सम्भावना शुरू नहीं होती, तब तक भारत की राजनीति में नरेन्द्र मोदी का कोई विकल्प नहीं है।

8567. अब तक नरेन्द्र मोदी ने अपनी क्षमता तो प्रमाणित की है, किन्तु नीयत का कोई प्रमाण सिद्ध नहीं किया है, बल्कि उनके आचरण से उनकी नीयत पर अभी तो संदेह नहीं होता है, किन्तु इतिहास बताता है कि हिटलर के पीछे भी जर्मनी इसी प्रकार पागल हुआ जा रहा था और परिणाम हमने देखा कि वह पागलपन उसे किस सीमा तक ले गया। यदि मोदी तानाशाही मार्ग पर चलते हैं, तो देश में कोई नया गांधी पैदा हो सकता है, जो इन नकली गांधी नामधारियों से मुक्त होकर कुछ नये मार्ग तलाश सकेगा।

8568. अब तक नरेन्द्र मोदी ने एक भी ऐसा कोई आभास नहीं दिया है, जिस आधार पर नरेन्द्र मोदी का तानाशाही नेतृत्व स्वीकार न किया जाये। पिछली सभी सरकारों की अपेक्षा नरेन्द्र मोदी अधिक अच्छे तरीके से समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। नरेन्द्र मोदी के सत्ता में आते ही हवा में कुछ ऐसी गर्माहट दिखने लगी कि भारतीय जनता पार्टी के ढँके-छुपे पदलोलुप-धनलोलुप राजनेता भी ईमानदार बनने तथा बने रहने के लिए मजबूर हो गये।

8569. मैं देख रहा हूं कि अब भी वामपंथ प्रभावित लोग किसी न किसी बहाने दुनिया को एकजुट होने के विरुद्ध कुछ न कुछ लिखते-बोलते रहते हैं। अब नरेंद्र मोदी तानाशाही और लोकतंत्र को नए तरीके से परिभाषित करके वर्तमान समस्याओं का धीरे-धीरे समाधान कर रहे हैं। इससे एक नई उम्मीद बनी है।

857 नरेन्द्र मोदी और भ्रष्टाचार

8570. स्वाभाविक है कि काला धन टैक्स चोरी से भी बनता है और भ्रष्टाचार से भी। तंत्र से जुड़े लोग पावर के कारण भ्रष्टाचार करते हैं, न कि वे भ्रष्ट हैं। एक सरकारी शिक्षक पचास हजार रूपया मासिक मिलने के बाद भी भ्रष्टाचार करता है, जबकि वही व्यक्ति एक प्राइवेट स्कूल का शिक्षक है, तो सात हजार रूपया वेतन के बाद भी भ्रष्टाचार नहीं करता क्योंकि पावर और खतरे का अन्तर है। क्यों नहीं ऐसे लोगों का पावर घटे? नरेन्द्र मोदी लगातार भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चला रहे हैं। वे लगातार निजीकरण भी कर रहे हैं तथा भ्रष्टाचारियों को भी जेल में बन्द कर रहे हैं।

8571. भ्रष्टाचार का कारण वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था है, जो लोक और तंत्र के बीच लगातार दूरी बढ़ाती जा रही है। जितना ही लोक को कमजोर करके तंत्र शक्ति सम्पन्न होगा, उतना ही अधिक भ्रष्टाचार बढ़ेगा और भ्रष्ट तंत्र भ्रष्टाचार रोक ही नहीं सकता। इस संबंध में मोदी सरकार ठीक दिशा में काम कर रही है।

857 अन्ना आन्दोलन

8572. लोकतंत्र यदि लोकस्वराज्य की तरफ झुका तो लोक मजबूत और मालिक होता है तथा तंत्र कमजोर और व्यवस्थापक। यदि लोकतंत्र सत्ता के एकत्रीकरण की दिशा में झुका, तो तंत्र मजबूत और मालिक बन जाता है और लोक सिर्फ मतदान तक सीमित होकर तंत्र का मुखापेक्षी हो जाता है। तंत्र ने संविधान रूपी किताब को ढाल के रूप में उपयोग किया। संविधान नामक वह किताब संसदीय लोकतंत्र से नियंत्रित हुई। आंदोलन काल में ऐसा महसूस हुआ तो यही संसदीय लोकतंत्र संविधान की पवित्रता की दुहाई देना शुरू कर देता है तथा उस संसदीय लोकतंत्र के पालित-पोषित तथाकथित विचारक लोक की आलोचना करने लगते हैं। अन्ना आंदोलन इस सड़े-गले संसदीय लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा देने का पहला कदम था। जब तक हमारे समक्ष गुलामी और तानाशाही का खतरा था, तब तक हम इस सड़े-गले लोकतंत्र की पूजा करते रहे। यदि किसी ने संविधान सभा या लोक संविधान का सुझाव दिया तो हमारे समक्ष न गुलामी का डर है, न तानाशाही का।

8573. अन्ना आंदोलन से देश की जनता तथा हम सबको भी बहुत

उम्मीद थी, लेकिन अन्ना आंदोलन का भी वही परिणाम हुआ, जो जयप्रकाश आंदोलन का हुआ था और आंशिक रूप से गांधी आंदोलन का भी, इन आंदोलनों से देश की सत्ता तो बदली, लेकिन व्यवस्था नहीं बदली। गांधी जी के आंदोलन से नेहरू निकले, जेपी आंदोलन से लालू-नीतीश निकले और अन्ना आंदोलन से अरविंद केजरीवाल निकले। अन्ना आंदोलन से यह नुकसान हुआ कि भविष्य में किसी नए आंदोलन की सफलता की उम्मीद भी कम हो गई। मेरा ऐसा मानना है कि राजनेताओं को जोड़कर किसी आंदोलन के अच्छे परिणाम नहीं निकलेंगे। व्यवस्था परिवर्तन के लिए अब किसी आंदोलन की नहीं, बल्कि जन जागरण की जरूरत है।

8574. बिना राजनेताओं को साथ लिए कोई भी बदलाव सम्भव नहीं है और राजनेताओं को साथ लेकर किए जाने वाले प्रयत्न के परिणाम में हमेशा राजनेता ही धोखा देते हैं। यही धोखा गांधी के साथ हुआ, यही जयप्रकाश के साथ हुआ और यही अन्ना हजारे के साथ हुआ। मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी इसी निष्कर्ष से मेल खाता है।

8575. अरविंद केजरीवाल एक अति परिश्रमी, सिर्फ काम की बात करने वाले और परिस्थिति के अनुसार नीतियों से सामंजस्य बिठाने वाले व्यक्तित्व का नाम है। अरविंद समय का अधिकतम सदुपयोग करने वाले व्यक्ति का नाम है। अरविंद ने अन्ना से अलग होने के बाद जिस स्वच्छ राजनीति की घोषणा की थी, वह घोषणा उनकी एक चालाकी सिद्ध हो रही है। यदि चुनावों के लिए या पार्टी फंड के

लिए भ्रष्टाचार होता, तब तो राजनैतिक मजबूरी मानी जा सकती थी, किन्तु जिस तरह उन्होंने 45 करोड़ अपने सरकारी निवास में खर्च कर दिये, वह संदेह पैदा करता है।

858 मनमोहन सिंह

8580. मोरार जी, मनमोहन सिंह सरीखे ईमानदार लोग भी राजनीति में हुए, जो राजनीति में घुसकर उसे साफ करते-करते खुद ही गंदे दिखने लग गये। परिणाम हुआ कि राजनीति अधिक से अधिक गन्दी होती चली गई। राजीव गांधी की अकाल मृत्यु के कारण भले ही राहुल के बालिग होने तक उस पर मनमोहन सिंह खड़ाऊ प्रधानमंत्री रहे, किन्तु रहे तो वह खड़ाऊ नेहरू परिवार रूपी राहुल का ही। नेहरू परिवार के अलावा कोई आया तो वह किसी न किसी तरह दौड़ से बाहर कर दिया गया। मनमोहन सिंह ने यह मिथक तोड़ दी।

8581. मनमोहन सिंह के आने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था सरकारीकरण के चंगुल से निकलकर कुछ स्वतंत्र होती गयी। पुराने जमाने में 'कर' की दर बहुत ज्यादा होने से काला धन बहुत ज्यादा बनने लगा था। प्रणव मुखर्जी ने मनमोहन सिंह की सहमति से कर-प्रणाली में बहुत सुधार किया।

8582. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में न्यायपालिका बहुत कुछ स्वतंत्र दिखने लगी। यहां तक कि न्यायपालिका कई बार अपनी सीमाएं तोड़कर भी अपनी सर्वोच्चता दिखाने का प्रयास करती रही। मनमोहन सिंह जी ने कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि के भी पूरे-पूरे

प्रयास किये। यहां तक कि उन्होंने इसके लिए सरकार तक को खतरे में डाल दिया था।

8583. मनमोहन सिंह कोई व्यक्ति नहीं हैं, एक व्यवस्था हैं। इन्होंने बीस वर्ष पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था में आमूल बदलाव करके एक खतरा उठाया था। उस समय मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री नरसिंह राव का खुला समर्थन प्राप्त था। मनमोहन सिंह सत्ता परिवर्तन के प्रतीक न होकर व्यवस्था परिवर्तन के प्रतीक हैं। सोनिया जी मनमोहन सिंह को परेशान करके राहुल की ताजपोशी की तिकड़म करती रहीं, इसलिए न मनमोहन रहे, न कांग्रेस।

8584. जो लोग मनमोहन सिंह की अर्थनीति को गलत समझते हैं, उन्हें साथ में विकल्प भी बताना चाहिए था और यदि बिना विकल्प के कोई आलोचना की जाती है, तो उसका अर्थ होता है कि वह आलोचक 1991 के पूर्व की अर्थनीति के समर्थक हैं, जिसमें सारे अधिकार राजनेताओं तक सिमट गये थे।

8585. एक ग्रामीण कहावत है कि 'कमजोर की लुगाई, सबकी भौजाई' होती है। बेचारे मनमोहन सिंह बिना गलती के भी गलत सिद्ध होने को मजबूर किये जाते रहे, क्योंकि वे न किसी नेहरू खानदान से पैदा हुए थे, न किसी राज परिवार की उपज हैं। वे चुनाव लड़कर संसद तक नहीं गये। कांग्रेस पार्टी ने उन्हें चुना नहीं था। राजमाता सोनिया की खड़ाऊ से अधिक उनकी हैसियत क्या थी? फिर भी काजल की कोठरी में 10 वर्ष बन्द रहने के बाद भी वे अपनी साफ-सुथरी छवि बचा गये, ये बड़ी बात है।

8586. मैंने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी को स्वतंत्रता के बाद सबसे अधिक योग्य प्रधानमंत्री बताया है। कहा जाता है कि मनमोहन सिंह के अंदर राजनीति की समझ नहीं है। मेरी समझ में कोई गैर-राजनीतिक व्यक्ति प्रधानमंत्री बन जाए, तो यह कोई बुराई नहीं है। मनमोहन सिंह अन्य राजनेताओं की तरह कलाकारी नहीं करते, वे नाटकबाज नहीं हैं। गरीब के बच्चे को गोद में उठाकर उसके प्रति करूणा का नाटक करना, अलग-अलग प्रदेशों में जाकर उन प्रादेशिक भाषाओं में दो-चार शब्द बोलकर लोगों का मन जीत लेना, शब्दाडम्बर युक्त भाषण देकर भीड़ को मोहित कर लेना अथवा प्रत्यक्ष छूट देकर परोक्ष रूप से ले लेने की चेष्टा आदि ही यदि राजनीति का गुण है और मनमोहन सिंह ऐसा नहीं कर पाते, तो मैं मनमोहन सिंह का प्रशंसक हूं। ऐसा व्यक्ति असफल सिद्ध किया जा सकता है, किन्तु वास्तव में असफल होता नहीं। इस योग्यता में नरेन्द्र मोदी बहुत आगे हैं और इसलिए सफल भी हैं।

8587. मनमोहन सिंह सफल अर्थशास्त्री रहे हैं, अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए उनके मुकाबले में भारत में तो कोई अन्य सफल नहीं हो सका। अर्थव्यवस्था को राजनीति की कलाबाजियों ने असफल किया। मनमोहन सिंह ने भरसक कोशिश की कि अर्थव्यवस्था पटरी से न उतरे, किन्तु जब उन्हें महसूस हुआ कि अर्थव्यवस्था पटरी से उतर नहीं रही है, बल्कि जान-बूझकर सोनिया जी द्वारा उतारी जा रही है, तब उन्होंने हथियार डाल दिया।

8588. सोनिया जी की नीयत अर्थव्यवस्था के मामले में ठीक-ठाक थी।

2009 के बाद ही उनकी नीयत में खोट आया। चाहे कोई भगवान भी अर्थशास्त्री बनकर आ जाए, तो यह कैसे संभव है कि खर्चा बढ़ता चला जाए और आमदनी घटती जाए। यह कैसे संभव है कि बजट घाटा बढ़ता जाए, नये-नये नोट छपते जाएं और मुद्रास्फीति न बढ़े?

8589. मनमोहन सिंह को एक ओर तो आर्थिक मोर्चे पर असफल करने का प्रयास किया गया, तो दूसरी ओर प्रचार के मुद्दे पर भी उन्हें असफल सिद्ध करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी गई। मेरा स्पष्ट संकेत है कि दोनों मोर्चों पर एक साथ प्रयास करने का कार्य किसी साधारण हस्ती के बस की बात नहीं थी और वह हस्ती सोनिया जी के अलावा कोई नहीं।

8590. सोनिया गांधी के परिवार मोह ने मनमोहन सिंह की सज्जनता का दुरूपयोग किया। परिणाम यह हुआ कि मनमोहन सिंह ही नहीं डूबे, सोनिया गांधी भी डूब गईं और ये दो ही नहीं डूबे, बल्कि लोकतंत्र पर से लोगों का विश्वास भी उठने लगा।

8591. मनमोहन सिंह की आर्थिक व्यवस्था में रूपया बहुत मजबूत था, किन्तु जब से मनमोहन सिंह को कठपुतली बनाकर सोनिया के माध्यम से सलाहकार परिषद जैसे लोग भारत की अर्थनीति में हस्तक्षेप करने लगे, तब से भारत की विकास दर तथा डॉलर की तुलना में रूपया गिरता चला गया, इसमें न मनमोहन सिंह का दोष है, न वित्तमंत्री का।

8592. सोनिया जी ने विपक्ष की नेता सुषमा स्वराज से मिलकर मनमोहन सिंह को बदनाम किया। दोनों के अपने-अपने स्वार्थ थे। सोनिया

चाहती थी कि मनमोहन बदनामी के डर से चुपचाप राहुल का रास्ता साफ कर दें, तो सुषमा चाहती थीं कि मनमोहन सिंह कमजोर होकर भाजपा की ओर से उनका रास्ता साफ करें।

8593. वर्ष 1991 आते-आते तक भारत की समाजवादी अर्थव्यवस्था देश को आर्थिक दृष्टि से खोखला कर चुकी थी। 1991 में मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था को वामपंथ से हटाकर पूंजीवाद की तरफ मोड़ा।

8594. भारत के लोकतंत्र की परीक्षा में एकमात्र प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ही सफल हुए हैं और यदि समस्याओं के समाधान का आकलन करें तो नरेन्द्र मोदी ही सफल होंगे, क्योंकि इनमें समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक तानाशाही के सारे गुण मौजूद हैं। नरेंद्र मोदी और मनमोहन सिंह की परिस्थितियों में एक फर्क यह है कि मनमोहन सिंह के हाथों में सोनिया गांधी की हथकड़ी पड़ी हुई थी और नरेंद्र मोदी को स्वतंत्रता पूर्वक जन समर्थन है।

8595. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में कमजोर प्रधानमंत्री पाकर नेताओं ने स्वतंत्रतापूर्वक भ्रष्टाचार किया और लोकतांत्रिक प्रक्रिया ने ही वे सारे भ्रष्टाचार उजागर कर दिये। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में सबसे अधिक भ्रष्ट नेता जेल चले गये। यहां तक कि अनेक मुख्यमंत्री भी उनके कार्यकाल में जेल गये। अनेक राजनेता नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भी जेल जा रहे हैं, यद्यपि मार्ग भिन्न है।

859 स्वामी दयानन्द

8596. स्वामी दयानंद हिंदू धर्म के एक प्रमुख सुधारक के रूप में माने जाते हैं। स्वामी दयानंद ने लोक स्वराज्य पर भी स्पष्ट विचार दिया

तथा वर्ण व्यवस्था के संशोधित स्वरूप पर भी। गांधी विचारों पर स्वामी दयानंद का अधिक प्रभाव था, विवेकानंद का कम। श्रीराम शर्मा पर भी स्वामी दयानन्द का व्यापक प्रभाव रहा। संघ परिवार विवेकानंद जी से अधिक प्रभावित रहा है।

8597. आर्य समाज का इतिहास बहुत अच्छा रहा है। स्वतंत्रता संघर्ष में आर्य समाज ने खुलकर भाग लिया और स्वतंत्रता के बाद राजनीति से किनारे हो गया। संघ परिवार स्वतंत्रता संघर्ष तक तो सांस्कृतिक संगठन बना रहा और स्वतंत्रता के बाद सबसे बड़े राष्ट्र चिंतक के रूप में सामने आ गया।

8598. स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि अन्य लोग एक झूठ को सौ बार बोलकर सच सिद्ध करने में सफल इसलिए हैं कि हम लोग एक सच को दस बार भी नहीं बोलते। गांधी जी ने सिखाया है कि प्रतिपक्षी चाहे कितना भी उत्तेजित करे, किन्तु उत्तेजित न होना सफलता की प्रथम आवश्यकता है।

861 बुद्ध

8610. हिंदू संस्कृति धर्म का स्वरूप संस्थात्मक मानती है, संगठनात्मक नहीं। सबसे पहले बुद्ध ने हिंदुत्व को संगठन का स्वरूप दिया। इस विषय में मेरे विचार में बुद्ध गलत हैं। बुद्ध की इस गलती का ही परिणाम है कि भारत में जगह-जगह संगठन बनाकर समाज को परेशान कर रहे हैं। अहिंसा के विषय में बुद्ध की तुलना में महावीर अधिक स्पष्ट थे। बुद्ध की अहिंसा तो कोई प्रत्यक्ष परिणाम नहीं दे सकी, लेकिन बुद्ध की नास्तिकता ने अवश्य ही चीन जैसे देश पैदा कर दिया।

862 गांधी परिवार

8620. गांधी परिवार में ऐसी कोई विशेषता नहीं है, जिसके बिना इस देश का काम न चल सके।

8621. नेहरू, गांधी परिवार हमेशा अपने आसपास एक चौकड़ी निर्मित करके रखता है। समय-समय पर यही चौकड़ी नेहरू गांधी परिवार की वंदना करके उनको प्रासंगिक बनाये रखती है। नेहरू परिवार और ये उनके संरक्षण में पलने वाले लोग एक-दूसरे के पूरक हैं। यह प्रवृति कांग्रेस के आंतरिक लोकतंत्र के लिए भी घातक है।

8622. गांधी, नेहरू परिवार ने महात्मा गांधी के नाम का इस्तेमाल कर राजनीतिक सफलता तो अर्जित कर ली, लेकिन उन्होंने गांधी जी के विचारों को तिलांजलि दे दी। नेहरू परिवार ने समाज को रास्ता दिखाया, लेकिन उस रास्ते पर चलने से वे खुद कतराते रहे। उन्होंने गांधी के मरते ही उनके विचार को भी त्याग दिया।

8623. मनमोहन सिंह की इसलिए तारीफ की जानी चाहिए कि उन्होंने नेहरू के उस समाजवादी आर्थिक ढांचे को भी ध्वस्त करने का काम किया, जिसके सहारे नेहरू, गांधी परिवार आर्थिक तरक्की का दंभ भरता रहा। नेहरू के इसी आर्थिक मॉडल के सहारे समाजवाद लाने और गरीबी हटाने की अनेक कोशिश की गई, लेकिन वे इसमें कामयाब नहीं हुए।

8624. क्या यह सही नहीं कि नेहरू परिवार के भिन्न जो भी प्रधानमंत्री बने, उन्हें कांग्रेसी होते हुए भी इस परिवार ने अस्थिर किया?

8625. राजीव गांधी एक ऐसे कलंकित कार्य के लिए हमेशा इतिहास में याद किये जायेंगे कि उन्होंने संविधान की इच्छा के विरुद्ध जाकर जन प्रतिनिधियों की संसद के भीतर की स्वतंत्रता छीन ली।

863 इंदिरा गांधी

8630. स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण मजबूरी में हुआ था, न कि किसी और कारण से। यदि इंदिरा गांधी की जगह मैं भी होता तो यही करता। स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण सिक्खों के बढ़ते संगठित मनोबल को दबाने के लिए किया गया एक प्रयास था, जिसके बदले में इंदिरा गांधी को अपनी जान देनी पड़ी।

8631. इंदिरा गांधी ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए आपातकाल लगाया था। मैं स्वयं भी आपातकाल में 18 महीने जेल में रह चुका हूँ।

864 नेहरू

8640. गांधी की एकमात्र सर्वोच्च प्राथमिकता थी स्वराज्य। नेहरू, पटेल आदि की प्राथमिकता थी राष्ट्रीय स्वतंत्रता, अम्बेडकर और जिन्ना की प्राथमिकता थी सत्ता।

8641. स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल अधिकांश राजनेता गांधी की नीतियों से सहमत नहीं थे। सुभाष बाबू, भगत सिंह आदि गांधी की नीतियों का खुलकर विरोध करते थे, किन्तु गांधी का पूरा सम्मान करते थे। नेहरू, पटेल आदि गांधी जी की नीतियों से सहमत नहीं थे, किन्तु सम्मान और भय के कारण समर्थन करते थे। अम्बेडकर विरोध करते थे, किन्तु भय के कारण दब जाते थे।

8642. नेहरू, पटेल की तुलना करें तो पटेल, नेहरू की अपेक्षा अधिक त्यागी थे और नेहरू, पटेल की तुलना में अधिक लोकतांत्रिक। पटेल में राष्ट्रवाद अधिक था तथा विश्व सामंजस्य कम, जो नेहरू में अधिक था। पटेल सीमित मताधिकार के पक्षधर थे और नेहरू बालिग मताधिकार के। पंडित नेहरू में सत्ता की भूख इतनी ज्यादा

थी कि भारत विभाजन तक के लिए पटेल के साथ सहमत हो गए। इन दोनों ने गांधी तक की अनदेखी की। पंडित नेहरू ने जयप्रकाश जी तथा लोहिया जी को भी लगातार किनारे करने की कोशिश की।

865 लोकतंत्र एवं अटल बिहारी

8650. अटल बिहारी संघ की साम्प्रदायिकता से निरंतर संघर्ष करते रहे, वहीं मुस्लिम साम्प्रदायिकता से धोखा खा गये। वह ईराक पर अमेरिका के आक्रमण के समय तो संगठित विरोध प्रकट करते हैं, किन्तु ईराक द्वारा किसी अन्य मुस्लिम राष्ट्र कुवैत पर आक्रमण के समय चुप हो जाते हैं। ऐसे चालाक समुदाय के धोखे में आकर अटल जी ने अपनी धर्मनिरपेक्षता को संदिग्ध बना दिया।

866 आचार्य पंकज के विचार

8660. व्यवस्था के ठीक-ठीक संचालन में समाजशास्त्र की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र अपनी-अपनी नीतियां बनाते समय समाजशास्त्र द्वारा ही मार्गदर्शित भी होते हैं और नियंत्रित भी। समाजशास्त्र केन्द्र में होता है। लोकतांत्रिक पश्चिमी देशों में अर्थशास्त्र ने समाजशास्त्र को दबा रखा है, तो साम्यवादी देशों में राजनीतिशास्त्र ने और इस्लाम में धर्मशास्त्र ने।

866 महेश भाई के विचार

8661. भारत का संविधान ही वह कारण है, जो जनता को चुनाव दर चुनाव "लोक नियुक्त" लोकतंत्र का पाठ रटाते आ रहा है, जबकि लोकतंत्र की आत्मा निवास करती है "लोक नियंत्रित" लोकतंत्र में।

8662. सार्वभौम सत्ता मूलक मतदाता अपना-अपना कबिलाई सरदार बनाकर नूरा-कुश्ती लड़ रहा है। अपना सार्वभौम सत्तात्मक अधिकार स्वयं लील रहा है। इस विषमय विषम परिस्थिति में लोक नियंत्रित लोकतंत्र का "शोध पत्र" कौन लिखेगा, यह वर्तमान चिन्ता का विषय है।

8663. लोकतंत्र के नाम पर चुने जाने वाले सांसद, विधायक लोक नियंत्रित तंत्र की गंगा को "लोक नियुक्त शंकरी जटा" तक उलझा कर रखना चाहते हैं। अब भागीरथ की तरह आगे-आगे चलकर लोक नियंत्रित तंत्र रूपी लोकतंत्र की गंगा को धरातल पर उतारने के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में संशोधन कर ग्राम सभाओं, पंचायतों, जिले एवं नगर परिषदों को भी वही दर्जा दिया जाये, जो दर्जा लोकसभा, विधानसभा का है।

867 राहुल गांधी

8670. यदि सोनिया जी अपने परिवार के ही व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाने की तिकड़म नहीं करतीं, तो संभव था कि राहुल गांधी एक बहुत ही योग्य राजनेता के रूप में उभरकर सामने आते। राहुल गांधी को जिस तरह से झाड़-पोंछकर प्रधानमंत्री पद के लिए तैयार किया गया है, उससे वे देश के लोकतंत्र के सबसे बड़े शत्रु बन गये हैं।

8671. राहुल गांधी में बहुत सारे ऐसे गुण हैं, जिसका लाभ उनकी पार्टी को मिल सकता है लेकिन प्रधानमंत्री पद के लिए उनको प्रस्तावित करना देश के लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा करना है। अगर इस तरह प्रायोजित तरीके से राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद पर आसीन कर दिये जायेंगे, तो वे लोकतंत्र के सबसे बड़े शत्रु बन जायेंगे।

अभी उत्तर प्रदेश के चुनाव में अमेठी और रायबरेली ने जिस तरह राहुल और उनके पारिवारिक घमंड को चकनाचूर किया वैसा ही चमत्कार पूरे भारत की जनता को चुनावों में करके दिखाना चाहिए तभी भारतीय लोकतंत्र पर दिख रहे राहुल खतरे से मुक्ति संभव है।

8672. राहुल गांधी प्रधानमंत्री की इस लड़ाई में दूर-दूर तक नहीं हैं और यदि राहुल गांधी को इस लड़ाई में शामिल करने की भूल की गई तो राहुल गांधी के साथ-साथ उनको शामिल करने वाले भी डूब जायेंगे। राहुल गांधी में राजनैतिक सूझबूझ का अभाव है। सामाजिक सूझबूझ सबसे ज्यादा है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में सामाजिक सूझ-बूझ तथा राजनीतिक चालाकी के बीच एक संतुलन होना चाहिए, जो राहुल गांधी में नहीं दिखता। भारतीय राजनीति में राहुल गांधी सबसे ज्यादा अयोग्य प्रधानमंत्री सिद्ध होंगे।

8673. राहुल गांधी ने अपने अल्पकाल में कुछ गंभीर गलतियां की है। उन्हें जे.एन.यू में इतनी जल्दी जाकर खड़ा नहीं होना चाहिए था। राहुल गांधी को चुनाव आयोग पर भी अविश्वास व्यक्त नहीं करना चाहिए था। राहुल गांधी ने ई.वी.एम पर अविश्वास करके अपनी मूर्खता की सारी सीमाएं पार कर दी थी। राहुल गांधी और नरेंद्र मोदी के टकराव की तुलना एक अनाड़ी और खिलाड़ी के टकराव से की जा सकती है।

8674. राहुल गांधी में तो प्रधानमंत्री बनने की एक प्रतिशत भी योग्यता नहीं है। समस्याओं के शीघ्र समाधान के लिए नरेन्द्र मोदी ही सर्वाधिक उपयुक्त हैं। जिस तरह सोनिया और राहुल मिलकर संसद को बंधक बनाये हुए हैं, उससे तो ऐसा लगता है कि इन्हें शून्य तक पहुंचने में दस वर्ष भी नहीं लगेंगे।

8675. राहुल गांधी का प्रधानमंत्री बनना भारतीय राजनीति पर एक कलंक के अतिरिक्त कुछ नहीं है, क्योंकि इस तरह सत्ता, तिकड़म करके अपने परिवार तक आरक्षित कर ली जाए, यह भारत की जनता के लिए कलंक के अलावा और क्या हो सकता है?

8676. यदि राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद का लालच छोड़कर कांग्रेस अध्यक्ष तक सीमित हो जाते, तो उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सकती थी, किन्तु ऐसा लगता है कि सोनिया जी के चक्कर में पड़कर राहुल गांधी ने अपना भविष्य सदा के लिए बिगाड़ लिया।

868 रामदेव आन्दोलन

8680. योग को सामाजिक, मानसिक लाभ की जटिल प्रक्रिया से निकालकर यदि शारीरिक लाभ तक सीमित कर दिया जाये, तो यह सर्व सुलभ हो सकता है तथा धीरे-धीरे अप्रत्यक्ष रूप से इसका मानसिक व सामाजिक प्रभाव भी संभव है। बाबा रामदेव ने यह कार्य सफलतापूर्वक कर दिखाया।

869 आडवाणी और राजनीति

8690. भारत की राजनीति सिर्फ और सिर्फ कुर्सी-दौड़ है, जिसमें सभी कार्यकर्ता दिन-रात सोते-जागते दौड़ लगा रहे हैं। राजनीति में अब समाज सेवा का कोई भी स्थान दूर-दूर तक नहीं है। यदि कोई व्यक्ति समाज सेवा के उद्देश्य से राजनीति में है, तो वह या तो समाज को धोखा दे रहा हैं या स्वयं धोखा खा रहा हैं। भारत की वर्तमान राजनीति या तो अपराध जगत का खेल है या व्यवसाय का, तब शराफत का कवच क्यों? आडवाणी जी का पूरा कार्यकाल एक

पद-लोलुप राजनेता का रहा है। उनका न कोई स्थिर सिद्धान्त रहा है, न ही विचारधारा।

870 अन्य

8700. आत्महत्या पर कानूनी रोक गलत है। इससे मैं सहमत हूं। कुछ परिस्थितियों में आत्महत्या को परमिशन देनी चाहिए। उदाहरण के लिए अति बुढ़ापे में या दुरूह बीमारी आदि में।

❐

9

वैश्विक

900 विश्व की प्रमुख समस्याएं और समाधान

9000. वर्तमान विश्व में भौतिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक पतन भी उतनी ही तेज गति से बढ़ रहा है। राजनैतिक तथा आर्थिक शक्ति का केन्द्रीयकरण हो रहा है। हिंसा और स्वार्थ पर विश्वास बढ़ रहा है। किन्तु ये सभी समस्याएँ कुछ विश्वव्यापी विकृतियों के परिणाम हैं, मौलिक नहीं। मूल विकृतियां इस प्रकार मानी जा सकती हैं :- (1) निष्कर्ष निकालने में विचार मंथन की जगह प्रचार का अधिक प्रभावकारी होना। (2) संचालक और संचालित के बीच बढ़ती दूरी। (3) राजनीति, धर्म और समाज सेवा का व्यवसायीकरण। (4) भौतिक पहचान का संकट। (5) समाज का टूटकर वर्गों में बदलना। (6) राज्य द्वारा दायित्व और कर्तव्य की परिभाषाओं को विकृत करना। (7) मानव स्वभाव ताप वृद्धि। (8) मानव स्वभाव स्वार्थ वृद्धि। (9) धर्म और विज्ञान के बीच बढ़ती दूरी। यदि हम

उपरोक्त नौ समस्याओं की रोकथाम कर सकें तो अन्य समस्याएं स्वयं कम हो सकती हैं।

910 भौतिक या नैतिक, उन्नति या पतन

9101. यदि हम विश्व की सामाजिक स्थिति का सामाजिक आकलन करें, तो दुनिया में भौतिक उन्नति तो बहुत तेजी से हो रही है, किन्तु नैतिक उन्नति का ग्राफ धीरे-धीरे गिरता जा रहा है। दुनिया में भौतिक विकास तेज गति से हो रहा है और नैतिक पतन भी उतनी ही तेज गति से हो रहा है। विश्व के अनेक देशों में यह नैतिक पतन धीरे-धीरे हो रहा है। किन्तु दक्षिण एशिया के देशां में बहुत तीव्र गति से हो रहा है और वह गति भारत में और भी तीव्र है। व्यक्ति की भौतिक उन्नति और नैतिक उन्नति के बीच संतुलन होना चाहिए। सिर्फ भौतिक उन्नति हमेशा गलत दिशा में ले जा सकती है और सिर्फ नैतिकता व्यक्ति को निराश या असफल भी कर सकती है। आवश्यकता यह है कि भौतिक उन्नति की बाधाओं के सामाधान की चर्चाओं से किनारा करके नैतिक अवनति की रोकथाम पर भी चर्चा आगे बढ़े।

9102. विश्व में नैतिक पतन के कई कारण दिख रहे हैं, जिनमें 8 प्रमुख हैं-1. संचालक और संचालित के बीच बढ़ती दूरी, 2. निष्कर्ष निकालने में विचार मंथन की जगह प्रचार का अधिक प्रभावकारी होना, 3. राजनीति और समाज सेवा का व्यवसायीकरण, 4. भौतिक पहचान का संकट, 5. समाज का टूटकर वर्गों में बदलना, 6. निष्प्रभावी राज्य व्यवस्था, 7. मानव-स्वभाव ताप वृद्धि और 8. मानव स्वभाव स्वार्थ वृद्धि।

9103. किसी भी व्यक्ति की भौतिक उन्नति का लाभ मुख्य रूप से व्यक्तिगत होता है और नैतिक उत्थान का लाभ समूहगत या सामाजिक। अधिकारों के लिए चिन्ता या प्रयत्न भौतिक उन्नति के उद्देश्य से किये जाते हैं और कर्तव्यों का प्रयत्न नैतिक उत्थान के निमित्त होता है। कर्तव्य हमेशा समाज को लाभ देता है।

9104. धर्म हमेशा ही नैतिकता को मजबूत करता है। समाज नैतिकता और भौतिक उन्नति के बीच संतुलन बनाता है। राज्य सिर्फ आपराधिक आचरण से रोकता है।

9105. हर शरीफ या धूर्त्त चाहता है कि दूसरे लोग भौतिक प्रगति की जगह नैतिकता पर अधिक ध्यान दें। शरीफ आदमी अपने निकट के लोगों को अधिकतम कर्तव्य की ओर प्रेरित करता है, तो धूर्त्त दूसरे लोगों को अधिकतम कर्तव्य की ओर प्रेरित करता है।

9106. भौतिक प्रगति और नैतिक पतन के बीच दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है, किन्तु यह बात भी साफ है कि भौतिक प्रगति और नैतिक पतन एक साथ समान गति से आगे बढ़ रहे हैं। भौतिक उन्नति और समाज व्यवस्था के बीच सबसे अच्छा संतुलन भारतीय संस्कृति में रहा है। यदि ज्ञान, सुरक्षा, सुविधा और सेवा के आधार पर बचपन से ही व्यक्तियों के योग्यतानुसार समूह बनाकर उन्हें उस दिशा में ट्रेनिंग दी जायेगी, तो नैतिक पतन को रोका जा सकता है।

9107. मैं अपने मित्रों को सलाह देता हूँ कि भौतिकता की अंधी दौड़ को सामाजिकता के साथ जोड़कर नियंत्रण में रखना चाहिए। यदि नियंत्रण नहीं रहेगा, तो भौतिकता की दौड़ में इतना मीठा स्वाद आता है कि उसके परिणामों की चिन्ता किये बिना व्यक्ति तेज

से तेज दौड़ लगाता है और परिणाम होता है कि झटका आते ही उसका सारा जीवन दुखी और कलंकित हो जाता है।

920 विश्व युद्ध

9200. दुनिया में विश्व युद्ध की कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। विश्व युद्ध होने की संभावना भी हमेशा बनी रहती है और टल जाने की भी। युद्ध उन्माद जितना घातक होता है, उतनी ही घातक पलायन की प्रवृत्ति भी है। युद्ध और शान्ति के बीच संतुलन रखना चाहिए।

9201. विश्व युद्ध से बचने का सबसे आसान मार्ग है, विश्व सरकार बनाने का प्रयत्न। विश्व सरकार में राष्ट्र इकाई न होकर व्यक्ति इकाई होना चाहिए। विश्व सरकार की चर्चा शुरू करने से पहले पूरे विश्व का एक संविधान बनना चाहिए। इस वैश्विक संविधान में दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को मतदाता होना चाहिए।

930 संयुक्त राष्ट्र संघ

9300. संयुक्त राष्ट्र संघ दुनिया के शान्ति प्रयासों में सहायक है, किन्तु निर्णायक नहीं। क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका सीमित है। संयुक्त राष्ट्र संघ दुनिया के राष्ट्रों का संघ है, व्यक्तियों का नहीं।

9301. वर्तमान संयुक्त राष्ट्र के रहते हुए उत्तर कोरिया जैसी गुलामी का अस्तित्व सम्पूर्ण मानवता के लिए एक कलंक ही है। संयुक्त राष्ट्र संघ चीन को रोकने में सक्षम नहीं है तथा पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देशों को भी नहीं रोक पाता है, जहाँ ईशनिन्दा जैसे अन्यायकारी कानून बनाये जा रहे हैं।

940 पाकिस्तान

9400. सामान्यतया पाकिस्तान को भारत का शत्रु माना जाता है, किन्तु पाकिस्तान को विरोधी मानना चाहिए। वस्तुतः भारत का शत्रु इस्लामिक विस्तारवाद है और पाकिस्तान भी इसके सामने मजबूर है। वर्तमान भारत सरकार की पाकिस्तान के साथ नीति ठीक है।

941 इराक

9410. इराक पर अमेरिकी आक्रमण न्याय की कसौटी पर गलत था और व्यवस्था की कसौटी पर ठीक। क्योंकि इराक एक तानाशाह देश था और अमेरिका लोकतांत्रिक।

942 भारत का अमेरिका, इस्लाम और चीन से अन्तःसम्बन्ध

9420. दुनिया में चार संस्कृतियों के बीच प्रतिस्पर्धा है :- (1) पश्चिम, (2) इस्लाम, (3) भारत और (4). चीन। वर्तमान स्थिति में भारत और पश्चिम को बिना शर्त एक साथ हो जाना चाहिए। चीन और इस्लाम में से एक को टारगेट करना चाहिए तथा दूसरे के साथ ढुलमुल नीति बनाई जानी चाहिए। भारत, अमेरिका को आपसी प्रतिस्पर्धा तक सीमित रखे। इस्लाम और चीन के बीच किसी एक को परिस्थिति अनुसार विरोधी या शत्रु मानना उचित है।

943 आधार कार्ड

9430. दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित पहचान पत्र अवश्य होना चाहिए, जो हर जगह प्रभावी हो तथा जिसकी नकल संभव न हो।

950 गुट निरपेक्षता

9500. वर्तमान विश्व में मुख्य रूप से दो गुट हैं :- (1) पश्चिम के लोकतांत्रिक

देश, (2) चीन तथा रूस। इस्लामिक देश अपना कोई स्वतंत्र गुट नहीं बना सके। भारत का भी अपना कोई स्वतंत्र गुट नहीं है। पण्डित नेहरू ने मिश्र के नासिर हुसैन और मार्शल टीटो के साथ मिलकर स्वतंत्र गुट बनाया था, जो आगे नहीं बढ़ सका। अब भारत आंशिक रूप से तीसरा गुट बनाने की कोशिश कर रहा है।

9501. भारत के लिए तीसरा गुट बनाना कठिन कार्य है, क्योंकि भारत वर्तमान में दोनों गुटों से कमजोर है तथा भारत का आंतरिक टकराव इस्लाम से है, जो तीसरे गुट के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

9502. नेहरू जी के कार्यकाल में भारत दुनिया के बीच में एक ऐसा देश था, जो लोकतंत्र को मानता तो था, पर जानता नहीं था। भारत ने पूंजीवादी लोकतंत्र और साम्यवादी तानाशाही के बीच स्वयं को गुट निरपेक्ष राष्ट्र घोषित कर दिया और बीच के राष्ट्रों को अपने साथ मिलाकर एक तीसरा गुट बनाने की कोशिश करने लगा। भारत ने लोकतंत्र में शामिल रहते हुए लोकतंत्र और तानाशाही के बीच गुट निरपेक्ष बने रहने और तीसरा गुट बनाने की सफलता का अजूबा कर दिखाया। भारत ने दोनों गुटों के बीच गुट निरपेक्षता का खूब मजा उठाया। किन्तु सिद्धांतविहीन मजा उठाने के कुछ दोष भी तो झेलने पड़ते हैं। इसी नीति का परिणाम हुआ कि भारत में राष्ट्रवाद मजबूत हुआ और समाजवाद कमजोर।

9503. तीन दशक पूर्व तक भारत की गुटनिरपेक्षता ने भारत को ऐसी मजबूर स्थिति में ला खड़ा किया था कि इरान के विरुद्ध यदि कोई एक भी शब्द बोलता, तो भारत को इरान के पक्ष में आवाज उठाने की पहल करनी पड़ती थी, चाहे दुनिया का कोई भी और देश न

बोले, पर भारत को तो बोलना ही पड़ता था। वर्तमान समय में एक ऐसी लचीली गुटनिरपेक्षता का प्रयोग किया जा रहा है, जिसमें भारत को अब कोई मजबूरी नहीं है।

9504. कुछ वर्ष पूर्व तक भारत तेल और गैस के लिए भी खाड़ी देशों पर निर्भर था और गुटनिरपेक्षता की सदस्यता के आधार पर भी। भारत की आन्तरिक राजनीति में ये खाड़ी देश अन्दर तक हस्तक्षेप करते थे और भारत चुप रहता था। अब भारत तेल और गैस के लिए खाड़ी देशों से मुक्त हो रहा है तथा कश्मीर समस्या निपट जाने के कारण कोई मजबूरी भी नहीं है।

960 नागासाकी

9600. युद्ध काल में शत्रु के साथ मानवीय व्यवहार कभी-कभी घातक होता है। अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय नागासाकी हिरोशिमा पर बम गिराये थे। प्रायः अमेरिका की आलोचना होती है कि बम गिराना अमानवीय था। मेरे विचार से बम गिराना अमेरिका की मजबूरी थी।

970 विश्व से सम्बन्ध

9700. वर्तमान स्थिति में यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि विश्व के लिए प्राथमिक खतरा साम्यवाद है या इस्लाम। भारत की आंतरिक व्यवस्था में तो इस्लाम और साम्यवाद का गठजोड़ हो चुका है और प्राथमिक खतरा यह गठजोड़ ही है, जिसमें प्रत्येक कंधा इस्लाम का है और बंदूक साम्यवाद की, किंतु विश्व की स्थिति इतनी स्पष्ट नहीं है। मेरे विचार में हमारी प्राथमिकताओं का क्रम इस प्रकार होना चाहिए :- (1) लोकस्वराज्य अर्थात वर्ण आश्रम

व्यवस्था से सहभागिता, (2) पूंजीवाद और लोकतंत्र से मित्रता, (3) इस्लामिक विस्तारवाद का विरोध और (4). साम्यवादी तानाशाही से शत्रुता।

980 एनजीओ

9800. राजनैतिक व्यवस्था में भारी भ्रष्टाचार के समाधान के रूप में एनजीओ अर्थात सामाजिक संस्थाओं को व्यवस्था में शामिल किया गया। धीरे-धीरे ये एनजीओ भी सरकारी संस्थाओं की तरह ही भ्रष्ट हो गए। सरकारी संस्थाओं पर सरकार का अंकुश था, लेकिन इन संस्थाओं पर वह अंकुश भी नहीं रहा। ये एनजीओ संगठन बनाकर सरकार को भी ब्लैकमेल करने लगे। इन संस्थाओं ने विदेशी सरकारों से भी सम्बन्ध बना लिये हैं।

9801. वर्तमान भारत में सामाजिक संस्थाओं के बोर्ड लगाकर भ्रष्टाचार तथा ब्लैकमेल करना एक फैशन बन गया है। एनजीओ भारत के लिए समाधान न होकर समस्या है।

990 यदि मैं तानाशाह होता तो

9900. तत्काल घोषणा करता कि तीन महीने के भीतर पचास ऐसे लोगों को सार्वजनिक फांसी, सौ को आजीवन कारावास और पांच सौ को पांच से दस वर्ष तक के कारावास की सजा दी जायेगी, जिनके नाम गुप्तचर पुलिस के गुप्त मुकद्मे की, सुप्रीम कोर्ट द्वारा विशेष रूप से निर्मित गुप्त न्यायिक सेवा द्वारा सुनवाई के बाद तय किए गए हों।

9901. तत्काल संविधान में संशोधन करके पांच विभाग 'वित, विदेश, न्याय, सेना और पुलिस' केन्द्र सरकार के पास रखकर अन्य सभी

विभाग समाप्त कर देता और शेष सबकी व्यवस्था परिवार, गांव, जिला, प्रदेश और केन्द्र सभाओं को बांट देता।

9902. सभी प्रकार के कर समाप्त करके सम्पूर्ण चल-अचल संपति पर दो प्रतिशत वार्षिक तथा कृत्रिम ऊर्जा का मूल्य दो से ढाई गुना तक बढ़ा देता। केन्द्र सरकार को प्राप्त सम्पूर्ण कर में से पांच विभाग का खर्च पूरा करने के बाद शेष सम्पूर्ण धन देश के प्रत्येक व्यक्ति में समान रूप से वितरित कर देता।

9903. तत्काल ही सभी प्रकार के आरक्षण समाप्त करके श्रम की मांग को इस तरह बढ़ने देता कि श्रम के मूल्य में भारी वृद्धि हो जाए।

9904. सम्पत्ति के व्यक्तिगत स्वामित्व को समाप्त करके सम्पत्ति को परिवार की सामूहिक सम्पत्ति घोषित कर देता, जिसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य का समान हिस्सा होता।

9905. मार्गदर्शक, रक्षक और पालक के लिए उच्चस्तरीय प्रशिक्षण अनिवार्य कर देता, जिसके चयन के लिए पूर्व परीक्षा आवश्यक होती।

9906. प्रत्येक व्यक्ति का किसी परिवार के साथ जुड़ना अनिवार्य कर देता।

9907. संविधान निर्माण या संशोधन की किसी भी प्रक्रिया से तंत्र की तीनों इकाइयों को दूर कर देता।

9908. संविधान की उद्देश्यिका में 'समानता' शब्द की जगह 'स्वतंत्रता' लिख देता।

9909. आदेश दे देता कि राज्य, धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्रीयता, उम्र, लिंग, गरीब-अमीर, किसान-मजदूर, उत्पादक-उपभोक्ता के आधार पर

कोई अलग कानून न बनाकर प्रत्येक नागरिक के लिए समान कानून बनाता।

9910. चुनावों में या तो दलीय प्रणाली लागू कर देता अथवा पूरी तरह निर्दलीय। सारे श्रम समाप्त कर देता।

9911. प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकार के रूप में केवल एक अधिकार मान्य होता, 'व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता'।

9912. फांसी की सजा प्राप्त व्यक्ति की दोनों आँखें निकालकर जमानत पर जीवित रहने के लिए न्यायालय को अनुमति का अधिकार दे देता।

9913. किसी भी नागरिक को शस्त्र रखने का अधिकार समाप्त कर देता।

9914. किसी भी प्रकार के संगठन अवैध घोषित कर देता।

9915. सरकारी मुद्रा के साथ-साथ व्यक्तिगत मुद्रा चलाने की छूट दे देता।

❐